विदेह
मैथिली फर्स्ट फोर्टनाइटली इ पत्रिका, ISSN 2229-547X

नव पाँखि

(किशोर कथा-संग्रह)

गजेन्द्र ठाकुर

प्रकाशक : विदेह ई-पत्रिका, www.videha.co.in

नव पाँखि

किशोर कथा-संग्रह

गजेन्द्र ठाकुर

◆ ◆ ◆

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

नव पाँखि

किशोर कथा-संग्रह

© गजेन्द्र ठाकुर/ प्रीति ठाकुर, २०२६

कथाकार: गजेन्द्र ठाकुर

प्रकाशन-सन्दर्भ: विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

सर्वाधिकार सुरक्षित।

६ × ९ इञ्च हार्डबैक संस्करण

विषय-सूची

1. काल-स्थान विस्थापन
2. बैसाखीपर जिनगी
3. हम नै जाएब विदेश
4. प्रवास
5. हराहरी
6. पोखरिक तरे भोरुक तारा
7. गामक पुरान पुस्तकालय
8. खस्सी घंटीक रहस्य
9. बाढ़िमे बचल पोथी
10. नेनाक विज्ञान-मेला
11. आमक गाछक निर्णय
12. मोबाइल बिनु एक दिन
13. चिरैयाँ गिननिहार बालक
14. माटिक रोबोट
15. जंगलक बाट, घरक गप
16. गाछ पर बनल पाठशाला
17. सूरुजघड़ी बनौने बालिका
18. नदी बचाबयवला मित्र-मण्डली
19. चाँदनी रातिक मानचित्र
20. हँसमुख पहरुआ आ हरायल कुंजी

कथा १

काल-स्थान विस्थापन

“सुनू, सभटा बाहरी प्रकाश बन्न कऽ दियौक।”

धौम्यक स्वर बड्ड धीम छल, मुदा प्रयोगशालामे उपस्थित सभ गोटेक कान तत्पर छल। अपाला भित्तिक लग गेली आ एक-एक कऽ दीप-ज्योतिक आवरण खसा देलनि। श्वेतकेतु मुख्य यन्त्रक प्रकाश घटा देलक। रैक्व झरोखाक पट बन्द कएलक। सत्यकाम आ घोषा गोल मेजक चारू कात ठाढ़ भऽ गेलाह।

क्षण भरिमे कोठली अन्हार नहि, वरन् अनचिन्हार नील प्रकाशसँ भरि गेल। बीचक काँचक पट्टपर पहिने एकटा छोट उज्जर बिन्दु चमकल। तकर पाछाँ दोसर बिन्दु। फेर दुनूकेँ जोड़ैत एकटा सूक्ष्म रेखा उभरल।

धौम्य मुस्की देलनि। “एहि बिन्दुकेँ एकटा जीव मानू। ओकर संसारमे आगाँ आ पाछाँ मात्र अछि। वाम-दहिन, ऊपर-नीचाँ—किछुओ नहि। ओ जतेक दूर जायत, एके रेखापर जायत।”

अपाला झुकि कऽ तकली। “जँ दोसर जीव सोझाँ आबि गेल तऽ?”

“तखन पहिल जीव ओकरा पार नहि कऽ सकत। ओकर ब्रह्माण्डमे बगल दऽ निकलबाक बाटे नहि।”

श्वेतकेतु हँसि पड़ल। “अर्थात् बाट रोकल तऽ संसार रोकल!”

“ओकर दृष्टिसँ हँ,” धौम्य कहलनि, “मुदा हमर दृष्टिसँ नहि। हम तेसर आयाममे छी। हम चाही तऽ एकटा बिन्दुकेँ रेखासँ उठा कऽ दोसर दिस राखि सकैत छी। ओ जीव बुझबे नहि करत जे ओकर संग की भेल।”

ई सुनि घोषाक आँखि चमकि उठल। “तखन हमरा सभक संग सेहो एहन होइत होयत? जे गप हमरा असम्भव बुझाइत अछि, ओ कोनो उच्च आयामक जीव लेल सहज हो?”

धौम्य तुरन्त उत्तर नहि देलनि। मेजक पट्टपर हाथ फेरलनि। रेखा मेटा गेल आ ओकर ठाम एकटा समतल वृत्त, त्रिभुज आ चौकोर आकृति उभरल।

“एखन द्विआयामी संसार देखू,” ओ कहलनि। “एतए आगाँ-पाछाँक संग वाम-दहिन सेहो अछि, मुदा ऊपर-नीचाँ नहि। जेना अनन्त पसरल एहन एक सतह, जकर मोटाइ शून्य।”

रैक्व पुछलक, “ई जीव एक-दोसराकेँ देखत कोना?”

“पूरा रूपमे नहि। एक-दोसराक केवल काटल रेखा जेकाँ दर्शन होत। जँ वृत्त आगाँ बढ़त, दोसर जीव पहिने छोट रेखा, फेर पैघ रेखा, फेर फेर छोट रेखा देखत। सम्पूर्ण वृत्तक बोध ओकरा तखने होयत जखन ओ अनेक अनुभव जोड़त।”

सत्यकाम अपन लेखपट्टपर किछु लिखैत रहल। “हमरा सभ तेसर आयाममे जीबैत छी—लम्बाइ, चौड़ाइ, गहराइ। तखन चारिम आयाम?”

धौम्य नील प्रकाशक बीच मुँह उठौलनि। “समय।”

कोठली फेर शान्त भऽ गेल।

समय—जेकरा सभ अनुभव करैत अछि, मुदा कियो हाथसँ छू नहि सकैत। जे अतीतकेँ पाछाँ छोड़ैत आ भविष्यकेँ आगाँ खोलैत चलैत अछि।

धौम्य कहलनि, “हमरा सभ स्थानक तीन आयाममे चलैत छी, मुदा समयमे एक दिशा मात्र अनुभव करैत छी। जन्मसँ आगाँ, वर्तमानसँ भविष्य दिस। जँ समयो स्थान जेकाँ मोड़ल जा सकए? जँ दू दूर क्षणकेँ पास अनल जा सकए?”

अपाला धीमे बाजली, “तखन काल-स्थान विस्थापन सम्भव होयत।”

“ताहिए लेल ई तेसर प्रयोगशाला बनाओल गेल अछि।”

◆

पहिल प्रयोगशाला एकायामी जीवसभ लेल छल। दोसर द्विआयामी जीवसभ लेल। दुनू पृथ्वीक वस्तुय वातावरणसँ पृथक राखल गेल छल, जाहिसँ भीतरक जीव बाहरी संसारक हस्तक्षेपकेँ अपन नियमक अनुसार बुझए। धौम्य कतेको बरख धरि हुनकर व्यवहार देखैत रहलाह।

मुदा तेसर प्रयोगशाला जीव देखबाक लेल नहि, अपन सभक सीमा जाँचबाक लेल छल।

धौम्य पाँचू विद्यार्थीकेँ अलग-अलग काज देलनि।

श्वेतकेतु आ रैक्वक काज छल स्थान-कालमे एहन खोहक सिद्धान्त बनायब, जे दू दूर बिन्दुकेँ भीतरसँ जोड़ि दे। धौम्य ओकर उदाहरण कठफोड़बाक खोहसँ दैत छलाह—गाछक बाहरी छालपर दू ठाम दूर देखाइत हो, मुदा भीतर खोह बनल हो तऽ छोट बाट भेटि सकैत अछि।

अपाला ब्रह्माण्डीय डोरीपर काज करए लगली। हुनकर कल्पनामे ई साधारण डोरी नहि, वरन् अपार घनत्वक सूक्ष्म संरचना छल, जे काल-स्थानकेँ तनिक मोड़ि सकए।

सत्यकाम अत्यल्प आकारमे नुकायल अतिरिक्त आयामक सम्भावना खोजैत छल। ओकर प्रश्न रहैत—“जँ आयाम अछि, मुदा एतेक सूक्ष्म घुमाओल अछि जे हमरा सभक आँखि नहि पकड़ैत?”

घोषाक काज सभसँ भिन्न छल। ओ प्रयोगक आचार-विचार आ नियम बनबैत छली।

एक साँझ ओ सभकेँ कहलनि, “जँ हम भूतकालमे पहुँचि सकब, तऽ अपन सुविधा लेल इतिहास बदलबाक अधिकार हमरा के देत? जँ कियो अपन शत्रुकेँ ओकर जन्मसँ पहिने मिटा देबाक चेष्टा करत? जँ एकटा छोट परिवर्तन हजारों लोकक जीवन बदलि देत?”

श्वेतकेतु मजाकमे कहल, “तखन पहिने नियम बनाउ जे कियो अपन परीक्षाक प्रश्न देखए पाछाँ नहि जायत।”

सभ हँसि पड़ल।

घोषा नहि हँसली। “एहि गपपर हँसी आबि सकैत अछि, मुदा शक्ति जतेक पैघ, उत्तरदायित्वो ततेक पैघ।”

धौम्य सन्तोषसँ हुनका दिस तकलनि। “ई प्रयोग सफल हो अथवा नहि, ई नियम सफल हेबाक चाही।”

◆

मास बीतैत गेल। प्रयोगशालाक भीतपर नाना वक्र रेखा, गोलक, गणना आ नक्षत्र-पथक चित्र बढ़ैत गेल। कखनो राति भरि यन्त्र बजैत रहैत, कखनो सप्ताह भरि कोनो परिणाम नहि भेटैत।

एक दिन रैक्व पृथ्वीक गोल नमूना उठा कऽ मेजपर राखलक। “गुरुजी, समतल कागजपर बनाओल त्रिभुजक तीन कोण जोड़ब तऽ एक सय अस्सी अंश। मुदा पृथ्वीक गोल सतहपर एहन त्रिभुज बनि सकैत अछि जकर तीनू कोण नब्बे-नब्बे अंशक हो।”

धौम्य कहलनि, “यैह बुझबाक अछि। रेखा स्वयं दोषी नहि; धरातल वक्र हो तऽ रेखाक चाल बदलि जाइत अछि। काल-स्थान वक्र हो तऽ प्रकाशक बाटो बदलैत अछि।”

सत्यकाम तुरन्त कहलक, “तखन हम सोझ बाटक दास नहि छी। समुचित वक्रता भेटल तऽ दूर स्थान निकट भऽ सकैत अछि।”

अपाला मेजपर रखल चाँदी सन चमकैत सूक्ष्म तन्तु उठौलक। “आ ई ब्रह्माण्डीय डोरी ओकरा स्थिर राखत।”

धौम्यक आँखिमे ओहि दिन पहिल बेर दीर्घ प्रतीक्षाक चमक छल।

पुष्पक बनबाक काज आरम्भ भेल। नाम पुरान छल, मुदा यान पूर्णतः नव। ओकर बाहरी देह हलुक धातुसँ बनल, भीतर काल-मापक, नक्षत्र-दिशा यन्त्र, प्रकाश-गति मापक आ सुरक्षा-कवच। सभसँ महत्त्वपूर्ण छल स्थान-काल खोह खोलएवला गोल यन्त्र, जकर बीच अपालाक ब्रह्माण्डीय डोरी बाँधल गेल।

“पहिल यात्रा के करत?” श्वेतकेतु पुछलक।

“हम,” धौम्य उत्तर देलनि।

पाँचू विद्यार्थी एक बेर एक-दोसराक मुँह तकलनि।

अपाला तुरन्त बाजली, “अहाँ अकेले नहि जाउ।”

“पहिल जोखिम शिक्षकक,” धौम्य शान्त स्वरमे कहलनि, “दोसर यात्रा शिष्यक होयत, जँ पहिल यात्राक बाट घुरि आबि सकल।”

घोषा कागज आगाँ बढ़ेलनि। “तखन ई नियम पढ़ि हस्ताक्षर करू। भूतकालमे हस्तक्षेप नहि। कोनो जीव, वस्तु, घटना वा निर्णय बदलबाक चेष्टा नहि। यात्रा केवल अवलोकनक।”

धौम्य हँसि देलनि। “हमरा अपन शिष्यसँ अनुमति लेब पड़त—ई दिन देखबाक लेल हम विज्ञानमे अएलहुँ!”

“नियम सभपर समान,” घोषा उत्तर देलनि।

धौम्य हस्ताक्षर कएलनि।

◆

यात्राक राति नभ निर्मल छल। नक्षत्र सभ एहन चमकि रहल छल जेना ओकरो सभकेँ प्रयोगक समाचार भेटि गेल हो।

पुष्पक विमानपट्टीपर स्थिर छल। ओकर चारू कात पाँच विद्यार्थी अन्तिम जाँच करैत रहलाह।

“काल-मापक?”

“सजग।”

“ब्रह्माण्डीय डोरी?”

“स्थिर।”

“स्थान-काल खोह?”

“सङ्केत भेटिते खुलत।”

धौम्य विमानमे चढ़लाह। झरोखा बन्द होएबाक पहिने पाँचू दिस तकलनि।

"जँ भोर धरि नहि घुरी?" अपाला पुछली।

"तखन प्रयोगकेँ असफल नहि मानब," धौम्य कहलनि, "पहिने ई बुझब जे हम कतए गेलहुँ।"

यन्त्रक नील प्रकाश तेज भेल। हवा कम्पित भेल। विमानक सोझाँ अन्हार गोल चक्र उभरल, जे कारी नहि वरन् प्रकाशकेँ भीतर मोड़ैत सन बुझाइत छल। ओकर किनारपर तारा सभ खेंचायल रेखा जेकाँ देखाइत छल।

"खोह खुलल!" रैक्व चिचियाएल।

पुष्पक धीर आगाँ बढ़ल, फेर एक क्षणमे प्रकाशक धार बनि गेल।

धौम्यक सोझाँ नक्षत्र नहि, नक्षत्रक लम्बा पथ छल। समयक मापक तेजी सँ काँपि रहल छल। बाहरक प्रकाश कखनो नील, कखनो उज्जर, कखनो गाढ़ लाल। स्थान आ समय जेना कपड़ाक तह जेकाँ मोड़ाइत, खुलैत, फेर मोड़ाइत जा रहल छल।

धौम्य यन्त्रपर आँखि गड़ौने रहलाह।

एक समय विमानक सोझाँ विराट कारी गह्वर उभरल। ओकर चारू कात प्रकाश गोल-गोल घुमैत छल। धौम्यक हृदय तेजी सँ धड़कए लागल, मुदा हाथ स्थिर रहल। ब्रह्माण्डीय डोरी तनल। यन्त्र चेतावनी देलक।

"अधिक वक्रता," धौम्य अपनासँ कहलनि। "मार्ग बदलू।"

ओ नियन्त्रण तनिक घुमौलनि। पुष्पक कारी गह्वरक किनारसँ बाँचि निकलल।

तखन यन्त्रपर अद्भुत सङ्केत भेटल—जाहि स्थानकेँ धौम्य ब्रह्माण्डक अत्यन्त दूर भाग मानैत छलाह, ओ मानचित्रपर एकाएक निकट देखाए लगल। जेना दूरीक अर्थे बदलि गेल हो।

धौम्य बुझलनि—प्रयोग सफल भऽ रहल अछि।

मुदा एही क्षण काल-मापकपर एक अनचिन्हार संख्या चमकल। प्रयोगशालाक समय आ विमानक समय एक-दोसरासँ मेल नहि खा रहल छल।

"ई की?"

धौम्य गणना फेर कएलनि। विमानक भीतर केवल किछु घड़ी बीतल छल, मुदा बाहरी समयक आँकड़ा भयङ्कर गतिसँ आगाँ बढ़ि रहल छल।

ओ तुरन्त घुरबाक सङ्केत देलनि।

स्थान-काल खोह फेर खुलल। पुष्पक प्रकाशक धार बनि पृथ्वी दिस घुरल।

◆

भोरुक पहिल उजाससँ कनेक पहिने विमान पृथ्वीपर उतरल।

धौम्य राहतक साँस लेलनि। “हम घुरि एलहुँ।”

मुदा झरोखा खोलिते हुनकर साँस अटक गेल।

विमानपट्टी ओ नहि छल। पुरान प्रयोगशालाक भवन नहि। चारू कात ऊँच, चिक्कन मीनार सभ छल, जकर बीच आकाशमे चमकैत पथ बनल छल। लोक सभ अजीब हलुक वाहनमे निःशब्द चलैत छल। धरतीपर कतेको पट्टी लिखल छल—‘सोझ समय-पथ’, ‘स्थान-काल पथ’, ‘दीर्घ-विस्थापन पथ’।

धौम्य शीघ्र बाहर निकललाह।

“श्वेतकेतु!”

कोनो उत्तर नहि।

“अपाला! सत्यकाम! रैक्व! घोषा!”

केवल दूर यन्त्रक मधुर ध्वनि।

एक युवक हुनका दिस अचरजसँ तकैत आबि रहल छल। ओकर वस्त्र धौम्य लेल अनचिन्हार, मुदा मुखपर जिज्ञासा परिचित छल।

धौम्य पुछलनि, “यौ, समय कतेक भेल अछि?”

युवक हँसल। “कोन समय? सोझ समय कि स्थान-काल विस्थापन समय?”

धौम्यक देह सिहरि उठल। “सोझ समय।”

युवक अपन करघड़ीक पारदर्शी पट्ट देखलक। “सन् ३१००...”

आगाँ ओ की बाजल, धौम्य नीक जकाँ सुनि नहि सकलाह।

हुनकर कानमे केवल एक गप गूँजैत रहल—हजार बरख!

पुष्पकक भीतर हुनका लेल एक रातिक एक भाग बीतल छल। पृथ्वीपर प्रायः हजार बरख।

ओ युवक एखनहुँ किछु बुझा रहल छल—मानक समय, विस्थापन समय, ग्रह-पथ समय। धौम्य चारू कात तकैत रहलाह। जाहि रहस्यक खोजमे ओ अपन जीवन लगा देने छलाह, एतुक्का लोक ओकरा साधारण मार्ग-सङ्केत जेकाँ उपयोग करैत छल।

धौम्यक मनमे पहिल प्रश्न उठल—“हम अपन खोज ककरा कहब?”

दोसर प्रश्न तकरो पैघ छल—“आकि ई लोक सभ ओ रहस्य बड्ड पहिनहि खोजि चुकल अछि?”

तखन युवक धौम्यक विमान दिस तकलक। ओकर आँखि अकस्मात् पैघ भऽ गेल।

“ई... ई तऽ संग्रहालयक चित्रमे देखल पुरान पुष्पक सन अछि!”

धौम्य युवक दिस तकलनि।

“संग्रहालय?”

युवक धीर-धीर हुनका लग आएल। “अहाँ... कतएसँ आएल छी?”

धौम्य आकाश दिस तकलनि। भोरक पहिल तारा मेटा रहल छल। हजार बरख पहिनुका पाँच विद्यार्थी, अधूर प्रयोगशाला, अपालाक प्रश्न, घोषाक नियम—सभ एकसंग मोन पड़ल।

ओ मुस्की देलनि।

“एहि प्रश्नक उत्तर देबासँ पहिने,” धौम्य कहलनि, “हमरा एकटा पुस्तकालय देखाउ। हमरा जानबाक अछि जे बीतल हजार बरखमे अहाँ सभ की-की सीखलहुँ।”

युवक हँसि पड़ल। “पुस्तकालय? अवश्य। मुदा पहिने अहाँ अपन नाम तँ कहू।”

धौम्य कनेक काल मौन रहलाह। फेर बजलाह—

“धौम्य। हम विद्यार्थी छी—समयक।”

कथा २

बैसाखीपर जिनगी

❦

महाविद्यालयक प्राङ्गणमे भोरुक रौद उतरि रहल छल। अभियान्त्रिकीक प्रवेश-परीक्षा छल, तेँ फाटक लग अभिभावक आ विद्यार्थीक भीड़। कियो प्रवेश-पत्र फेर-फेर देखैत छल, कियो कलम गिनैत, कियो अन्तिम बेर सूत्र दोहरा रहल छल। परीक्षा-कक्ष दिस जाइत एक विद्यार्थी सूचना-पट्ट लग ठाढ़ कर्मचारीसँ पुछलक—“गरमीक छुट्टीक बाद महाविद्यालय कहिया खुलत?”

कर्मचारी बिनु मुँह उठौने बजल—“सूचना-पट्टपर लिखल अछि, पढ़ि लिअ।”

ई छोट संवाद सुनिते बरामदाक छायामे ठाढ़ दू लोक एक-दोसराक मुँह तकलनि, आ एकाएक दुनू हँसि पड़लाह।

“मोन अछि गुणदेव?” पहिल लोक पुछलनि।

“कोना नहि मोन रहत!” दोसर कहलनि। “ओहो सूचना-पट्टकेँ अपन कपार बुझैत छल!”

दुनू गोटे फेर हँसलाह। अठारह बरखक दूरी एक क्षणमे पघिलि गेल। पहिल छलाह रतीश, दोसर फूल। विद्यालय आ महाविद्यालयमे दुनू संगे पढ़ने छलाह। तकर बाद जीवन दुनूकेँ अलग-अलग बाटपर लऽ गेल छल। आइ संयोग एहन जे दुनू अपन-अपन बेटाकेँ प्रवेश-परीक्षा दिअएबाक लेल एही महाविद्यालयमे अनने छलाह।

परीक्षा तीन घण्टाक छल। बेटा सभ भीतर चलि गेल, आ बाहर पुरान दू मित्रक हाथमे तीन घण्टा स्मृतिक लेल खुलि गेल।

“करची कलम मोन अछि?” रतीश पुछलनि।

फूलक मुँहपर उजास आबि गेल। “रोशनाइक गोटी गरम पानिमे घोँटि दवातमे राखैत रही। करची नीक जकाँ काटल नहि हो तऽ अक्षर बिगड़ि जाए।”

“अहाँक अक्षर तखनहुँ फूल सन रहए,” रतीश कहलनि।

“नामे फूल छल, अक्षरकेँ किछु तऽ करए पड़तैक!”

दुनू फेर हँसलाह। स्कूलक माटिक आँगन, पएरे-पएरे हाइस्कूल जाएब, विज्ञानक प्रयोग-पुस्तिका, परीक्षा, परिणाम—सभ एक-एक कऽ गप्पमे आबए लागल। रतीश पढ़ाइ आगाँ बढ़ा अभियान्त्रिकी दिस चलि गेल छलाह। फूल डाकघरमे काज पकड़ि लेने छलाह। नोकरी लगलाक बाद विवाह, परिवार, स्थानान्तरण—समयक धारा दुनूकेँ एतेक दूर बहा लेने छल जे भेँटक अवकाशे नहि भेटल।

रतीश पुछलनि—“तकर बाद अहाँक घरक की समाचार रहल? हम तँ विवाहोमे नहि पहुँचि सकलहुँ।”

फूल कनेक काल चुप रहलाह। सोझाँ मैदानमे पसरल धूप दिस तकैत बजलाह—“घरक कथा छोट नहि अछि।”

हुनकर छोट भाए जन्मसँ एक हाथ पूरा उपयोग नहि कऽ सकैत छलाह। दोसर हाथसँ लिखनाइ सीखलनि, पढ़लनि, परीक्षा देलनि आ अन्तमे सरकारी कार्यालयमे काज भेटलनि। फूल कहलनि—“हमरा सभक घरमे हुनकर हाथक चिन्ता सँ बेसी लोकक दृष्टिक चिन्ता छल। गाममे किछु लोक नामक बदला देहक भिन्नतासँ पुकारि दैत। छोट भाए सुनि चुप रहथि, मुदा माएक मोन दुखाइत।”

रतीश धीर कहलनि—“लोक बड्ड बेर जकरा बुझैत नहि, ओकरा पर हँसैत अछि।”

“हँ,” फूल कहलनि, “आ कखनो-कखनो दया सेहो अपमान जेकाँ लागि सकैत अछि। छोट भाए कहैत छलाह—‘हमरा काज दिअ, सहानुभूति नहि।’”

किछु बरख बाद फूलक माय हुनका लग रहए गेलीह। ओतहि एक मैथिल परिवार भेँट करए आएल। गप्पक बीच विवाहक चर्चा उठल। अतिथि महिलाक बेटी सेहो पैरक बनावटमे भिन्नता कारण चलैत काल कनेक लचकैत छलीह। दुनू परिवार पहिने अपन-अपन नेनाक देहक कमी गिनाबए लगल।

फूल हँसैत कहलनि—“माए बादमे हमरा कहलनि, ‘ई कोन ढंग भेल? दू योग्य मनुष्यक विवाहक गप्प अछि कि दू देहक दोषक हिसाब?’”

रतीश गम्भीर भऽ गेलाह।

“घरमे फेर विचार भेल,” फूल आगाँ कहलनि। “छोट भाए स्पष्ट कहलनि—‘पहिने हम हुनकासँ गप्प करब। हमरा विवाह करबाक अछि तऽ जीवन-संगीसँ, कोनो दया-पात्रसँ नहि।’ बालिका सेहो वैह गप कहलीह—‘हमरा पति चाही, रक्षक नहि।’ एतबे, ताहिपर विवाहक बाट खुलल।”

विवाह भेल। दुनू अपन-अपन काज करैत, घर सम्हारैत, हँसैत-बजैत जीवन आगाँ बढ़बए लगलाह। कठिनाइ सेहो आयल। कतेको बरख धरि हुनका सभक नेना नहि टिकि सकल। घरक लोक चिन्तित, चिकित्सकक दौड़-धूप, आशा आ निराशाक बीच समय बीतैत रहल। फूल ई भाग बड्ड धीर-धीर कहैत छलाह।

“छोट भाए एक दिन हमरा कहलक,” फूल स्मरण कएलनि, “‘जीवन सभकेँ एके नाप नहि दैत। मुदा जे भेटल, ओकरा पूरा जीबए पड़त।’”

कतेको बरख बाद हुनका सभक एक बेटा भेल। घरमे एहन आनन्द जे सभ कठिन दिन जेना पाछाँ छूटि गेल। मुदा शिशु बड्ड नाजुक छल। एक बेर तेज जाड़क बाद ओकर स्वास्थ्य अकस्मात् बिगड़ल आ ओ बाँचि नहि सकल।

रतीशक मुँहक हँसी मेटा गेल। “बड्ड कठिन...”

फूल माथ हिलेलनि। “हँ। मुदा देखू, दुःखक सभसँ विचित्र गप ई अछि जे ओ घरमे रहैत अछि, तइयो भोर होइते लोककेँ उठि काज करए पड़ैत अछि। डाकघर खुलैत अछि, विद्यालयमे घण्टी बजैत अछि, चूल्हि जरैत अछि। जीवन ककरो प्रतीक्षा नहि करैत।”

किछु समय बाद छोट भाए आ भाभी फेर अपन जीवनकेँ समेटलनि। एहि बेर हुनका सभक एक बेटा भेल, जे बढ़ैत-बढ़ैत स्वस्थ, चञ्चल आ पढ़बाक सौखिन भेल। फूल मुस्की दैत कहलनि—“आब तऽ ओ हमरा सभसँ बेसी दौड़ैत अछि। कहैत अछि, अभियन्ता बनब।”

रतीश राहतक साँस लेलनि। “ई तऽ बड्ड नीक समाचार भेल।”

घण्टाघरपर समय धीर-धीर सरकि रहल छल। प्राङ्गणमे कियो चाह पीबैत, कियो समाचार-पत्र पढ़ैत, कियो मोबाइलमे लगल। दुनू मित्रक गप्प फेर अपन-अपन नेना दिस मुड़ल।

“अहाँक बेटा की पढ़ैत अछि?” फूल पुछलनि।

“गणितमे बेश रुचि। मशीन खोलि फेर जोड़ि दैत अछि। कखनो-कखनो दू पेंच बचा दैत अछि, तखन कहैत अछि—‘ई अतिरिक्त छल!’” रतीश हँसलाह।

“तखन अभियन्ता बनबाक पूरा लक्षण अछि,” फूल कहलनि।

“अहाँक बेटा?”

फूल उत्तर देबाक पहिने कनेक रुकलाह। “ओहो विज्ञान पसिन्न करैत अछि। मुदा ओकरा परीक्षा सँ बेसी प्रश्न पूछब नीक लगैत अछि। कहैत अछि—‘यथार्थ उत्तर जानबासँ पहिने यथार्थ प्रश्न भेटब आवश्यक।’”

रतीश प्रसन्न भऽ कहलनि—“बुद्धिमान नेना बुझाइत अछि।”

“बुद्धिमान कि जिद्दी, से परिणाम कहत,” फूल हँसलाह।

तखने परीक्षा-भवनक भीतर घंटी बाजल। बरामदामे प्रतीक्षा करैत लोक सभ एकाएक सजग भऽ गेल। कियो फाटक दिस बढ़ल, कियो छायासँ बाहर निकलल। किछु मिनट बाद विद्यार्थी सभ झुण्ड-झुण्ड बाहर आबए लगल—ककरो मुँहपर उल्लास, ककरो पर चिन्ता, कियो प्रश्नक उत्तरपर बहस करैत।

रतीश अपन बेटाकेँ दूरसँ देखलनि। ओ मित्रसभक संग निकलि रहल छल। रतीश हाथ उठा संकेत देलनि। बेटा सेहो हाथ हिलेलक, मुदा मित्रक प्रश्नमे अटकि कनेक देर ओतहि ठाढ़ रहल।

“अहाँक बेटा कतए?” रतीश पुछलनि।

फूल भीड़ दिस तकैत बजलाह—“आबि रहल अछि।”

तखने भीड़क बीच एक किशोर देखाइ पड़ल। पीठपर झोरा, मुँहपर पसीना, आँखिमे उजास। दुनू बाँहक नीचाँ बैसाखी टिकौने ओ तेजीसँ आगाँ बढ़ि रहल छल। सोपानक अन्तिम डेगपर कनेक ठमकल, संतुलन बनौलक, फेर मुस्की दैत फूलक सोझाँ आबि ठाढ़ भेल।

“बाबू, प्रश्न नीक छल,” ओ उत्साहसँ कहल। “एकटा गणितक प्रश्नमे समय बेसी लागि गेल, मुदा अन्तमे बनि गेल। भौतिकीमे एकटा उत्तरपर सन्देह अछि।”

फूलक चेहरापर एहन गर्व छल जे रतीश किछु क्षण किछुओ बाजि नहि सकलाह। एखन हुनका बुझायल—ई फूलक बेटा अछि।

फूल सहज स्वरमे परिचय करेलनि—“ई हमर पुरान मित्र रतीश काका। हम सभ विद्यालयमे संगे पढ़ैत रही।”

किशोर नमस्कार कएलक। रतीश उत्तर देलनि, मुदा हुनकर आँखि अनायास बैसाखीपर गेल। किशोर ओ दृष्टि पकड़ि लेलक, मुदा ओकर मुँहपर कोनो संकोच नहि छल।

“दू बरख पहिने दुर्घटनामे पएरक स्नायु बड्ड क्षतिग्रस्त भऽ गेल,” फूल शान्त स्वरमे कहलनि, जेना मौसमक समाचार कहि रहल होथि। “बड्ड उपचार भेल। आब ई बैसाखीसँ चलैत अछि। चिकित्सक कहैत छथि आगाँ आरो सुधार सम्भव अछि।”

किशोर बीचमे हँसि कऽ बजल—“मुदा अभियान्त्रिकीक प्रश्न हमरा पएरसँ नहि, माथसँ हल करए पड़ैत अछि।”

रतीश सेहो हँसि देलनि। “ई गप तऽ नीक कहलहुँ।”

किशोर अपन प्रश्न-पत्र निकालि फूलकेँ देखाबए लागल। “ई देखू, एहि ठाम हम पहिने भूल दिशा पकड़ने रही। फेर अन्तिम पाँच मिनटमे बुझायल।”

फूल पूरा ध्यानसँ कागज देखए लगलाह। हुनकर व्यवहारमे न अतिरिक्त चिन्ता, न बनावटी दया। केवल एक पिता, जे अपन बेटाक परीक्षा सुनि रहल छल।

रतीशक मोनमे फूलक कनेक पहिनुका सभ कथा एकसंग घुमि गेल—एक हाथ कम चलनिहार छोट भाए, पैरमे भिन्नता बला भाभी, परिवारक आशंका, लोकक दृष्टि, नेनाक असमय मृत्यु, फेर स्वस्थ नेनाक आगमन। आ आब फूलक अपन बेटा, बैसाखीपर ठाढ़, भविष्यक अभियन्ता बनबाक सपना देखैत।

एक क्षण लेल रतीशकेँ लागल जे जीवन कोनो सोझ रेखा नहि। ककरो देह मजबूत, मन थाकल; ककरो पएर दुर्बल, इच्छा तेज; ककरो बाट समतल, ककरो सोपान भरल। मुदा गन्तव्यक अधिकार सभकेँ बराबर।

फूल बेटासँ पुछलनि—“थाकल छी?”

“कनेको नहि। मुदा भूख लागल अछि।”

“तखन पहिने भोजन, तकर बाद प्रश्न-पत्रक न्यायालय।”

रतीशक बेटो आबि गेल। चारू गोटे संगे फाटक दिस बढ़लाह। फूलक बेटा बैसाखी आगाँ रखैत, देह उठा अगिला डेग भरैत छल। प्रत्येक डेगमे कनेक अतिरिक्त श्रम छल, मुदा गति थमल नहि।

फाटक लग एकटा छोट बालक ओकरा कौतूहलसँ देखैत छल। स्वाइत पहिल बेर एतेक लगसँ बैसाखी देखल छल। किशोर ओकरा दिस मुस्की देलक। बालको मुस्की देलक। प्रश्न बिनु शब्दक समाप्त भऽ गेल।

रतीश फूलक कानमे धीर कहलनि—“अहाँ एतेक गप्प कहलहुँ, मुदा अपन बेटाक कठिनाइ पहिने किएक नहि कहलहुँ?”

फूल कनेक अचरजसँ तकलनि। फेर बजलाह—“किएक कहितहुँ? हम ओकर विषयमे कहि रहल रही—ओ विज्ञान पसिन्न करैत अछि, प्रश्न पूछैत अछि, अभियन्ता बनए चाहैत अछि। बैसाखी ओकर परिचयक एक अंश अछि, पूरा परिचय नहि।”

रतीश किछु नहि बजलाह। हुनका अपन प्रश्नक उत्तर भेटि गेल छल।

चारू गोटे सड़क पार करए लगलाह। आगाँ भोजनालय छल। किशोर सभ परीक्षा पर बहस करैत जा रहल छल। रतीश आ फूल पाछाँ-पाछाँ।

रतीश एक बेर फूलक बेटाक डेग देखलनि—बैसाखी, पएर, फेर बैसाखी; मुदा ओकर दृष्टि सड़कक पार छल।

तखने रतीशक मोनमे एक वाक्य उगल—जिनगी बैसाखीपर हो सकैत अछि, सपना नहि।

कथा ३

हम नै जाएब विदेश

सौरभक हाथमे दूटा कागज छल—एकटा छात्रवृत्तिक स्वीकृति-पत्र, दोसर विमानक यात्रापत्र। दुनू कागज हलुक, मुदा ओकर मोनपर भार बड्ड। तीन माससँ घरमे यैह गप्प चलि रहल छल जे ओ उच्च अध्ययन लेल विदेश जाएत। विद्यालयक शिक्षक प्रसन्न, संगीसभ उत्साहित, आ पड़ोसीसभ कहैत—“एहन अवसर फेर कतए भेटत!”

सौरभ स्वयं सेहो प्रसन्न छल। विज्ञान ओकर प्रिय विषय। छोट वयससँ रेडियो खोलि देखैत, पुरान पंखाक मोटर सँ छोट यन्त्र बनबैत, वर्षाक पानि नापबाक डिबिया गाछपर टाँगैत। छात्रवृत्ति भेटल तऽ पहिल बेर लगल जे ओकर जिज्ञासाक पाँखि सचमुच दूर उड़ि सकत।

मुदा प्रस्थानक दिन लग अबैत गेल ततेक ओकर भीतर एकटा दोसर प्रश्न जागैत गेल—दूर जाइत छी, मुदा कतए सँ जाइत छी? घरक आँगन, पोखरि, विद्यालय, अपन बोली, आजीक कथा, खेतक मेड़, बाढ़िक समय नाव धकेलैत लोक—ई सभ केवल पाछाँ छोड़बाक वस्तु अछि, कि ई सभ ओकर भीतर रहत?

ओ प्रश्न ककरोसँ स्पष्ट रूपेँ नहि पुछने छल। बाबूजी कहथि—“पढ़, सीख, जग देख।” माए कहथि—“जतए रह, अपन भोजन आ निद्राक ध्यान रखिह।” छोट बहिन कहै—“ओतए सँ हमरा तारा देखेबा।” सभक गपमे स्नेह छल, मुदा ओकर प्रश्नक उत्तर नहि।

एहि बीच लाल काका घर आएलाह। ओ सौरभक बाबूजीक दूरक सम्बन्धी छलाह, मुदा घरमे अपन लोक जेकाँ अबैत-जाइत छलाह। हुनका बुझल जे सौरभ विदेश जा रहल अछि तऽ कहलनि—“जाए सँ पहिने एक गोटेसँ भेँट करा दैत छी। अहाँक द्विजेन्द्र काका। देश-विदेशमे इतिहासक पैघ विद्वान मानल जाइत छथि। मुदा अहाँ हुनका नहि चिन्हैत छी, ओहो अहाँकेँ नहि चिन्हैत होयताह।”

“तखन भेँट किएक?” सौरभ हँसि कऽ पुछलक।

लाल काका सेहो हँसलाह। “कखनो अनचिन्हार सम्बन्धी अपन घरक गप बेसी स्पष्ट कहि दैत अछि।”

द्विजेन्द्रक घर नगरक शान्त भागमे छल। बाहर कोनो विशेष चकाचौंध नहि, भीतर पुस्तकक संसार। भित्ति भरि पुस्तक-ताक, मेजपर पाण्डुलिपि, पुरातत्त्वक चित्र, पुरान मानचित्र, दूर-दूरक गोष्ठीक स्मृति-चिह्न। सौरभक नजरि एकटा काँचक पेटीपर पड़ल, जाहिमे माटिक छोट ढेला, करची कलम, नीला कपड़क टुकड़ा आ एकटा पुरान चिट्ठी राखल छल।

द्विजेन्द्र काका बड्ड धीमे बजैत छलाह। “अहाँ सौरभ? छात्रवृत्ति भेटल अछि?”

“हँ।”

“बड्ड नीक। कोन विषय?”

“पर्यावरण अभियान्त्रिकी। विशेष काज बाढ़ि आ जल-प्रबन्धनपर।”

द्विजेन्द्रक आँखि चमकि उठल। “तखन मिथिला अहाँक पाठशाला पहिनहिसँ अछि।”

ई वाक्य सौरभकेँ नीक लगल। मुदा लाल काका चुप रहबामे विश्वास नहि करैत छलाह। ओ कुर्सी खिसका कऽ बैसलाह आ कहलनि—“अहाँ एतेक देश घूमलहुँ, मुदा अपन गामक पोखरि देखबाक फुरसति भेल?”

द्विजेन्द्र मुस्की नहि देलनि। “अहाँक पुरान प्रश्न एखनहुँ पुरान नहि भेल?”

“उत्तर पुरान हो, प्रश्न तँ जिअएत अछि।”

किछु क्षण कोठलीमे नीरवता रहल। सौरभकेँ लगल ओ एहन गप्पक बीच बैसल अछि, जकर आरम्भ ओकर जन्मसँ बड्ड पहिने भेल होयत।

द्विजेन्द्र धीर-धीर बाजए लगलाह। “हम गामेमे प्राथमिक पाठ पढ़लहुँ। झंझारपुर धरि पएरे जाइत रही। पढ़ाइ नीक लगैत छल। तखन लागैत छल—एहि छोट ठामसँ बहरा गेलहुँ तऽ संसार खुलि जाएत। संसार खुलल सेहो। विश्वविद्यालय पहुँचि गेलहुँ। इतिहास हमर संगी बनि गेल। पुरस्कार, पद, पुस्तक, गोष्ठी—सभ भेटल।”

ओ काँचक पेटी दिस तकलनि। “मुदा एकटा गप्प नहि बुझलहुँ—जड़ि छोड़ि देब आ जड़िसँ दूर रहब एके गप्प नहि।”

सौरभ चुपचाप सुनैत रहल।

“हम सोचैत रही—पहिने अपन पएरपर ठाढ़ होइ, तखन माएकेँ अपन लग आनब। पहिने पद भेटए, तखन गाम जएब। पहिने घर बनए, तखन पुरान घरक मरम्मत कराएब। मनुष्य ‘तखन’ शब्दपर बड्ड विश्वास करैत अछि।”

द्विजेन्द्रक स्वर कने अटक गेल। “माए प्रतीक्षा करैत रहली। हम व्यस्त रहि गेलहुँ। जखन हमरा लग समय, पाइ, घर—सभ भेल, तखन माए नहि रहली।”

लाल काका एहि बेर किछु नहि बजलाह।

द्विजेन्द्र काँचक पेटी खोललनि। करची कलम हाथमे लेलनि। “ई हमर माएक राखल वस्तु अछि। ओ पढ़ल-लिखल छलीह। घरमे पोथी पढ़ैत छलीह। हम हुनका बड्ड बाद बुझलहुँ—तखने जखन बुझेनिहारि नहि रहली।”

सौरभक मोनमे विमानक यात्रापत्र याद पड़ल। ओ एकाएक पुछलक—“अहाँकेँ विदेश जाएब अनुचित लगैत अछि?”

द्विजेन्द्र तुरन्त मुँह उठौलनि। “नहि। ई निष्कर्ष कखनो नहि निकालू।”

सौरभ चौंकल।

“दूर जेनाइ दोष नहि। बिसरि जेनाइ दोषो नहि कहल जा सकैत—कखनो परिस्थिति लोककेँ खेंचि लैत अछि। मुदा अपन लोकसँ सम्बन्धक धागा स्वयं काटि देब, से मूर्खता अछि। हम विदेश गेलहुँ, देशक अनेक नगरमे रहलहुँ; ई सभ हमर ज्ञान बढ़ेलक। त्रुटि ई भेल जे हम सोचलहुँ—जखन सफल होयब, तखने सम्बन्ध निभाएब। सम्बन्ध सफलताक बादक काज नहि।”

सौरभ झरोखाक बाहर देखलक। साँझक प्रकाश पुस्तकक पृष्ठपर पड़ि रहल छल।

द्विजेन्द्र फेर कहलनि—“अहाँक विषय बाढ़ि अछि। जँ अहाँ दूर जा कऽ नदीक नब उपाय सीखि आबू, तऽ ई भूमि अहाँक प्रतीक्षा कऽ सकैत अछि। मुदा जँ दूर जाइते सोचि ली जे एतुक्का प्रश्न छोट अछि, तखन ज्ञानक आधा अर्थ समाप्त।”

लाल काका हँसलाह। “देखलहुँ? हम उपदेश देतहुँ तऽ अहाँ भागि जाइतहुँ। विद्वान देलनि तऽ चुप बैसल छी।”

“ई उपदेश नहि,” द्विजेन्द्र कहलनि, “ई पश्चात्तापक हिसाब अछि।”

घर घुरैत काल सौरभ साइकिल नहि चलौलक। बाबूजी मोटरसाइकिल धीर चलबैत छलाह, ओ पाछाँ बैसल बाटक दूनू कात देखैत रहल। पोखरिक कात बालक गेंद खेलैत छल। गाछपर बगुला बैसल। एकटा बूढ़ लोक बाँसक पुलिया मरम्मत कऽ रहल छल। ई सभ दृश्य ओ हजार बेर देखने छल, मुदा आइ जेना पहिल बेर देखलक।

राति ओ छात्रवृत्तिक कागज फेर खोललक। कार्यक्रम अत्यन्त नीक छल। प्रयोगशाला, शिक्षक, जलविज्ञानक अध्ययन—सभ ओकर स्वप्नक अनुकूल। तखन प्रश्न ई नहि रहि गेल जे विदेश जाए कि नहि; प्रश्न ई भेल जे ओ अपन ज्ञानक दिशा कोन दिस राखत।

अगिला दिन विद्यालयमे प्रधानाचार्य विदाईक छोट समारोह रखने छलाह। संगीसभ एकटा मोट कापी देलक—“ओतए जे किछु देखब, लिखैत रहिह।” पहिल पृष्ठपर सभ अपन-अपन नाम लिखने छल।

सौरभ खाली ठामपर लिखलक—“जतए जएब, एतए सँ जएब।”

विमानपत्तन जाए सँ एक दिन पहिने तेज वर्षा भेल। राति धरि पानि पड़ैत रहल। भोरमे खबरि आयल जे गामक पच्छिमक छोट धार उफना गेल अछि। विद्यालयक विज्ञान-दल पहिनेसँ पानि नापबाक साधारण यन्त्र लगा रखने छल। सौरभ सेहो ओहि दलमे छल। शिक्षक फोन केलनि—“जँ समय हो तऽ आँकड़ा देखि जा। तोहर मापक यन्त्र राति भरि चलल अछि।”

माए रोकए चाहली—“काल्हिये यात्रा अछि।”

सौरभ कहल—“एक घण्टा।”

ओ विद्यालय पहुँचल। वर्षा थमल छल, मुदा मैदान भीजल। छोट यन्त्रक आँकड़ा देखैत-देखैत ओकरा बुझायल जे धारक पानि पिछला तीन बरखक औसतसँ बड्ड तेज बढ़ल। ओ शिक्षकसँ कहल—“ई आँकड़ा पंचायतकेँ पठाउ। नीचला टोलमे लोककेँ पहिने सँ खबरि देल जा सकैत अछि।”

शिक्षक तत्क्षण सूचना पठेलनि। किछु घण्टामे लोक मवेशी आ आवश्यक वस्तु ऊँच ठाम लऽ गेल। पानि साँझ धरि टोलक बाहरी भाग छू लेलक, मुदा सभ सजग छल।

सौरभ घर घुरल तऽ कपड़ा माटिसँ भरल छल। माए तमसाइत-तमसाइत ओकर मुँह देखली आ चुप भऽ गेली।

“की भेल?”

“किछु नहि,” सौरभ कहल। “मापक यन्त्र काज केलक।”

बाबूजी मुस्की देलनि। “विदेश जाए सँ पहिनहि अभियन्ता बनि गेलहुँ?”

ओहि राति सौरभ सुतल नहि। ओकरा मोन पड़ैत रहल—द्विजेन्द्रक ‘तखन’, माएक प्रतीक्षा, विद्यालयक आँकड़ा, नीचला टोलक लोक, आ दूर देशक प्रयोगशाला। दुनू संसार ओकरा खेंचैत छल।

भोरमे ओ बाबूजी लग गेल। “एक गप्प कहू?”

“कह।”

“हम नै जाएब विदेश।”

बाबूजी किछु क्षण ओकरा तकैत रहलाह। “डर लागि रहल अछि?”

“नहि।”

“द्विजेन्द्र काकाक कथा सुनि भावुक भऽ गेलहुँ?”

“कने। मुदा केवल ताहि लेल नहि।”

सौरभ अपन कागज खोललक। “एहि छात्रवृत्तिमे एक बरख बाद फेर आवेदनक अवसर अछि। एतए नदीक मापनपर जे परियोजना आरम्भ कएने छी, ओकरा पूरा करए चाहैत छी। राज्य विश्वविद्यालयमे जल-अभियान्त्रिकीक नब पाठ्यक्रम सेहो अछि। हम पहिने एतए पढ़ि, एतुक्का प्रश्नक संग काज करए चाहैत छी। बादमे जँ बाहरी अध्ययनक आवश्यकता पड़त, तऽ जाएब। मुदा एखन केवल एहि लेल नहि जाएब जे सभ कहैत अछि दूर गेलासँ जीवन पैघ भऽ जाइत अछि।”

बाबूजी बड्ड देर चुप रहलाह। फेर पुछलनि—“ई निर्णय तोहर अछि?”

“हँ।”

“तखन हमरा स्वीकार।”

माए दरबज्जापर ठाढ़ सुनि रहल छलीह। हुनकर आँखिमे नोर छल, मुदा ओ तुरन्त पोंछि देलनि। “हमरा लेल नहि रुकिह।”

“अहाँ लेल मात्र नहि,” सौरभ हँसि देलक, “अपन लेल।”

ओहि साँझ सौरभ द्विजेन्द्र काकाकेँ फोन केलक।

“काका, हम एखन विदेश नहि जा रहल छी।”

फोनक दोसर कात कनेक नीरवता। फेर द्विजेन्द्रक स्वर आयल—“हमर कथा सुनि निर्णय बदललहुँ?”

“किछु अंशमे।”

“तखन सावधान। दोसरक पश्चात्तापकेँ अपन भविष्य मत बनाउ।”

सौरभ मुस्की देलक। “हम अपन कारणसँ रुकि रहल छी। एक परियोजना पूरा करबाक अछि। बादमे आवश्यकता भेल तऽ जाएब।”

“तखन नीक। पाँखि होयत तऽ उड़िहे। मुदा पाँखि जड़िक शत्रु नहि।”

अगिला सप्ताह सौरभ छात्रवृत्ति संस्थाकेँ लिखि देलक जे एहि बरख ओ अवसर स्वीकार नहि कऽ सकत। संगीसभमे कियो ओकर निर्णय बुझलक, कियो नहि। कियो कहलक—“एहन अवसर छोड़ि देलहुँ!” कियो कहलक—“हम रहितहुँ तऽ कखनो नहि छोड़ितहुँ।”

सौरभ सभटा सुनलक। ओकरा आब तुरन्त ककरो बुझाएबाक आवश्यकता नहि छल।

वर्षा ऋतु बीतैत-बीतैत विद्यालयक छोट जल-मापक परियोजना तीन गाम धरि पसरि गेल। छात्रसभ मोबाइल-सन्देश नहि, स्थानीय घंटी आ रंगीन झण्डाक सङ्केत सेहो बनौलनि, जाहिसँ जकरा फोन नहि तकरो समयपर खबरि भेटए। सौरभ बुझलक—विज्ञान केवल दूर प्रयोगशालाक चमक नहि; कखनो बाँसक खम्भा, मापक पट्टी, वर्षाक आँकड़ा आ समयपर देल सूचना सेहो विज्ञान अछि।

एक दिन द्विजेन्द्र काका स्वयं गाम आएलाह। लाल काका हुनका देखि एतेक जोर सँ हँसलाह जे आधा टोल बुझि गेल जे कोनो पुरान हिसाब खुलल अछि।

द्विजेन्द्र अपन पुरान घरक ठाम बड्ड देर ठाढ़ रहलाह। तखन विद्यालय गेलाह, सौरभक जल-मापक देखलनि।

“एहि लेल रुकलहुँ?” ओ पुछलनि।

“एखन लेल।”

“आ आगाँ?”

सौरभ आकाश दिस तकलक। बगुलाक झुण्ड उत्तर दिस उड़ि रहल छल।

“आगाँ जखन जे सीखबाक होयत, ओतए जाएब। मुदा घुरबाक बाट मोनमे पहिनहिसँ रखब।”

द्विजेन्द्र किछु नहि बजलाह। केवल सौरभक काँधपर हाथ रखलनि।

ओहि क्षण सौरभकेँ बुझायल—“हम नै जाएब विदेश” केवल एक ठाम नहि जाएबाक घोषणा नहि। ई अपन जीवनक दिशा स्वयं चुनबाक साहस अछि। कखनो रहब, कखनो जाएब, कखनो घुरब; मुदा निर्णय भीड़क आवाजसँ नहि, अपन जिज्ञासा आ उत्तरदायित्वसँ होयत।

आ दूर आकाशमे उड़ैत बगुला देखैत ओकरा लगल—पाँखि जतेक दूर लऽ जाए, घरक दिशा ततेक स्पष्ट रहबाक चाही।

कथा ४

प्रवास

मधुबनी छोड़ि हल्दिया आएल नचिकेतकेँ पहिल सप्ताह धरि सभ किछु अनचिन्हार लगैत रहल। समुद्रक नोनगर हवा, पैघ-पैघ कारखाना, नदीक चौड़ा धार, सड़कपर सुनाइत बंगला बोली—सभ ओकर गामक परिचित संसारसँ भिन्न छल। बाबूजीक पदस्थापन एतए भेल छल, तेँ पूरा परिवारकेँ वर्षक बीचेमे ठाम बदलए पड़ल।

नचिकेत नवम कक्षामे पढ़ैत छल। पुरनका विद्यालयमे ओकर संगी-मण्डली, विज्ञानक छोट दल, कबड्डीक टोली आ पुस्तकालयक परिचित कोना-कोना छल। एतए नव विद्यालयक पहिल दिन ओकरा एहन लगल जेना कियो परिचित पोथीक बीचक पृष्ठ हटाकऽ दोसर पोथी हाथमे दऽ देलक हो।

कक्षामे शिक्षक ओकर परिचय करौलनि—“ई नचिकेत अछि, मिथिलासँ आएल अछि।” किछु छात्र मुस्कुरौल, किछु सिर हिलौलक, आ किछु अपन गपमे लागल रहल। नचिकेतकेँ बंगला नीक जकाँ नहि अबैत छल; सहपाठीसभ हिन्दी बुझैत छल, मुदा आपसमे बंगला बजैत। ओकरा प्रत्येक हँसी अपन विषयमे बुझाइत, यद्यपि बहुधा से सत्य नहि रहैत।

दू-चारि दिनमे ओकरा बुझायल जे भाषा केवल शब्द नहि, अपनापनक दरबज्जा सेहो अछि। भोजनावकाशमे समूह बनि जाइत; ओ कोनो समूह लग जाइत तऽ गपक गति धीमा भऽ जाइत। सभ अशिष्ट नहि छल, मुदा निकटता सेहो सहज नहि बनैत छल।

एक दिन विज्ञान-प्रयोगशालाक बाहर एकटा दुबर-पातर बालक ओकरा रोकलक। “अहाँ विद्युत्-परिपथ बुझैत छी?” ओ टूटी-फूटी मैथिली-जकाँ हिन्दीमे पुछलक।

नचिकेत हँसि देलक। “मैथिलीमे पुछब तऽ तुरन्त बुझाएत, मुदा अहाँ जेना पुछलहुँ सेहो बुझि गेलहुँ।”

बालक सेहो हँसल। “हम तापस। हमरा मैथिली नहि अबैत अछि। मुदा हम सीखि सकैत छी।”

एहि एक वाक्यसँ मित्रताक आरम्भ भेल। तापस विद्यालयक विज्ञान-दलमे तीन बरखसँ काज करैत छल। मोटर खोलब, तार जोड़ब, पुरान पंखासँ पवनचक्की बनायब—एहि सभमे ओकर हाथ तेज छल। मुदा लिखित प्रतिवेदन आ प्रस्तुतीकरणमे ओ झिझकैत। तेँ प्रायः आन छात्र ओकर बनाओल वस्तु मेला धरि लऽ जाइत, ओ पाछाँ रहि जाइत।

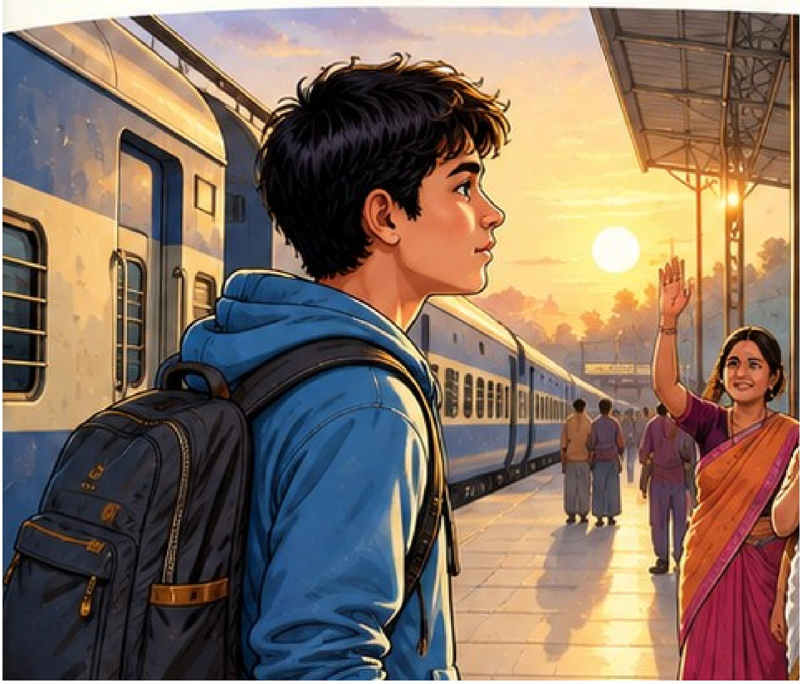

आगामी मास जिला विज्ञान-मेला होयबाक छल। विषय छल—“समुद्रतटीय नगरमे स्वच्छ ऊर्जा आ आपदा-सावधानी।” विद्यालयक वरिष्ठ छात्र देवदत्त बोस टीम बनबैत छल। तापस फेर मोटर, तार आ ढाँचा बनबैत छल, मुदा नामक सूचीमे ओकर स्थान “सहायक” लिखल गेल।

नचिकेत पुछलक—"यन्त्र बनौने के?"

"हम सभ," तापस धीमे बजल।

"तखन मुख्य दलमे तोहर नाम किएक नहि?"

तापस काँध उचकौलक। "एहि ठाम एहेन चलैत आएल अछि। हम मंचपर नीक नहि बजैत छी।"

नचिकेतकेँ गामक विज्ञान-शिक्षक मोन पड़लाह। ओ कहैत छलाह—"जे बनबैत अछि, ओकरा अपन काज बुझाएबाक अवसर सेहो चाही।" नचिकेत तापसकेँ प्रतिवेदन लिखबामे सहायता देलक। बदला मे तापस ओकरा बंगला शब्द सिखबैत—जल, हवा, धन्यवाद, मित्र, सावधान। दुनू हँसैत-हँसैत भाषा बदलैत रहल।

तीन दिनमे छोट नमूना बनि गेल—समुद्री हवा सँ चलनिहार पवनचक्की, जे विद्युत् जमा करैत, आ जलस्तर बढ़ला पर छोट घंटी बजबैत। विचार साधारण छल, मुदा उपयोगी। नचिकेत कहल—"ई केवल मेला लेल नहि, घाट लग सेहो काज देत।"

तापसक आँखि चमकि उठल। "तखन हम एकरा पैघ बनायब।"

देवदत्तकेँ जखन बुझायल जे नचिकेत तापसक संग अलग नमूना बना रहल अछि, ओ खिन्न भेल। "अहाँ नव आएल छी। विद्यालयक दल पहिनहिसँ अछि। हमर सदस्यकेँ तोड़ि अलग टोली बनौनाइ उचित नहि।"

नचिकेत शान्त स्वरमे कहल—"हम ककरो नहि तोड़ि रहल छी। तापस अपन नामसँ काज देखाबए चाहैत अछि। चाही तऽ हम सभ एके दलमे रहि सकैत छी, मुदा ओकर काजपर ओकर नाम रहबाक चाही।"

देवदत्त तखन किछु नहि बजल। मुदा अगिला दिन प्रयोगशालामे वातावरण कड़ुआ छल। किछु छात्र नचिकेतकेँ "बाहरक" कहि अलग राखए लागल। तापस सेहो डरायल—"हमरा कारण अहाँ सभसँ भिड़ि गेलहुँ।"

"तोहर कारण नहि," नचिकेत बजल, "न्यायसँ कम नाम लिखल छल, ताहि कारण।"

विद्यालयक विज्ञान-शिक्षिका अनन्या दी सभ देखैत छलीह। ओ कोनो पक्ष नहि लेलनि। मात्र कहलनि—“मेला धरि पाँच दिन अछि। जकर विचार उपयोगी, जकर काज स्पष्ट, जकर दल मिलि कऽ काज करत—वैह जायत। नामक झगड़ासँ नमूना नहि चलत।”

एहि बीच समुद्र दिससँ तेज हवा चलए लागल। मौसम विभागक चेतावनीपर विद्यालय दू दिन लेल बन्द कएल गेल। हल्दियामे एहन स्थिति अनचिन्हार नहि छल, मुदा नचिकेतक लेल ई पहिल अनुभव। झरोखा कँपैत, वर्षा तिरछी पड़ैत, सड़कपर पानि जमैत।

तापस फोन कएलक—“हमर घाटक लगक बस्तीमे पानि चढ़ि रहल अछि। बिजली बेर-बेर जा रहल अछि।”

नचिकेतक मोन तुरन्त अपन नमूना दिस गेल। ओ बाबूजीसँ अनुमति लऽ शिक्षिकाकेँ फोन कएलक। अनन्या दी कहलनि—“बाहर नहि निकलू। मुदा जँ यन्त्रक योजना काजक अछि, तऽ चित्र आ निर्देश पठाउ। स्थानीय स्वयंसेवकक लग सामग्री रहत।”

नचिकेत आ तापस घर-घर सँ फोनपर गप करैत योजना सरल बनौलनि—बाँस, पुरान साइकिलक घंटी, तार, खाली बोतल आ छोट बैटरी। जलस्तर बढ़ला पर बोतल ऊपर उठत, तार खेंचत, घंटी बजत। महँगा उपकरण नहि; स्थानीय वस्तुसँ चेतावनी।

देवदत्त सेहो समूह-सन्देश देखैत छल। किछु बेर बाद ओकर संदेश आयल—“हमर काका घाटक स्वयंसेवक छथि। हम हुनका चित्र पठा रहल छी। हमरो लग दूटा बैटरी अछि।”

नचिकेत किछु क्षण स्क्रीन देखैत रहल, तखन लिखलक—“पठाउ। सभक काज अछि।”

राति धरि तीन ठाम अस्थायी चेतावनी-घंटी लगा देल गेल। एक ठाम जलस्तर अकस्मात् बढ़ला पर घंटी बाजल, आ लोक समय रहते ऊँच घर दिस चलि गेल। ई कोनो पैघ वैज्ञानिक आविष्कार नहि छल, मुदा ओहि रातिक लेल उपयोगी उपाय छल।

अगिला भोर हवा शान्त भेल। विद्यालय एखन बन्द छल, मुदा विज्ञान-दलक सभ छात्र दूरभाषपर जुड़ल। देवदत्त पहिल बेर खुलि कऽ कहल—“तापस, काल्हि तोहर जलस्तर-विचार काज केलक। मेला-प्रतिवेदनमे मुख्य निर्माणकर्ता तोहर नाम रहत।”

तापस किछु क्षण चुप। फेर कहल—“हम मंचपर बजबो करब।”

सभ हँसि पड़ल। नचिकेत कहल—“तखन पहिने अभ्यास। पाँच पाँति बंगला, पाँच पाँति मैथिली, शेष जे सहज लगए।”

देवदत्त हँसैत कहल—“मेला-बला सभ भागि जायत।”

हँसीक बीच जे अड़चन छल, से धीर-धीर गलि गेल।

विद्यालय खुलल तऽ अनन्या दी पूरा दलकेँ प्रयोगशालामे बजौलनि। “आब निर्णय करू—अलग-अलग नमूना लऽ जाएब कि एक संयुक्त नमूना?”

देवदत्त स्वयं बजल—“संयुक्त। पवनचक्की हमर पुरान ढाँचा, जलस्तर-घंटी तापसक, आ ऊर्जा-संग्रह नचिकेतक परिपथ। प्रस्तुतीकरण सभ मिलि कऽ।”

नचिकेतकेँ आश्चर्य भेल। किछु दिन पहिने जे बालक ओकरा बाहरी मानैत छल, वैह आब ओकर विचारकेँ अपन दलमे बराबर स्थान दऽ रहल छल।

मेला-दिन तापस मंचपर काँपैत ठाढ़ भेल। पहिल वाक्य बंगला मे बजल, दोसर वाक्य हिन्दीमे, तेसर वाक्य अकस्मात् मैथिलीमे—“ई यन्त्र पानि बढ़लाक खबरि पहिने दैत अछि।” उच्चारण सुनि नचिकेत अपन हँसी रोकि नहि सकल। तापस सेहो हँसि देलक, आ पूरा सभागारमे वातावरण सहज भऽ गेल।

दल प्रथम पुरस्कार नहि जीतलक। ओकरा “स्थानीय उपयोगिता” लेल विशेष प्रशंसा भेटल। लौटैत काल ककरो मुख उतरायल नहि छल। कारण ओ सभ बुझि गेल छल जे पुरस्कारसँ पैघ काज ओहि राति भऽ चुकल छल, जखन छोट घंटी सचमुच बाजल छल।

किछु मासमे नचिकेत बंगला बुझए लागल। तापस मैथिलीमे “की हाल अछि?” कहि हँसैत। देवदत्त ओकरा फुटबॉल खेलए बजबैत। भोजनावकाशमे जे समूह पहिने बन्द वृत्त जेकाँ लगैत छल, आब ओहि वृत्तमे ओकर स्थान बनि गेल।

एक दिन बाबूजी पुछलनि—“आबो घर मोन पड़ैत अछि?”

नचिकेत झरोखासँ हल्दियाक आकाश देखलक। “मोन तँ पड़ैत अछि। मुदा आब ई ठाम सेहो अनचिन्हार नहि।”

“तखन प्रवास समाप्त?”

नचिकेत कने सोचि कहल—“प्रवास स्वाइत ठाम बदललासँ समाप्त नहि होइत अछि। जखन नव ठाममे ककरो नाम, भाषा, दुःख आ हँसी अपन जेकाँ बुझाए लगए—तखन ओ ठाम घरक एक हिस्सा बनि जाइत अछि।”

साँझमे तापस आयल। हाथमे पुरान मोटर छल। “चलू, पवनचक्की फेर खोलैत छी। एहि बेर बेसी विद्युत् बनत।”

नचिकेत बैग रखलक आ ओकर संग चलि पड़ल। बाहर नोनगर हवा चलि रहल छल। दूर नदी चमकि रहल छल। ओकरा बुझायल—पाँखि केवल घरसँ दूर नहि लऽ जाइत अछि; पाँखि नव घर बनबाओ सेहो सिखबैत अछि।

कथा ५

हराहरी

शान्त।

ध्यानमग्न।

असगर।

ई तीनटा शब्द पहिने ओकरा लेल लिखल गेल छल कि हमरा लेल, आब निश्चित कहब कठिन अछि। कथा जखन आरम्भ होइत अछि तखन ओ असगर अछि; किछु काल पाछाँ हम असगर भऽ जाइ छी। बीचमे हम दुनू जेना एक-दोसराक स्वभाव बदलि लैत छी। तकरे नाम हम मोने-मोन “हराहरी” रखने छी।

आइ जिला पुस्तकालयक अध्ययन-कक्षमे सात गोट विद्यार्थी बैसल छल। छह गोटे बीच-बीचमे फुसफुसाइत, हँसैत, कलम माँगैत, प्रश्नपत्रक चर्चा करैत छल। सातम छात्र चुपचाप अपन मेजपर झुकल छल। ओकर सोझाँ दूटा पोथी, एकटा लाल पेंसिल आ एक गिलास पानि छल।

ओकर नाम चन्दन चौबे छल। किछु विद्यार्थी ओकरा परोक्षमे “दार्शनिक” कहैत छल। कारण ओ कम बजैत छल। ककरो कोनो प्रश्न हो तऽ पूरा उत्तर दैत, पुस्तकक ठाम बता दैत, गणनाक भूल देखाइ दैत; मुदा अनावश्यक गपमे नहि पड़ैत।

हम पुस्तकालयमे राज्य छात्रवृत्ति आवेदनक कागज जमा करए गेल रही। एकटा प्रमाणपत्रक प्रतिलिपि कम छल। काउण्टरपर बैसल सहायक हमरा अध्ययन-कक्ष दिस देखबैत कहलनि—“चन्दनसँ पुछू, ओ सभ नियम बुझैत अछि।”

हम ओकर मेज लग गेलहुँ। ओ कागज देखलक, दू ठाम लाल पेंसिलसँ चिन्ह लगौलक आ कहल—“एतए विद्यालयक मोहर चाही। आ ई घोषणा-पत्रक अन्तमे अहाँक हस्ताक्षर। काल्हि धरि जमा भऽ सकैत अछि।”

“धन्यवाद,” हम कहलियैक।

ओ सिर हिला देलक, मुदा किछु नहि बजल।

हम दरबज्जा धरि पहुँचि गेलहुँ। पयर ओतहि रुकि गेल। नहि जानि किएक ओकर चेहरा परिचित बुझायल। हम पलटलहुँ।

“अहाँ चन्दन चौबे छी किने?”

ओ पहिल बेर नीक जकाँ हमरा तकलक। “हँ। अहाँसँ पहिने कतहु भेँट भेल अछि?”

“तीन बरख पहिने—राज्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षा। दरभंगाक परीक्षा-केन्द्र।”

ओकर आँखि कने चमकल। “अरे! अहाँ वैह... अनय?”

“हँ।”

एहि बेर ओ मुस्की देलक। “मोन पड़ि गेल।”

आ हमरा एकाएक तीन बरख पहिनेक ओ भोर मोन पड़ि गेल।

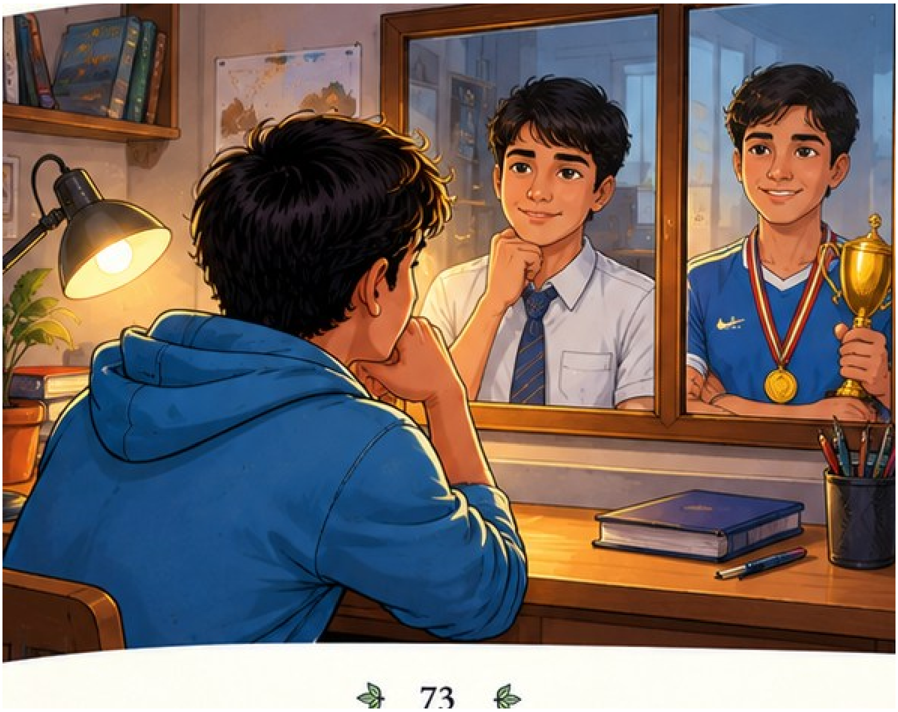

तखन हम नवम कक्षामे पढ़ैत रही। परीक्षा-केन्द्रक फाटक लग असगर ठाढ़ नोट दोहरा रहल रही। सभ विद्यार्थी अपन-अपन समूहमे छल। कियो प्रश्न अनुमान करैत, कियो सूत्र पढ़ैत, कियो अभिभावकसँ अन्तिम निर्देश लैत। हमरा ककरोसँ गप करबाक मोन नहि छल।

तखने एकटा हँसमुख बालक हमरा लग आबि ठाढ़ भेल छल। “अहाँ सेहो इतिहास आ विज्ञान दुनू खण्ड देब?”

हम मात्र सिर हिला देने रही।

ओ अपन नाम बतौलक—“चन्दन चौबे। मुदा चौबे कहब तऽ हमर बाबा घुरि ताकताह। चन्दन कहू।”

हम ओहि दिन पहिल बेर हँसलहुँ।

चन्दन एक बेर बजए लगल तऽ गप रुकबे नहि करैत छल। इतिहाससँ नदी, नदीसँ बाढ़ि, बाढ़िसँ पुल, पुलसँ अभियान्त्रिकी, फेर अकस्मात् आकाशक तारा धरि पहुँचि गेल। ओकर गपमे पाठ्यक्रमक सीमा नहि छल।

घण्टी बजल। हम सभ भीतर गेलहुँ। पहिल पत्रक बाद मध्यान्तरमे ओ फेर भेटल। हाथमे दूटा समोसा छल। एकटा हमरा दिस बढ़ौलक।

“खाइब?”

“भूख नहि।”

ओ जोर सँ हँसल। “परीक्षाक दिन ‘भूख नहि’ सभसँ पैघ बहाना छैक। पेट अपन काज करैत रहैत अछि, महत्वाकांक्षा ओकर ठाम नहि लऽ सकैत।”

हम समोसा लऽ लेलहुँ।

दोसर पत्रक पहिने ओ हमरा दसटा प्रश्न पुछलक, जाहिमे आधाक उत्तर ओकरा स्वयं नहि बुझल रहैक। हम दुनू हँसैत-हँसैत भीतर गेल रही। परीक्षा समाप्त भेल तऽ भीड़मे ओ कतहु बिलाइ गेल। न दूरभाष संख्या बदलल, न ठेकान। मात्र चेहरा आ ओ समोसाक गप मोनमे रहि गेल।

आब तीन बरख बाद, पुस्तकालयमे, हमर सोझाँ बैसल ई चुप छात्र वैह चन्दन छल।

हम ओ बनि गेल रही कि ओ हमरा सन बनि गेल छल? तीन बरख पहिने हम शान्त, ध्यानमग्न, असगर रही; ओ हँसमुख आ गप्पी। आइ हम विद्यालयक वाद-विवाद दलक सदस्य रही, सभासभमे बजैत रही, नव लोकसँ गप करैत रही; आ चन्दन अपन शब्द सभ जेना बचा-बचा कऽ खर्च करैत छल।

हराहरी।

बराबरी? अदला-बदली? जीवनक कोनो अनदेखल हिसाब?

हम ओकर सोझाँ फेर बैसि गेलहुँ। “एकटा गप पुछी?”

“पुछू।”

“अहाँ एतेक चुप कोना भऽ गेलहुँ?”

चन्दन लाल पेंसिल घुमबैत रहल। “आ अहाँ एतेक बजए कोना लगलहुँ?”

हम हँसि देलहुँ। “पहिने हमर प्रश्न।”

ओ कने काल चुप रहल, फेर कहल—“बेस अछि। मुदा उत्तर छोट नहि अछि।”

कक्षाक आन विद्यार्थी धीर-धीर बाहर जा रहल छल। झरोखासँ साँझक प्रकाश मेजपर पड़ैत छल। चन्दन पोथी बन्न कएलक।

"ओहि परीक्षाक बाद बाबूजीक काज छुटि गेलन्हि," ओ कहल। "घर बदलए पड़ल। हम दू बरखमे तीन विद्यालय बदललहुँ। प्रत्येक ठाम नव परिचय, नव समूह। पहिने हम सभसँ गप करैत रही, मुदा बारम्बार अपन कथा आरम्भसँ कहनाइ थकबैत अछि।"

हम चुप रहलहुँ।

"फेर घरक खर्च कम रहए। साँझमे मामाक दोकानपर बैसए लगलहुँ। विद्यालयसँ घुरि काज, फेर पढ़ाइ। गप करबाक समय कम भेल। धीर-धीर लोक कहए लागल—चन्दन बड्ड गम्भीर भऽ गेल, चन्दन बदलि गेल। पहिने ई सुनि नीक नहि लगैत छल। बादमे हम अपनहि मानि लेलहुँ जे स्वाइत हम एहनहि छी।"

"मुदा अहाँ तखन एहन नहि छलहुँ।"

"तखन अहूँ एहन नहि छलहुँ जेना आइ छी।"

ओकर उत्तर सोझ छल, मुदा हमरा भीतर धरि गेल।

हम अपन कथा कहलियैक। प्रतिभा परीक्षाक किछु मास बाद विद्यालयमे भाषण प्रतियोगिता भेल। मैथिली शिक्षक हमर अनिच्छोमे नाम लिखि देने छलाह। हम मंचपर चढ़िते काँपए लगल रही। पहिल दू वाक्य बिसरि गेलहुँ। पाछाँसँ शिक्षक मात्र एतेक कहलनि—"जेना हमरा संग गप करैत छह, तहिना बजह।"

हम धीर-धीर बजए लगलहुँ। तखन दोसर प्रतियोगिता, फेर नाटक, फेर विज्ञान-मेलाक प्रस्तुतीकरण। जे चुप्पी हम अपन स्वभाव बुझैत रही, ओकर एक भाग केवल भय छल। भय घटल तऽ शब्द बाहर आबए लगल।

चन्दन ध्यानसँ सुनैत रहल।

"तखन की हमर चुप्पीक एक भाग सेहो भय अछि?" ओ पुछलक।

"ई अहाँ स्वयं बुझि सकैत छी। मुदा सभ चुप्पी भय नहि। कखनो लोक चुप रहि सोचैत अछि; कखनो थाकल रहैत अछि; कखनो बजबाक ठाम नहि भेटैत अछि। समस्या तखन

होइत अछि जखन आन लोक एक शब्द लगा दैत अछि—‘दार्शनिक’, ‘गप्पी’, ‘लजकोर’, ‘घमण्डी’—आ हम ओहि शब्दकेँ अपन पूरा परिचय मानि लैत छी।”

चन्दन मुस्की देलक। “तीन बरखमे अहाँ सचमुच बड्ड बजए लागलहुँ।”

“अहाँक हिस्सा हमरा लग आबि गेल होयत।”

“तखन हराहरी?”

“हराहरी।”

दुनू हँसि पड़लहुँ। अध्ययन-कक्षमे बैसल पुस्तकपाल घुरि कऽ तकलनि, तेँ हम आवाज कम कऽ लेलहुँ।

ओहि दिनक बाद हम पुस्तकालय नियमित जाए लगलहुँ। आवेदनक बहाना समाप्त भऽ गेल, मुदा चन्दनसँ गपक बहाना भेटि गेल। कखनो हम बेसी बजैत रही, ओ सुनैत; कखनो ओ कोनो विषय खोलि दैत—पुरान पुलक बनावट, मिथिलाक नदी, तारामण्डल, इतिहासक कोनो विस्मृत घटना—आ हम सुनैत रही।

हमरा बुझायल जे पुरान चन्दन पूर्ण रूपेँ कतहु गेल नहि छल। ओकर हँसी भीतर सुरक्षित छल; मात्र दरबज्जा कम खुलैत छल।

एक रवि दिन पुस्तकालयमे किशोर पाठकसभ लेल “खुलल मेज” आरम्भ भेल। नियम सरल छल—जे चाहए, पाँच मिनट धरि कोनो विचार कहए; जे नहि चाहए, केवल सुनए। ककरो उपहास नहि। ककरो बीचमे नहि काटल जाए।

पुस्तकपाल हमरा संचालनक भार देलनि। हम तुरन्त कहलियैक—“चन्दन सेहो संग रहत।”

चन्दन आँखि पैघ कऽ हमरा देखलक। “हम?”

“अहाँ नियम लिखब। हम बेसी बजब तऽ रोकब।”

पहिल दिन आठ विद्यार्थी आएल। एकटा छात्रा अपन बनाओल सूरुजघड़ी देखेलक। एकटा बालक बाढ़िक समय नाव बनएबाक विचार कहल। दू गोटे केवल सुनलक। चन्दन

पूरा समय घड़ी देखैत, नाम लिखैत रहल। अन्तमे एकटा छोट छात्र पुछलक—“भैया, अहाँ किछु नहि कहब?”

चन्दन पहिने टारए चाहलक। फेर उठि ठाढ़ भेल।

“हम एतबे कहब,” ओ धीर बजल, “जे कम बजएवला लोकक मोनमे कम गप नहि रहैत अछि। ओकरा समय दिअ।”

कक्षामे कियो हँसल नहि। सभ सुनलक।

तकर बाद चन्दन बैसि गेल। ओकर चेहरापर पुरान परीक्षा-दिनक मुस्की एक क्षण लेल घुरि आएल।

किछु सप्ताह बाद फेर राज्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षाक दिन छल। एहि बेर हम दुनू पुस्तकालयक ओरसँ परीक्षा-केन्द्र लग पानि आ कलमक सहायता-मेज लगा रहल रही।

फाटक लग विद्यार्थीसभक भीड़ छल। कियो नोट पढ़ैत, कियो आँखि बन्न कऽ सूत्र दोहरबैत, कियो माए-बाबूक गप सुनैत।

हमर नजरि दू बालकपर पड़ल। एकटा कातमे असगर ठाढ़ कागज देखैत छल। दोसर ओकरा लग गेल आ बजल—“अहाँ सेहो इतिहास आ विज्ञान दुनू खण्ड देब?”

हम चन्दन दिस तकलहुँ।

ओहो हमरा दिस तकलक।

दुनू एकहि बेर मुस्की देलहुँ।

“हराहरी,” चन्दन फुसफुसायल।

“हराहरी,” हम दोहरौलहुँ।

घण्टी बाजल। दुनू नव विद्यार्थी परीक्षा-कक्ष दिस चलि गेल। एकटा बजैत-बजैत, दोसर सुनैत-सुनैत। किछु बरख बाद कियो नहि जानि सकैत जे दुनू केहन होयत। हँसमुख बालक कखनो शान्त भऽ सकैत अछि; चुप बालक कखनो मंचक वक्ता। आ कखनो दुनू अपन-अपन ठाम बदलियो नहि, केवल अपन भीतर नव कोठली खोलि सकैत अछि।

हमरा ओहि क्षण बुझायल—मनुष्य एकटा शब्द नहि। “शान्त”, “गप्पी”, “तेज”, “लजकोर”, “कमजोर”, “साहसी”—ई सभ क्षणक परिचय भऽ सकैत अछि, पूरा जीवनक निर्णय नहि।

चन्दन सहायता-मेजपर समोसाक दूटा पुड़िया राखलक। “खाइब?”

हम जानि-बुझि कहलियैक—“भूख नहि।”

ओ जोर सँ हँसल। “तीन बरख बादो ई झूठ नहि छोड़लहुँ!”

हम समोसा उठा लेलहुँ।

शान्त।

ध्यानमग्न।

असगर।

आब ई तीनटा शब्द ककरो स्थायी परिचय नहि छल। शब्द बदलि सकैत अछि। मनुष्य सेहो। मुदा जँ मित्र ककरो पुरान मुस्की चिन्हि ले, तऽ बदलबाक बीचोबीच अपन एक अंश फेर भेटि जाइत अछि।

हराहरी।

❦

कथा ६

पोखरिक तरे भोरुक तारा

कातिकक शीतल भोर छल। गाम एखन पूर्ण जागल नहि छल, मुदा पूब दिस आकाशक कारी रंग धीर-धीर नील होमए लागल छल। घासपर ओस चमकि रहल छल, बाँसक झुरमुटमे चिरैयाँक पहिल स्वर उठि रहल छल, आ गामक दक्खिन दिस पुरान पोखरिक पानि काँच जेकाँ थिर छल।

ओहि पोखरिक नाम छल—तारापोखरि। किएक एहन नाम पड़ल, से ककरो निश्चित बुझल नहि छल। कुसुमक आजी कहैत छलीह, ‘भोरुक तारा एहि पोखरिमे पानि पीबए अबैत अछि।’ छोट रहैत कुसुम ई गप आँखि पसारि सुनैत छलि। आब ओ नवम वर्गमे पढ़ैत छलि, तेँ आजीक कथापर मुस्की तँ दैत छलि, मुदा नामक रहस्य ओकर मोनमे एखनहुँ अटकल छल।

ओहि भोर कुसुम अकेली नहि छलि। ओकर संग मिहिर, अंशु आ ऋचा सेहो छल। चारू गोटे विद्यालयक प्रकृति-अध्ययन दलमे छल। हुनका सभकेँ पोखरिक पानिक ताप, पारदर्शिता आ जलजीवक लेखा बनएबाक छल। विज्ञान-शिक्षिका मालती दी कहने छलीह—‘दिन चढ़लापर पानि बदलैत अछि। एक बेर भोरुक अवस्था सेहो लिखू।’ तेँ चारू गोटे नींद छोड़ि सूर्योदयसँ पहिने पोखरि लग पहुँचल छल।

मिहिर बाँसक छोट मापक दण्ड पानिमे उतारि रहल छल, अंशु कागजपर समय लिखैत छल, आ ऋचा काँचक सीसीमे नमूना भरि रहल छलि। कुसुम पोखरिक बीच दिस तकैत अकस्मात् स्थिर भऽ गेलि। पानिक गहिराइमे एकटा तेज उज्जर बिन्दु चमकि रहल छल—जेना पोखरिक तरे कियो दीप जरौने हो।

‘देखू!’ कुसुम फुसफुसायलि। ‘ओतए की अछि?’

चारू गोटेक नजरि एकहि ठाम अटकि गेल। उज्जर बिन्दु पानिक भीतर गहिर बुझाइत छल। ओकर चारू कात नील अन्हार, ऊपर थिर जल, आ बीचमे अकेला चमक। ऋचा झुकि कऽ कहलि—‘तारा सन बुझाइत अछि।’

मिहिर हँसल। ‘तारा पोखरिक तरे? आजीक कथा साँच भऽ गेल की?’

एहि बेर कियो हँसल नहि। कारण दृश्य सचमुच विचित्र छल। कुसुम ऊपर आकाश दिस तकलि। पूबक क्षितिज गाछसभक पाछाँ नुकायल छल। माथक ऊपर किछु क्षीण तारा छल, मुदा पोखरिमे जे बिन्दु चमकि रहल छल, तकर सोझ ऊपर कोनो तेज तारा देखाइत नहि छल।

अंशु एकटा छोट कंकड़ पानिमे छोड़लक। गोल-गोल तरङ्ग पसरल। उज्जर बिन्दु एक क्षण लेल टुटि कऽ अनेक चमक बनि गेल, फेर पानि थिर होइते एकटा बिन्दुमे जुटि गेल।

‘जँ पानिक भीतर दीप रहितए,’ ऋचा कहलि, ‘तरङ्गसँ एना रूप किएक बदलितए?’

मिहिर लम्बा बाँस अनलक। जे ठाम चमक बुझाइत छल, ओतए बाँस उतारल गेल। बाँस तरे धरि पहुँचि गेल, मुदा कोनो कठोर वस्तु नहि लागल। पानि मटमैला सेहो नहि भेल। उज्जर बिन्दु कनेक कात सरकि गेल जेना ओकरा सभसँ बचि रहल हो।

कुसुमक मोनमे आजीक वाक्य फेर गूँजल—भोरुक तारा पानि पीबए अबैत अछि। मुदा एखन ओ कथा सुननिहार नेना नहि छलि। ओकर भीतर दोसर प्रश्न उठल—जँ ई तारा नहि, तखन ई अछि की?

चारू गोटे ओहि ठाम बाँसक दू पातल खूटा गाड़ि किनारपर निशान बना देलक। समय लिखल गेल—भोर पाँच बजि छत्तीस मिनट। दिशा लिखल गेल—पूब-दक्खिन। पानि—प्रायः पूर्ण थिर। आकाश—स्वच्छ, क्षितिजपर हलुक कुहेस।

विद्यालय पहुँचि चारू गोटे मालती दीकेँ सभ गप सुनौलक। ओ तुरन्त उत्तर नहि देलनि। उलटि कऽ पुछलनि—‘अहाँ सभ की-की देखलहुँ, आ की-की केवल मानि लेलहुँ?’

अंशु कहल—‘हम सभ उज्जर बिन्दु देखलहुँ।’

‘बेस।’

ऋचा कहलि—'ओ पानिक भीतर छल।'

मालती दी मुस्की देलनि। 'ई देखलहुँ, कि एना बुझायल?'

ऋचा चुप भऽ गेलि।

मालती दी कागजपर दूटा तीर खेंचलनि। 'कखनो आँखि जे दिशा सँ प्रकाश पबैत अछि, मोन वस्तुकेँ ओहि रेखाक आगाँ खोजैत अछि। प्रतिबिम्ब एहि कारणे कखनो वास्तविक वस्तुसँ आन ठाम बुझाइत अछि। मुदा हम एखन निष्कर्ष नहि देब। अगिला तीन भोर एके समयपर जाउ। अपन ठाम बदलू, समय लिखू, आ जे चमक देखू तकर स्थान चिन्हू।'

दोसर भोर चारू गोटे फेर पहुँचल। एहि बेर बिन्दु काल्हिक निशानपर नहि छल। कनेक उत्तर दिस छल। मिहिर उत्साहित भऽ कहल—'ई चलैत अछि!'

कुसुम तुरन्त रोकलक—'हम चलल छी कि ई, पहिने से देखू।'

ओ सभ किनारक अलग-अलग ठाम ठाढ़ भेल। अद्भुत गप भेल। मिहिरकेँ चमक एक ठाम देखाइत छल, ऋचाकेँ कनेक आन ठाम, अंशुकेँ आरो आन ठाम। कुसुम एक पयर बाम दिस बढ़बैत छलि तँ उज्जर बिन्दु सेहो पानिमे सरकैत बुझाइत छल।

'एहि तारा केहन आज्ञाकारी!' अंशु हँसि देलक। 'हम चलैत छी, ईहो चलैत अछि।'

ओहि दिन विद्यालयक प्रयोग-कक्षमे एकटा कटोरामे पानि भरल गेल। मालती दी एक कात दीप रखलनि। चारू गोटे अलग-अलग कोणसँ पानि तकलक। दीपक प्रतिबिम्ब सभकेँ अलग ठाम देखायल। कुसुमक आँखि चमकि उठलि।

'तखन पोखरिक उज्जर बिन्दु कोनो वस्तुक प्रतिबिम्ब भऽ सकैत अछि।'

'भऽ सकैत अछि,' मालती दी कहलनि, 'मुदा कोन वस्तु? ई एखन प्रश्न अछि।'

तेसर भोर ओ सभ पहिने सँ बेसी सामग्री लऽ कऽ पहुँचल। अंशु एकटा साधारण दिशा-सूचक अनने छल। मिहिर गत्ता सँ बनाओल कोण-मापक। ऋचा काल्हिक रेखाचित्र। कुसुम आजीक पुरान पीतल दर्पण चुपचाप झोलामे राखि अनने छलि।

पोखरि फेर थिर छल। उज्जर बिन्दु फेर चमकल। एहि बेर कुसुम पानिमे नहि, पूब क्षितिजक खोज करए लागलि। पीपरक पैघ डालि आ बाँसक झुरमुट बीच एकटा सँकर फाँक छल। ओ कनेक दहिन सरकलि। फाँकक भीतर अकस्मात् एकटा अत्यन्त तेज ज्योति देखायल।

‘एतए!’ ओ चिचियाइते सन रुकलि। ‘ऊपर सेहो अछि!’

सभ दौड़ि ओकर ठाम पहुँचल। गाछक फाँक बीच तेज उज्जर पिण्ड चमकि रहल छल। सूरुज एखन नहि निकलल छल। ओकर प्रकाश तारा सभसँ बड्ड, स्थिर आ उज्जर बुझाइत छल।

मिहिर मुँह बिचकौलक। ‘तखन रहस्य समाप्त? ई तारा ऊपर छल, तकर छाया पानिमे।’

ऋचा कहलि—‘छाया नहि, प्रतिबिम्ब।’

अंशु दिशा-सूचक देखलक। ‘आ ई ओही दिशिमे अछि जतए पानिक चमकक रेखा पड़ैत अछि।’

मालती दी ओहि दिन हुनका सभक रेखाचित्र देखि कहलनि—‘अहाँ सभ भोरुक तारा देखलहुँ, मुदा खगोल-विज्ञानमे ई तारा नहि। ई शुक्र ग्रह अछि। सूरुजक लग आकाशमे रहबाक कारण ई कखनो भोरमे, कखनो साँझमे बड्ड तेज देखाइत अछि। पुरान कालसँ लोक एकरा भोरुक तारा वा साँझुक तारा कहैत आएल अछि।’

कुसुम पुछलि—‘मुदा काल्हि ऊपर किएक नहि देखायल?’

‘कारण अहाँ सभ जाहि ठाम ठाढ़ छलहुँ, ओतए गाछक डालि शुक्रकेँ नुकौने छल। पानिक सतहपर पड़ल प्रकाश आन कोणसँ अहाँक आँखि धरि पहुँचल। आँखि प्रतिबिम्बक रेखाकेँ पानिक तरे आगाँ बढ़ौलक, तेँ चमक गहिराइमे बुझायल।’

मिहिर हँसि पड़ल। ‘अर्थात् तारा पोखरिमे नहि उतरल छल; हमरा सभक आँखि बाट गड़बड़ा देने छल।’

‘आँखि गड़बड़ नहि कएलक,’ मालती दी कहलनि। ‘आँखि अपन नियमपर काज कएलक। भूल तखन होइत जँ हम पहिल बुझाइकेँ अन्तिम सत्य मानि लैतहुँ।’

गप एतहि समाप्त भऽ सकैत छल। मुदा कुसुमक लेल एकटा प्रश्न एखनहुँ बचल छल—पोखरिक नाम तारापोखरि किएक?

साँझमे ओ आजी लग बैसलि। सम्पूर्ण खोज सुनौलक। आजी ध्यानसँ सुनैत रहलीह। कुसुम अन्तमे कहलि—‘तखन अहाँक तारा पानि पीबएबला कथा साँच नहि निकलल।’

आजी मुस्की देलनि। ‘हम कहने रही जे कथा विज्ञानक पोथी अछि?’

कुसुम कनेक लजा गेलि।

आजी आगाँ कहलनि—'हमर बाबाक बाबा खेत देखए भोरमे उठैत छलाह। घड़ी कोनो घरमे नहि रहैक। ओ कहैत छलाह—जखन पूबक तारा तारापोखरिक बीच चमकि उठए, बुझू राति विदा लए रहल अछि। खेतिहर, मल्लाह, गोरु चरौनिहार—सभ आकाश आ पानि देखि समय बुझैत छल। स्वाइत एहि कारण पोखरिक नाम पड़ल हो। हमरा तँ बूढ़ लोकसँ कथा भेटल; तोरा सभकेँ ओकर कारण ताकबाक अछि।'

कुसुम चुपचाप आजीक हाथ पकड़ि लेलि। ओकरा बुझायल, कथा आ प्रयोग एक-दोसराक शत्रु नहि। कथा प्रश्न जगा सकैत अछि; प्रयोग उत्तरक बाट देखबैत अछि। उत्तर भेटलाक बादो कथा स्मृतिक रूपमे बचल रहि सकैत अछि।

अगिला सप्ताह प्रकृति-अध्ययन दल तारापोखरिक कात एकटा छोट भोर-दैनिकी आरम्भ कएलक। तिथि, सूर्योदयक समय, शुक्रक दिशा, पानिक अवस्था, चिरैयाँक पहिल स्वर, कुहेसक घनत्व—जे देखाइत, सभ लिखल जाइत। किछु दिन शुक्र नहि देखाइत; किछु दिन बादरमे नुकाइत; कखनो स्थान एतेक बदलि जाइत जे पुरान निशान निष्फल भऽ जाइत।

मिहिर एहि परिवर्तनसँ प्रसन्न रहैत। 'नीक भेल तारा एक ठाम नहि रहैत। नहि तँ हमर दैनिकी तीन दिनमे समाप्त भऽ जाइत।'

ऋचा महीनाक अन्तमे सभ बिन्दु मानचित्रपर अंकित कएलि। अंशु समयक तालिका बनौलक। कुसुम आजीसँ पोखरि सम्बन्धी पुरान लोकगप लिखबैत रहलि। चारू गोटेक काज मिलि एकटा विचित्र पोथी बनल—आधा आकाश, आधा पानि, आधा गणना, आधा कथा। मिहिर हँसि कऽ कहल—'चारि आधा?'

कुसुम उत्तर देलक—'तारापोखरिमे गणितो प्रतिबिम्बित होइत अछि।'

शीत ऋतु आगाँ बढ़ल। एक दिन भोरमे तेज हवा छल। पानि थिर नहि छल। शुक्र ऊपर चमकि रहल छल, मुदा पोखरिमे ओकर एकटा बिन्दु नहि बनल; हजार टुटल रेखा सन काँपैत प्रकाश पसरल छल। चारू गोटे कातमे ठाढ़ रहि बड्ड काल देखैत रहल।

कुसुमकेँ पहिल भोर मोन पड़ल—जखन ओकरा विश्वास भेल छल जे तारा पानिक तरे अछि। एखन ओकरा बुझल छल जे प्रकाश कतएसँ अबैत अछि, पानि कोना ओकर बाट मोड़ैत अछि, आँखि कोना तकर स्थान बुझैत अछि। तथापि दृश्यक सुन्दरता घटल नहि छल। उलटे, बुझलाक बाद चमक आरो गहिर बुझाइत छल।

ओ दैनिकीमे अन्तिम पाँति लिखलक—‘पोखरिक तरे तारा नहि छल। तारा ऊपर सेहो नहि—ओ तँ ग्रह छल। मुदा प्रश्न? प्रश्न हमरा सभक भीतर चमकि रहल छल।’

भोर पूर्ण भऽ गेल। सूरुजक पहिल किरण पोखरिपर पड़ल, शुक्र धीर-धीर उज्जर आकाशमे बिलाइ गेल। चारू मित्र अपन कागज समेटि विद्यालय दिस चलि पड़ल। पाछाँ तारापोखरि थिर पड़ल छल, जेना अगिला प्रश्नक प्रतीक्षा करैत हो।

कथा ७

गामक पुरान पुस्तकालय

गामक बीचोबीच पीपरक पैघ गाछसँ कनेक पच्छिम एकटा पुरान भवन ठाढ़ छल। चूना झड़ि गेल छल, झरोखाक काठ कारी पड़ि गेल छल, आ मुख्य दरबज्जापर जंग लागल पैघ ताला लटकैत छल। भवनक माथ पर पत्थरक एकटा पट्ट रहैक, मुदा धूलि आ काइमे अक्षर प्रायः नुकायल छल। गामक छोट नेना सभ ओहि भवनकेँ ‘बन्द घर’ कहैत छल।

नवम वर्गक मयंककेँ बन्द घर सभसँ बेसी आकर्षित करैत छल। विद्यालय जाएब-आएब काल ओ झरोखाक टूटल फाँकसँ भीतर तकबाक चेष्टा करैत। भीतर अन्हार, जाल आ धूलिक बीच कतहु-कतहु पोथीक पीठ चमकि उठैत। एक दिन ओकर संगी नेहा कहलक—‘ई बन्द घर नहि, पुरान पुस्तकालय अछि।’

‘अहाँकेँ कोना बुझल?’ मयंक पुछलक।

नेहा अपन आजीक नाम लेलक। आजी कहने छलीह जे हुनकर किशोरावस्थामे एहि पोथीघरमे साँझ धरि लोक बैसैत छल। विद्यालयक विद्यार्थी, खेतिहर, शिक्षक, डाकघरक कर्मचारी—जेकरा पढ़बाक चाव हो, ओ आबि सकैत छल। रविदिन तऽ बरामदामे ठाम कम पड़ि जाइत।

मयंकक आँखि चमकि उठल। ‘तखन ई बन्द किएक?’

नेहा काँध उचकौलक। 'से आजीयो पूरा नहि जनैत छथि। कहैत छथि, पहिले पोथीघरक देखरेख करनिहार रघुनाथ काका गुजरि गेलाह। फेर भवनक छत चुबए लागल। कुंजी पंचायतमे गेल, पंचायत बदलल, कुंजी कोन पेटीमे गेल से ककरो मोन नहि रहल।'

गप एतहि रहि गेल रहित, मुदा तेसर संगी इन्द्रनील ओहि साँझ एकटा नव सूचना अनलक। ओकर बाबा पुरान लोहार छलाह। हुनका मोन पड़ैत छल जे एहि भवनक ताला ओ पैंतीस बरख पहिने बनौने छलाह। 'ताला एखनहुँ चलि सकैत अछि,' बाबा कहलखिन्ह, 'जँ कुंजी भेटि जाए।'

तीनू मित्र अगिला दिन विद्यालयक प्रधानाध्यापक सुधाकर झाक लग गेल। सुधाकर झा पहिने हँसलाह—'तोरा सभकेँ पढ़बाक लेल विद्यालयमे पोथी कम पड़ि गेल की?' मुदा जखन नेहा पुरान पुस्तकालयक गप कहलनि, हुनकर मुख गंभीर भऽ गेल।

'हम छोट रही तखन ओतए गेल छी,' ओ धीर स्वरमे कहलनि। 'हमर पहिल विज्ञान-पत्रिका ओतहि पढ़ल छलहुँ। चन्द्रमापर मनुष्यक चित्र देखि राति भरि निन्न नहि आएल छल।'

मयंक उत्साहित भऽ उठल। 'तखन ताला खोलू ने गुरुजी!'

'कुंजी हमरा लग नहि अछि।'

'ताकि सकैत छी।' नेहा तुरन्त कहलि।

सुधाकर झा किछु क्षण सोचलनि। फेर तीनूकेँ पंचायत कार्यालयक सचिवक नाम देलनि आ कहलनि—'अनुमति बिनु ताला नहि छूब। मुदा जँ अनुमति भेटि जाए, हमहुँ संग रहब।'

पंचायत कार्यालयमे तीनटा कपाट, दूटा लोहेक पेटी आ कागजक ढेर छल। सचिव शम्भुनाथ बाबू पहिने हाथ उठा देलनि—'एतेक पुरान कुंजी? ककरा बुझल रहत!' इन्द्रनील अपन बाबाक गप कहलनि। शम्भुनाथ बाबू कनेक नरम पड़लाह। 'बेस, रविदिन देखब।'

रविदिन भोरसँ खोज आरम्भ भेल। पहिल पेटीमे करक पुरान रसीद, दोसरमे चुनावक कागज, तेसर कपाटमे टूटल मुहर आ अनुपयोगी ताला सभ भेटल। नेहा एक-एक गुच्छा अलग करैत रहलि। मयंक धूलि फूँकि-फूँकि आँखि लाल कऽ लेलक। इन्द्रनील प्रत्येक कुंजीकेँ आकार देखि छाँटैत रहल।

दुपहरिया होइत-होइत शम्भुनाथ बाबू थाकि गेलाह। 'आब छोड़ू, कुंजी स्वाइत नष्ट भऽ गेल।'

इन्द्रनील तखने एकटा छोट कपड़ाक थैली उठौलक, जे पुरान मानचित्रक पाछाँ दबायल छल। थैलीमे पाँचटा कुंजी छल। एक कुंजी अनोखा रूपसँ नमगर आ भारी। ओकर दाँत पर जंग छल, मुदा बनावट इन्द्रनीलक बाबाक वर्णनसँ मिलैत छल।

सब गोटे पुस्तकालय दिस चलल। सुधाकर झा सेहो आबि गेलाह। दरबज्जा लग पहुँचि इन्द्रनील कुंजी ताला भीतर देलक। पहिल बेर नहि घुरल। तेल देल गेल। दोसर बेर आधा घुरल। तेसर बेर ‘खट्’ सन स्वर भेल आ ताला खुलि गेल।

दरबज्जा धक्का देलापर भीतरसँ धूलिक बादर उठल। तीनू मित्र एक संग दू पयर पाछाँ हटि गेल। झरोखा खोलल गेल तँ प्रकाशक धार भीतर पड़ल। धूलिक कण ओहि प्रकाशमे एना नाचि रहल छल जेना बड्ड दिनसँ बन्द कोठलीमे उजियारक स्वागत करैत हो।

दीवार लग काठक पुस्तक-ताक सभ छल। किछु झुकि गेल, किछुक काँच टूटल। पोथी सभ पर धूलिक मोट तह। एक कोना पुरान गोलक, दोसर कोना मानचित्रक लपेट, बीचमे पैघ मेज। मेजपर सूखल दावात, टूटा कलमदानी आ एकटा पंजी-पोथी छल।

नेहा पंजी-पोथी उठेबाक चेष्टा कएलक, मुदा सुधाकर झा रोकलनि—‘पहिने हाथ स्वच्छ करू। पुरान कागज कमजोर होइत अछि।’ ओ विद्यालयसँ कपड़ाक दस्ताना मँगौलनि। पंजी-पोथी खोलल गेल। पन्ना पीयर पड़ि गेल छल, मुदा अक्षर स्पष्ट छल।

पहिल पन्नापर उद्घाटनक तिथि छल। तकर बाद पोथी लेनिहार लोकक नाम। मयंक एक नामपर अँगुरी रोकलक—‘गुरुजी! ई तऽ अहाँक नाम!’

सुधाकर झा चश्मा उतारि पन्ना लग आनलनि। सचमुच किशोर सुधाकर झाक नाम छल, आ सोझाँ लिखल पोथीक विषय—‘आकाश-विज्ञान’। हुनकर मुखपर एहन मुस्की आएल जे विद्यार्थी सभ पहिने कखनो नहि देखने छल।

‘ई पोथी हमर जीवन बदलने छल,’ ओ कहलनि। ‘हम शिक्षक बनब से स्वाइत—’ ओ रुकलनि, फेर अपनहि सुधारलनि—‘स्वाइत ओहि दिनसँ मनमे बीज पड़ल।’

नेहा पंजी-पोथीक दोसर पन्ना पलटलि। अनेक नामक सोझाँ पोथी घुरेबाक तिथि छल; किछु नामक सोझाँ खाली ठाम। ‘ई पोथी सभ घुरल नहि?’

‘हो सकैत अछि,’ सुधाकर झा कहलनि। ‘मुदा एतेक बरख बाद दोष ताकबासँ पहिने पोथीघर बचाउ।’

तीनू मित्र निर्णय कएलक जे अगिला सात दिन साँझ दू घंटा सफाइ करब। विद्यालयसँ झाड़ू, सूखल कपड़ा आ मुखावरण भेटल। गामक दू वृद्ध सेहो आबि गेलाह। कियो पोथीक ढेर उठौलक, कियो झरोखाक जाल झाड़ि स्वच्छ कएलक, कियो भीतक काइ खरौंचलक।

सफाइक तेसर दिन एकटा पुस्तक-ताकक पाछाँ काठक पातर पेटी भेटल। मयंकक मोन फेर रहस्य दिस दौड़ल। ‘एहिमे की होएत?’

पेटीपर ताला नहि छल। भीतर दर्जन भर हस्तलिखित पोथी, पुरान पत्रिका आ किछु चित्र छल। चित्रमे ओहि भवनक बरामदा लोकसँ भरल। एक चित्रमे किशोर-किशोरी सभ वृत्त बना कऽ बैसल छल, बीचमे उज्जर दाढ़ी बला व्यक्ति पोथी पढ़ि रहल छलाह।

नेहा चित्र आजी लग लऽ गेलि। आजी दीर्घ काल तकैत रहलीह। ‘ई रघुनाथ बाबू छथि,’ ओ कहलनि। ‘हम सभ हुनका रघु काका कहैत रही। ओ कहैत छलाह—पोथी घरमे बन्द रहए लेल नहि, हाथ बदलए लेल होइत अछि।’

आजी चित्रमे अपन किशोर रूप सेहो चिन्हलनि। नेहा चकित। ‘अहाँ एतए बैसैत छलहुँ?’

आजी हँसलि। ‘हम तऽ नित्य। मैथिली कथा पढ़ैत रही, फेर संगी सभकेँ सुनबैत रही। एक बेर घरक लोक तमसा गेल छल जे साँझ बीति गेल। रघु काका लालटेन लेने हमरा घर धरि छोड़ए गेलाह।’

एहि स्मृतिसँ काजक रूप बदलि गेल। आब तीनू मित्र मात्र धूलि नहि झाड़ैत छल; ओ सभ पोथीघरक इतिहास जुटबए लागल। ककरो लग पुरान सदस्य-पत्र छल, ककरो लग रघु काकाक

चित्र, ककरो लग ओहि समयक कविता-पुस्तिका। जे वस्तु भेटैत, ओकर विवरण अलग कॉपीमे लिखल जाइत।

इन्द्रनील पुरान पुस्तक-ताकक पेंच कसलक। ओकर बाबा टूटल कुंडी सुधरलनि। नेहा पोथी सभकेँ विषय अनुसार अलग करए लागलि—कथा, कविता, विज्ञान, इतिहास, खेती, बालसाहित्य। मयंक प्रत्येक पोथीक अवस्था लिखैत—सुरक्षित, मरम्मतिक आवश्यकता, अथवा बड्ड कमजोर।

एक साँझ मयंककेँ मोट विज्ञान-पोथीक भीतर सूखल पीपर-पात भेटल। पातक बीच एक छोट कागज छल। ओहि पर बाल-हस्ताक्षरमे लिखल छल जे पोथी पढ़ि आकाश देखबाक मोन भेल। नाम धुँधला छल। मयंक कागज सुधाकर झाक देखेलक।

सुधाकर झा बड्ड काल चुप रहलाह। 'ई हमर लिखल सन बुझाइत अछि।'

'तखन राखब?' मयंक पुछलक।

'राखब। मुदा हमर स्मृति कहि नहि, पुस्तकालयक स्मृति कहि।'

एहि वाक्यसँ तीनू मित्रकेँ एक नव विचार भेटल। भवनक एक कोना 'स्मृति-पेटी' बनत, जतए पुरान सदस्यक चित्र, पाती, सदस्य-पत्र, पोथीक बीच भेटल चिह्न—सभ सुरक्षित रहत। मुदा कोनो वस्तु बिनु मालिकक अनुमति नहि राखल जाएत।

सात दिनक काज सात सप्ताह धरि बढ़ि गेल। भवनक छत पंचायत मरम्मत करौलक। विद्यालयक विद्यार्थी सभ पुरान अखबार बेचि किछु पाइ जुटौलक। गामक लोक अपन घरक नीक अवस्था बला पोथी दान देब आरम्भ कएलक। दानक नियम बनल—फाटल, अधूरा अथवा अनुपयुक्त सामग्री नहि; प्रत्येक पोथी पहिने देखल जाएत।

सब गोटेक बीच एक प्रश्न उठल—नव पुस्तकालय चलाओत के? रघु काका सन एक गोटेपर पूरा भार देब फेर वैह भूल होएत। नेहा प्बाटव देलक—'सप्ताहक प्रत्येक दिन अलग स्वयंसेवक। विद्यार्थी, शिक्षक आ गामक इच्छुक लोक मिलि कऽ।'

शम्भुनाथ बाबू हँसलाह। 'पंचायतक ताला फेर नहि लगत?'

मयंक तुरन्त उत्तर देलक—'रातिमे लगत, दिनमे नहि।'

उद्घाटनक दिन कोनो फीता नहि काटल गेल। सुधाकर झा कहलनि—'जे घर पहिने चलैत छल, ओकर फेर जन्ममे फीता कथी लेल?' ताहि बदला सभसँ वृद्ध सदस्य—नेहाक आजी—पहिल पोथी पुस्तक-ताकसँ निकालि सभसँ छोट पाठककेँ देलनि।

ओ छोट पाठक छठम वर्गक सोनू छल। ओ पोथी हाथमे लेने कनेक घबरा गेल। 'हम एतए बैसि पढ़ी कि घर लऽ जाई?'

आजी कहलनि—'दुनू। पोथीकेँ बाट चाही।'

बरामदा फेर भरए लागल। कियो समाचारपत्र पढ़ैत, कियो परीक्षा लेल पोथी ताकैत, कियो चित्र-पोथी पलटैत। शनिवार साँझ कथा-पाठ आरम्भ भेल। पहिल कथा नेहा अपन आजीसँ सुनल पुरान लोककथा सुनौलक; दोसर सप्ताह मयंक विज्ञानक छोट प्रयोग देखौलक; तेसर सप्ताह इन्द्रनील ताला बनबाक पुरान ढंगपर गप कएलक।

मयंक एक दिन दरबज्जा बाहर ठाढ़ भऽ पुरान ताला देखैत छल। ओ ताला एखन दीवारपर स्मृतिक रूपमे टाँगल छल—बिनु कोनो लेखनक, मात्र खुलल अवस्था मे। इन्द्रनील लग आबि कहल—'एहि ताला बिनु पुस्तकालय खुलित?'

मयंक हँसल। 'कुंजी बिनु नहि।'

नेहा पाछाँसँ बजली—'आ कुंजी भेटितो नहि, जँ हम सभ ताकिते नहि।'

तीनू कनेक काल चुप रहल। भवन भीतरसँ पन्ना पलटबाक स्वर, धीम गप आ नेना सभक हँसी आबि रहल छल। जे घर बड्ड बरख धरि अन्हारमे बन्द छल, ओ एखन साँझक उजियारसँ भरल छल।

मयंककेँ बुझायल जे पुरान वस्तु सभ केवल बचा कऽ रखबाक लेल नहि होइत अछि। किछु वस्तु फेर उपयोगमे अएलापर अपन अर्थ पबैत अछि। पुस्तकालयक कुंजी लोहेक छल, मुदा असली कुंजी तीनटा प्रश्न छल—ई की अछि? किएक बन्द अछि? फेर कोना खुलत?

ओहि राति घर घुरैत मयंक पाछाँ तकलक। पुस्तकालयक झरोखासँ उजियार बाहर पड़ि रहल छल। पीपरक पात हवा मे हिलैत छल, आ बरामदामे नेहा आजीक संग पोथी समेटि रहलि छलि। मयंक मनमे सोचलक—कतेक घर ताला सँ बन्द होइत अछि, आ कतेक घर विस्मरण सँ। पहिल ताला कुंजी सँ खुलैत अछि; दोसर स्मृति, परिश्रम आ संगतिकेँ चाहैत अछि।

कथा ८

खस्सी घंटीक रहस्य

गामक दक्षिण टोलामे रमापति काकाक एकटा उज्जर खस्सी छल। देह उज्जर, कानक छोर कारी, माथ पर छोट-छोट दू सींग। गरदनिमे पीतरक घंटी बान्हल रहैक। दिनमे जखन ओ पघुराइत वा दौड़ैत, घंटी टुन-टुन करैत। टोलाक नेना सभ दूरहिसँ बुझि जाइत—चाँद आबि रहल अछि। रमापति काका ओकर नाम सचमुच ‘चाँद’ रखने छलाह।

चाँद सभक दुलारू छल, मुदा पछिला किछु रातिसँ ओकर घंटी गामक लोककेँ अचम्भित कऽ रहल छल। पहर राति बीतलाक बाद, जखन आँगन सभ निस्तब्ध होइत, दक्षिणक पुरान बाग दिससँ टुन-टुन-टुनक स्वर अबैत। लोक कहैत—‘ई चाँदक घंटी सन अछि।’ मुदा भोरमे चाँद अपन गोहालमे बान्हल भेटैत।

रमापति काका एहि गपपर हँसैत छलाह। ‘हम अपनहि साँझमे बाँधैत छी। बाँसक फाटक भीतरसँ कुंडी लगा दैत छी। खस्सी उड़ि कऽ थोड़े बाग पहुँचत!’

मुदा स्वर नित्य नहि, दू-तीन राति छोड़ि फेर अबैत। ताहि कारण गाममे अनेक कथा उपजल। कियो कहलक पुरान बागमे राति चरवाहाक छाया घूमैत अछि। कियो कहलक पुरान मठक घंटी हएत। कियो फेर कहलक—‘ई सभ हवा-पानीक खेल।’

अष्टम वर्गक प्राची, नील, विहान आ मधुपकेँ एहन रहस्य बड्ड नीक लगैत छल। चारू गोटे ठानलक जे अनुमान नहि, पहिने प्रमाण ताकल जाए।

‘पहिल गप,’ प्राची कहलि, ‘घंटी सचमुच चाँदक अछि कि नहि?’

मधुप घंटीक स्वर खूब नीक जकाँ चिन्हैत छल। ओकर घर रमापति काकाक आँगनसँ दू घर छोड़ि छल। ‘चाँदक घंटीमे एकटा टुटल सन टुन अछि। पहिने ‘टुन’, फेर छोट ‘टन’। रातिक स्वर वैह अछि।’

नील कहलक—‘स्वर मिललासँ ई सिद्ध नहि होइत जे चाँदे घूमैत अछि। ओहन घंटी दोसर ठामो भऽ सकैत अछि।’

चारू गोटे पहिने दिनमे चाँदक गोहाल देखए गेल। रमापति काका अनुमति देलनि। बाँसक फाटक मजबूत देखाइत छल, मुदा दहिना कातक एक बाँस नीचाँसँ चिक्कन भऽ गेल छल। विहान हाथ फेरि कहल—‘एतए किछु घसैत अछि।’

फाटकक भीतर जमीनपर दू-तीन ठाम खुरक निशान छल। एक कोनामे सुतलीक छोट रेशा अटकल छल। प्राची चाँदक सींग देखलक। दहिना सींगक अग्र भाग कनेक चमकि रहल छल, जेना बेर-बेर ककरो कठोर चीजमे रगड़ाइत हो।

‘ई सींगसँ कुंडी धकेलैत होएत?’ मधुपक मुँहसँ निकलल।

रमापति काका फेर हँसलाह। ‘एतेक बुद्धि एहि खस्सीमे!’

प्राची मुस्की देलक। ‘बुद्धि नहि, अभ्यास। जँ ककरो बेर-बेर एकहि काजसँ लाभ भेटत, ओ काज फेर करब सीखि सकैत अछि।’

ओहि साँझ चारू गोटे अपन-अपन घरक बड़का लोककेँ सभ गप कहल। रातिमे असगर घूमबाक विचार ककरो नीक नहि लगल। तखन नीलक बाबा कहलनि—‘रहस्य बुझबाक अछि तँ भोरुक पहर देखू। हमहुँ संग रहब।’

योजना बनल। रमापति काकाक अनुमति सँ फाटकक कुंडीमे एकटा पातर सूत बान्हल गेल। सूत एना रहैक जे कुंडी उठल तँ टूटि जाए, मुदा चाँदकेँ कोनो चोट नहि पहुँचए। बाहरक नरम माटिमे राख छिड़कल गेल, जाहिसँ खुरक निशान स्पष्ट देखाइ।

पहिल राति किछु नहि भेल। भोरमे सूत जसक तस। दोसर रातियो शान्ति। तेसर राति आधा रातिक बाद दक्षिण दिससँ फेर टुन-टन, टुन-टन सुनाइ पड़ल। चारू मित्र अपन घरमे छल, मुदा भोर होइतहि नीलक बाबाक संग रमापति काकाक आँगन पहुँचि गेल।

सूत टूटल छल। चाँद फेरो गोहालमे ठाढ़ पात चबा रहल छल। राखपर खुरक निशान फाटकसँ बाहर गेल छल आ फेर भीतर घुरल निशान सेहो छल।

रमापति काका एहि बेर नहि हँसलाह। ‘ई तऽ सचमुच बाहर जाइत अछि!’

नीलक बाबा फाटक देखलनि। कुंडी ऊपर दिस उठबैतहि खुलि जाइत छल। चाँद सींगक टोकसँ बाँस धकेलैत, कुंडी कनेक उठैत, फेर माथ झटका दैत। किछु बेरक अभ्याससँ ओ ई उपाय सीखि लेने छल। बाहर निकललाक बाद फाटक पूरा बन्द नहि होइत; घुरैत काल ओ नाकसँ धकेलि भीतर आबि जाइत।

'आब प्रश्न अछि—ओ जाइत कतए?' विहान कहलक।

नीलक बाबा निर्णय देलनि—'काल्हि भोरसँ पहिने हम सभ दूरसँ देखब। कियो दौड़त नहि, कियो खस्सीकेँ डराओत नहि।'

अगिला राति चन्द्रमा आधा छल। पहर रातिक बाद हवा शीतल भऽ गेल। नीलक बाबा, रमापति काका आ चारू मित्र ओसाराक अन्हार भागमे चुपचाप बैसल रहल। कतेक काल धरि किछु नहि भेल। फेर गोहाल भीतर हलुक खरखराहट भेल।

चाँद फाटक लग आएल। माथ झुका कऽ सींग कुंडी नीचाँ लगेलक। एक बेर, दू बेर। तेसर बेर कुंडी ऊपर उठल। चाँद देह सटाकऽ फाटकक फाँकसँ बाहर निकलल। घंटी हलुक बजल—टुन...टन।

चारू मित्रक आँखि चमकि उठल। रमापति काका अपन हँसी रोकि नहि सकलाह, मुदा नीलक बाबा ओठपर अँगुरी राखि संकेत देलनि।

चाँद गामक मुख्य बाट नहि पकड़लक। ओ बाँसबारिक पाछाँ सँ निकसल एक पातर पथ पर बढ़ल। पथ पुरान आमक बाग दिस जाइत छल। सभ गोटे बड्ड दूरी राखि ओकर पाछाँ चलल। ओससँ भीजल घासमे चाँदक खुरक चमकैत निशान बनैत गेल।

बागक बीचमे एकटा पुरान पक्की कोठरी छल। पहिने ओ बाग देखनिहारक घर रहैक। एखन ओकर आधा भाग टूटल, मुदा एक कोठलीमे दुलारी काकी रहैत छलीह। हुनकर पुत्र परिवार सहित दूर नगरमे काज करैत छल; दुलारी काकी गाम छोड़बाक नाम नहि लैत छलीह।

चाँद सोझ ओहि कोठरीक बरामदा लग पहुँचि घंटी बजौलक। भीतरसँ कमजोर प्रकाश देखाइ पड़ल। किछु क्षण बाद दुलारी काकी बाहर अयलीह। हाथमे अरहरक कोमल पात आ एक मुट्ठी नून छल।

'आ गेलह चाँद?' ओ एना बजलीह जेना ककरो पुरान परिचितसँ गप करैत होथि।

चाँद हुनकर लग जा कऽ माथ हाथमे घसा देलक। दुलारी काकी ओकर कपार सहलौलनि। चारू मित्र झाड़ीक पाछाँ निःशब्द। रमापति काका सेहो स्तब्ध।

किछु काल बाद नीलक बाबा खखारि कऽ अपन उपस्थिति जनौलनि। दुलारी काकी चौंकि गेलीह। ‘के?’

सभ गोटे सोझाँ अएलाह। दुलारी काकीक मुखपर पहिने भय, फेर संकोच, अन्तमे थकान उतरि आएल।

रमापति काका पूछलनि—‘काकी, ई नित्य एतए अबैत अछि?’

दुलारी काकी चाँदक गरदनिपर हाथ राखि कहलनि—‘नित्य नहि। जखन मोन पड़ैत होएत तखन। हम बजबैत नहि छी।’

‘अहाँ एकरा चिन्हैत छी?’ प्राची पुछलक।

दुलारी काकी बरामदाक नीच आसनपर बैसि गेलीह। ‘ई जखन बड्ड छोट रहए, एकर माय मरि गेल रहैक। तखन ई हमर छल। कटोरीसँ दूध पिआबैत रही, देह पोछि दैत रही, रातिमे ठंढ लगै तँ टोकरीमे पुरान कपड़ा बिछा दैत रही।’

मधुप आश्चर्यसँ चाँद दिस तकलक। ‘तखन रमापति काका लग कोना गेल?’

'हम बीमार पड़ल रही। चारा जुटेनाइ कठिन भेल। रमापति स्वयं कहलनि जे ओ राखि लेताह। हम देलियन्हि। नीकहि राखने छथि।' दुलारी काकी रमापति काका दिस देखलनि। 'ककरो दोष नहि।'

रमापति काकाक मुख नरम पड़ि गेल। 'हमरा ई सभ विस्तारसँ बुझले नहि छल। हम तऽ सोचने रही हाटसँ किनल अछि, बीचमे दलाल छल।'

दुलारी काकी हँसलि। 'किनल हो, देल हो—चाँदकेँ हिसाब थोड़े बुझाइत छैक। ओकरा बाट मोन अछि।'

एहि वाक्यपर सभ चुप भऽ गेल। घंटी फेर हलुक बाजल। एखन ओकर स्वर डरावना नहि, अपन सन लगैत छल।

विहान गोहालक गुत्थी बुझलाक बादो एक प्रश्न पुछलक—'काकी, ई घुरैत कोना अछि?'

'जखन खा लैत अछि, हम कहैत छी—जा, आब घर जो। पहिने नहि मानैत छल। फेर अपनहि चलि जाइत अछि। हम दूर धरि नहि जाइत छी। घुट्ठी दुखैत अछि।'

रमापति काका माथ झुका कऽ किछु काल सोचैत रहलाह। 'मुदा रातिमे एना निकलनाइ सुरक्षित नहि। कुकुर, गाड़ी, खड्ड—किछुओ भऽ सकैत अछि।'

'से सत्य,' नीलक बाबा कहलनि। 'रहस्य खुलि गेल, आब सुरक्षा आवश्यक।'

दुलारी काकीक आँखि कनेक उदास भेल। प्राची तुरन्त कहलक—'चाँद एतए दिनमे आबि सकैत अछि ने?'

रमापति काका ओकरा दिस देखलनि। फेर दुलारी काकीक दिस। 'किएक नहि? साँझसँ पहिने हम वा मधुप एकरा लऽ आएब। काकी जतेक काल चाहथि राखथि, फेर घुराकऽ लऽ जाएब।'

दुलारी काकी किछु नहि बजलीह। केवल चाँदक माथ सहलाबैत रहलि। हुनकर आँखिक कोर चमकि उठल।

भोरक पहिल उजियार आकाशमे फइलए लागल। घुरैत काल चारू मित्र पुरान बागक पथ पर संग-संग चलैत छल। मधुप कहलक—'तखन भूतक कथा समाप्त।'

नील हँसल—'भूत नहि, खुर छल।'

विहान जोड़लक—'आ सींग।'

प्राची कहलक—'आ स्मृति।'

ओहि दिन गोहालक फाटकमे नव कुंडी लगाओल गेल, जे भीतरसँ सींग धकेलि नहि खुलि सकए। फाटकक नीचाँक फाँक सेहो बाँससँ भरल गेल। चाँद पहिने दू-तीन बेर पुरान ढंगसँ कुंडी उठेबाक प्रयास कएलक, फेर हारि कऽ पात चबए लगल।

साँझ होएबासँ पहिने मधुप ओकर डोरी पकड़ि दुलारी काकीक कोठरी धरि लऽ गेल। काकी पहिनहिसँ पात जमा कऽ रखने छलीह। चाँद हुनका देखि दौड़ए चाहलक; घंटी जोरसँ बजल।

आब टोलाक लोक घंटी सुनि डराइत नहि छल। ककरो पूछला पर मधुप कहैत—'रहस्य छल, मुदा जादू नहि।'

किछु दिन बाद विद्यालयमे विज्ञान-शिक्षक 'अनुमान आ प्रमाण' पर गप करैत छलाह। प्राची अपन कॉपीमे लिखलक—पहिने ध्वनि चिन्हल, फेर निशान देखल, फेर कुंडी जाँचल, फेर सुरक्षित रूपसँ प्रत्यक्ष देखल। निष्कर्ष तखन बनल।

मुदा कॉपीक अन्तमे ओ एक पाँति आर जोड़लक—'सभ रहस्य केवल वस्तुक नहि होइत अछि; किछु रहस्य सम्बन्धक होइत अछि। ओकर प्रमाण आँखिसँ कम, व्यवहारसँ बेसी भेटैत अछि।'

रविदिन चारू मित्र दुलारी काकीक बरामदामे बैसल छल। चाँद लगमे पात चबा रहल छल। दुलारी काकी पुरान दिनक कथा सुना रहल छलीह—कोना ओ छोट चाँदकेँ कटोरीसँ दूध पिआबैत छलीह, कोना ओ पहिल बेर घंटी देखि डरि गेल छल, फेर दू दिनमे अपनहि घंटी बजबैत दौड़ए लागल।

मधुप घंटी हाथमे लऽ देखलक। ओकर एक कात छोट दरार छल। ताहिसँ स्वर पहिने 'टुन' फेर 'टन' होइत छल। एही स्वर सँ रहस्य आरम्भ भेल छल।

प्राची घंटी फेर चाँदक गरदनिमे बान्हि देलक। चाँद माथ झटका देलक—टुन...टन।

चारू गोटे हँसि पड़ल। दुलारी काकी सेहो हँसलीह। पुरान बागमे हवा चलल, आमक पात सरसरायल, आ घंटी फेर बजल।

एखन सभकेँ बुझल छल—घंटीमे रहस्य कम, स्मृति बेसी छल।

कथा ९

बाढ़िमे बचल पोथी

सावनक अन्तिम सप्ताह छल। तीन दिनसँ मेघ जेना गामक माथे अटकल छल। राति-दिन बरखा पड़ैत रहल, आ उत्तर दिसक नदी अपन पुरान तट छोड़ि खेत-पथार दिस पसार होमए लागल।

अष्टम वर्गक ईशान भोरमे उठि ओसारासँ बाहर तकलक। आँगनमे पानि टखना धरि पहुँचि गेल छल। बाँसक पात पानि पर तैरि रहल छल, आ गोहाल दिससँ बाछीक स्वर आबि रहल छल।

माए कहलखिन—‘बौआ, आइ विद्यालय नहि जाएब। प्रधानाध्यापकक सूचना आएल अछि—विद्यालयक भवन ऊँच ठाम अछि, ताहि कारण आवश्यकता पड़ला पर ओतए लोक सभ ठहरत।’

ईशानक मोन एकाएक गामक पुरान पोथीघर दिस गेल। विद्यालयसँ घुरैत बेर ओ आ ओकर मित्र अर्पिता, नीरज आ सोनाली प्रायः ओतए जाइत छल। भवन पुरान छल, मुदा भीतर काठक अलमारीमे ढेर पोथी, हस्तलिखित पन्ना, पुरान पत्रिका आ गामक अभिलेख राखल छल।

ओहि पोथीघरक देखरेख वृद्ध विद्याभूषण झा करैत छलाह। गामक सभ बालक हुनका ‘पोथीबाबा’ कहैत छल। ओ कहैत छलाह—‘पोथी केवल अक्षर नहि, लोकक स्मृति होइत अछि। स्मृति डूबल तऽ गाम अपन आधा परिचय बिसरि जाएत।’

ईशान माएसँ पुछलक—‘पोथीबाबाक घर दिस पानि गेल होएत?’

माए झरोखासँ बाहर तकैत बजलीह—‘ओहि टोलमे पानि बेसी अछि। तूँ एखन घरसँ नहि निकलिह। पहिने बड़ लोक सभ स्थिति देखत।’

किछु काल बाद पंचायतक घण्टा बजल। लोक सभ ऊँच चौक पर जमा भेल। नदीक पानि पुरान पोखरिक कात पार कऽ दक्षिण टोल दिस बढ़ि रहल छल। दू परिवार अपन आवश्यक वस्तु लऽ विद्यालय दिस चलि गेल छल।

ईशान ओतए अर्पिता, नीरज आ सोनालीकेँ देखलक। चारूक आँखिमे एक्के प्रश्न छल—पोथीघर?

पोथीबाबा स्वयं चौक पर पहुँचि गेलाह। कपड़ा भीजल, हाथमे बाँसक लाठी, मुखपर चिन्ता।

'हमर घरक पाछाँ धरि पानि आबि गेल अछि,' ओ कहलनि, 'पोथीघरक नीचला कोठलीमे पानि घुसि सकैत अछि। हम सभ ऊपरका ताक पर जतेक उठा सकलहुँ, उठा देलहुँ। मुदा किछु पेटार भारी अछि।'

अर्पिता तुरन्त बजली—'ओहि पेटारमे की अछि?'

पोथीबाबा उत्तर देलनि—'गामक पुरान पंजी, दू हस्तलिखित पोथी, आ बाढ़िक पुरान विवरण। सभसँ पुरान पन्ना प्रायः सए बरखसँ बेसी पुरान अछि।'

नीरजक आँखि पैघ भऽ गेल। 'बाढ़िक पुरान विवरण? ताहिमे एहन बाढ़िक गप सेहो होएत?'

'होएत,' पोथीबाबा कहलनि, 'मुदा एखन ओकरा पढ़बाक नहि, बचेबाक काल अछि।'

पंचायतक मुखिया कहलनि जे कोनो किशोर असगर ओहि टोल दिस नहि जाएत। दू नाव सज्ज कएल गेल। एक नाव लोक सभकेँ सुरक्षित ठाम पहुँचएबाक लेल, दोसर आवश्यक सामग्री आनबाक लेल।

ईशानक पिता नाव चलबैत छलाह। ओ चारू मित्रक आग्रह सुनि कहलनि—'संग चलब, मुदा नियम हमर। जे कहल जाए, वैह करब। पानि खेल नहि अछि।'

चारू गोटे सहमत भेल। रस्सी, सूखल बोरा, काठक दू पटरा आ मोट कपड़ा नावमे राखल गेल। पोथीबाबा सेहो संग बैसलाह।

नाव गल्लीक पानिमे धीरे-धीरे बढ़ल। जे बाट पर काल्हि धरि साइकिल दौड़ैत छल, ओतए एखन पानि चमकि रहल छल। बाँसक बाड़िक केवल माथ देखाइत छल। कखनो ककरो आँगनक चौकी तैरैत भेटैत, कखनो धानक पूला।

सोनाली फुसफुसा कऽ कहलि—'गाम एना देखाइत अछि जेना परिचित चित्र पर दोसर रंग चढ़ि गेल हो।'

पोथीबाबा कहलनि—'बाढ़ि गामक रूप बदलैत अछि, मुदा लोक जँ संग रहए तऽ गाम समाप्त नहि होइत।'

पोथीघर लग पहुँचला पर बुझायल जे पानि अपेक्षासँ वेगसँ चढ़ल अछि। बरामदामे घुट्ठी धरि पानि छल। भीतरक पहिल कोठलीमे काठक नीचला भाग भीजि गेल छल।

ईशानक पिता सभकेँ ठाढ़ रहबाक ठाम देखौलनि। रस्सीक एक छोर बाहरक नीममे बान्हल गेल, दोसर भीतर लऽ जाओल गेल।

पोथीबाबा कुंजी निकालि भीतरी कोठली खोललनि। भीत पर पुरान चित्र लटकल छल, ताक पर पोथी सभ कपड़ामे बान्हल। जमीनक लग एक भारी काठक पेटार छल, जकर नीचला भाग पानि छू रहल छल।

'एहीमे पंजी अछि,' पोथीबाबा कहलनि।

नीरज आ ईशान पेटार उठएबाक चेष्टा कएलक, मुदा ओ हिललो नहि। भीतर धातुक पात्र आ मोट पोथीक भार छल।

अर्पिता चारूकात देखैत कहलि—'उठाएब कठिन अछि। पटरा पर चढ़ा कऽ सरका सकैत छी।'

ईशानक पिता मुस्कुरौलनि—'एही लेल पटरा अनने छी।'

दू काठक पटरा पेटारक नीचाँ धीरे-धीरे सरकाओल गेल। रस्सी पेटारक चारूकात बान्हल गेल। बाहरसँ दू लोक खेंचलक, भीतर ईशान आ नीरज धकेलक। सोनाली आ अर्पिता भीजल पोथी अलग-अलग कपड़ामे लपेटि ऊपर रखैत गेलीह।

एक बेर पेटार अटकि गेल। पानि कनेक आर चढ़ल। ईशानक पयर फिसलल, मुदा रस्सी पकड़ने रहल। पिता तुरन्त ओकर कान्ह थामि स्थिर कएलनि।

'धीरे,' पिता कहलनि, 'पोथी बचाउ, मुदा अपन प्राणसँ पैघ कोनो पोथी नहि।'

ईशान माथ डोलौलक। सभ फेर अपन-अपन ठाम जमल। एहि बेर पेटार पटरा पर चढ़ि गेल। रस्सी तनल, आ ओ धीरे-धीरे बरामदा धरि आबि गेल।

नाव पर पेटार राखलाक बाद पोथीबाबा दीर्घ श्वास लेलनि। मुदा हुनकर दृष्टि भीतरक एक कोना पर अटकि गेल।

‘एकटा लाल कपड़ामे बान्हल पोथी रहए,’ ओ बजलाह, ‘ताकक नीचाँ।’

अर्पिता टार्चक उजियार घुमेलक। एक कोनामे पानिमे आधा डूबल लाल कपड़ा देखायल। ओ हाथ बढ़ौलक, मुदा दूरी बेसी छल।

सोनाली बाँसक लाठी आगाँ कएलक। अर्पिता लाठीक छोरसँ कपड़ा अपन दिस खेंचलक। भीतरसँ मोट, भीजल हस्तलिखित पोथी निकलल। किनारक किछु पृष्ठ भीजि चुकल छल, मुदा मध्य भाग सुरक्षित छल।

पोथीबाबाक आँखि भरि आएल। ‘ई हमर परदादाक लिखल बाढ़ि-विवरण अछि। एहि गाममे कोन बरख पानि कतए धरि पहुँचल, कोन पोखरि भरल, कोन तट टूटल—सभ लिखल अछि।’

ईशान पुछलक—‘तखन ई केवल पुरान गप नहि, आगूक लेल संकेत सेहो भऽ सकैत अछि?’

‘नीक बुझलह,’ पोथीबाबा कहलनि। ‘पुरान स्मृति कखनो-कखनो भविष्यक रक्षा करैत अछि।’

नाव विद्यालय दिस घुरल। बरखा कनेक मन्द पड़ि गेल छल। विद्यालयक बरामदामे पहिनहिसँ लोक सभ चटाइ बिछा लेने छल। एक कोठली सूखल सामग्री लेल खाली राखल गेल छल। ओतहि पोथी सभ फैलाओल गेल।

अर्पिता प्बाटव देलक जे भीजल पृष्ठ एक्के संग नहि खोलल जाए। विद्यालयक विज्ञान-शिक्षक सेहो ओतए छलाह। ओ कहलनि—‘धैर्य आवश्यक अछि। पृष्ठ अलग करैत काल फाटि सकैत अछि। पहिने स्वच्छ सूखल कपड़ासँ अतिरिक्त पानि सोखाउ, फेर हवा चलैत छायादार ठाम सुखाउ।’

चारू मित्र घंटो धरि काज करैत रहल। कोनो पृष्ठ पर वंशावलीक नाम छल, कोनो पर खेतक पुरान सीमा, कोनो पर गीत, कोनो पर बाढ़िक जल-चिह्नक वर्णन।

नीरज एक पृष्ठ पढ़ैत-पढ़ैत रुकल—‘एतए लिखल अछि जे एक पुरान बाढ़िमे पानि पीपरक मूल धरि पहुँचल छल। ओ पीपर एखन पंचायतक कात अछि ने?’

पोथीबाबा कहलनि—‘हँ। काल्हि पानि ओहि मूलसँ दू हाथ नीचाँ छल। एखन प्रायः बराबर भऽ गेल होएत।’

ईशानक पिता मुखियाकेँ ई गप सुनौलनि। पंचायतक लोक तुरन्त पीपर लग जल-स्तर देखए गेल। पुरान विवरणसँ तुलना कएल गेल। जे घर नीच ठाम छल, ओतुक्का लोककेँ विलम्ब बिनु विद्यालय दिस आनल गेल।

साँझ धरि पानि आरो बढ़ल, मुदा गामक सभ परिवार सुरक्षित ठाम पहुँचि गेल। राति विद्यालयक बरामदामे दीपक जरैत छल। बाहर पानि, भीतर लोकक धीम गप, नेनाक हँसी, बासनक खनखनाहट, आ एक कोठलीमे सूखैत पोथीक पृष्ठ।

सोनाली धीरे कहलि—‘हम सोचने रही जे हम पोथी बचा रहल छी। मुदा ई पोथी तँ हमरा सभकेँ सेहो बचा रहल अछि।’

ककरो उत्तर देबाक आवश्यकता नहि पड़ल। चारू मित्र पोथीबाबाक मुख दिस तकलक। ओ चुपचाप मुस्की दैत छलाह।

तीन दिन बाद नदी उतरए लागल। लोक अपन-अपन घर घुरल। पोथीघरक भीत पर पानिक कारी चिह्न रहि गेल, मुदा अधिकांश संग्रह बचि गेल छल।

गामक किशोर-मण्डली ठानलक जे आब पोथी सभ जमीन लग नहि राखल जाएत। पंचायतक सहायता सँ पोथीघरमे ऊँच काठक ताक बनाओल गेल। महत्त्वपूर्ण पन्नाक प्रतिलिपि बनाओल गेल, आ एक सूची बनल—कोन पोथी कतए अछि, ककर देखरेखमे अछि।

ईशान आ नीरज पोथीबाबाक पुरान बाढ़ि-विवरण पढ़ि गामक मानचित्र पर पुरान जल-चिह्न अंकित करए लगल। अर्पिता आ सोनाली वृद्ध लोकसँ पुरान बाढ़िक स्मृति सुनि लिखैत गेलीह।

विद्यालयमे ‘हमर गामक जल-स्मृति’ नामक एक छोट प्रदर्शनी लागल। ककरो चित्र मात्र नहि, वरन् वर्ष, जल-स्तर, सुरक्षित ठाम, पुरान नाला, ऊँच बाट आ लोकक अनुभव सभ लिखल गेल।

पोथीबाबा उद्घाटनक दिन कहलनि—‘अक्षरक रक्षा केवल पोथीकेँ सूखल रखब नहि अछि। जे लिखल अछि, ओकर अर्थ बुझब आ जीवनमे उपयोग करब सेहो रक्षा अछि।’

ईशान ओहि लाल कपड़ावला पोथीकेँ नव सूखल आवरणमे राखैत छल। किनारक किछु पृष्ठ पर बाढ़िक दाग रहि गेल छल।

अर्पिता कहलक—‘ई दाग हटत नहि?’

पोथीबाबा उत्तर देलनि—‘रहन दियौ। किछु दाग क्षति मात्र नहि होइत अछि; ओ स्मरण सेहो करबैत अछि।’

झरोखा बाहर नदी फेर अपन धारमे घुरि गेल छल। धूप पानिपर चमकि रहल छल। पोथीघरक नव ऊँच ताक पर पोथी सभ पाँतिमे राखल छल।

ईशान लाल पोथीक पन्ना धीरेसँ बन्द कएलक। ओकरा बुझायल—ओहि दिन बाढ़िमे एकटा पोथी मात्र नहि बचल छल। गामक पुरान स्मृति नव पीढ़ीक हाथमे आबि गेल छल।

कथा १०

नेनाक विज्ञान-मेला

फागुनक अन्तिम सप्ताह छल। विद्यालयक प्रार्थना-सभामे प्रधानाध्यापक घोषणा कएलनि जे एहि बेर वार्षिक विज्ञान-मेला केवल देखौनी लेल नहि होयत। प्रत्येक दल अपन आसपासक कोनो वास्तविक अड़चन चुनत आ ओकर सरल उपाय सोचत।

अष्टम वर्गक माधवक आँखि चमकि उठल। ओकरा यन्त्र खोलि फेर जोड़बाक बड्ड सोख छल। मीनाक्षी चित्र बनबैत आ नाप-जोखमे निपुण छली। अरिन्दम प्रश्न पर प्रश्न पुछैत, आ सलोनीक विशेषता छल—जे गप सभकेँ कठिन बुझाइ, ओकरा सहज ढंगसँ बुझा देब।

चारू मित्र विद्यालयक पछिला आमक गाछ तर बैसल। माधव कहल—‘पहिने अड़चन चुनू। बिनु अड़चनक विज्ञान केवल खेलौना बनि जाएत।’

मीनाक्षी गामक तीन गोट समस्या गिनेलक—बरखा काल पोखरिक मटमैला पानि, साँझमे बेर-बेर विद्युत् कटौती, आ विद्यालयक पिछला बाटपर अन्हार।

अरिन्दम तुरन्त बाजल—‘एक्के प्रयोगमे तीनू गप समेटल जा सकैत अछि?’

सलोनी हँसली—‘एक्के बेर चन्द्रमा, सूरुज आ बिजुरी पकड़बाक लोभ नहि करू। पहिने एकटा काज नीक जकाँ करू।’

तखने विद्यालयक सेवक रामलोचन काका खाली पानि-बोतल सभ उठबैत ओतए सँ गेलाह। मीनाक्षीक दृष्टि बोतल पर पड़ल। ओ कहलक—‘ई सभ फेकि देल जाएत?’

रामलोचन काका कहलनि—‘हँ, जतेक जमा होइत अछि, बादमे पुरान वस्तु किननिहार लऽ जाइत अछि।’

माधव बोतल हाथमे लऽ कऽ घुमेलक। ‘जँ एकटा पारदर्शी बोतलमे कंकड़, बालू, कोइला आ कपड़ा राखी, तऽ मटमैला पानिक मैल किछु कम कएल जा सकैत अछि। मुदा पीबाक योग्य बनेबाक गप अलग अछि।’

अरिन्दम तुरन्त पुछलक—‘तखन लोक जँ छानल पानि देखि सोझे पीबए लागल तऽ?’

मीनाक्षी गम्भीर भेलि। 'ताहि लेल हम स्पष्ट कहब जे ई केवल पहिल छानन अछि। रोगाणु हटेबाक लेल उबालब वा सुरक्षित विधि आवश्यक अछि।'

चारू मित्र निश्चय कएलक—ओ सभ "स्वच्छ पानिक पहिल पग" नामक छानन-प्रयोग बनाओत, आ संगहि पैडल घुमा कऽ छोट दीप जराएबला एकटा यन्त्र सेहो देखाओत। दुनू प्रयोगक मूल भाव रहत—गाममे उपलब्ध वस्तुसँ विज्ञान बुझब।

अगिला दिन पुरान साइकिलक एक चक्का विद्यालय अनल गेल। माधवक बाबू पुरान डायनमो देने रहथि। विज्ञान-शिक्षक सत्यनारायण गुरुजी तार, छोट दीप, स्विच आ मापक यन्त्र देलनि।

गुरुजी पहिनहि सावधान कएलनि—'बिजुरी संग खेल नहि। एतए मात्र नीच दाबक सुरक्षित परिपथ रहत। मुख्य विद्युत्-रेखासँ ककरो कोनो जोड़ नहि होयत।'

माधव पैडल घुमौलक। चक्का तेज भेल, मुदा दीप नहि जरल।

अरिन्दम हँसि देलक—'हमर पहिल आविष्कार अन्हार बढ़ेबाक भेल!'

सलोनी कहलक—'हँसू नहि, पहिने कारण ताकू।'

मीनाक्षी तारक जोड़ देखलक। एक छोर ढीला छल। ओ कसि देलक। फेर पैडल घुमल। एहि बेर दीप क्षीण उजियार देलक।

चारू गोटे एक्के बेर 'अरे!' कहि उठल।

माधव पैडल बेसी तेज घुमेलक तऽ दीपक उजियार बढ़ि गेल। सत्यनारायण गुरुजी कहलनि—'एखन बुझू—यान्त्रिक गति विद्युत् ऊर्जामे बदलि रहल अछि। मुदा छोट यन्त्रक सीमा अछि। जतेक भार जोड़ब, ततेक पैडल घुमेबामे परिश्रम बढ़त।'

मीनाक्षी नाप लिखैत गेलि—धीम गति, मध्यम गति, तेज गति; आ तदनुसार मापक यन्त्रक सूचक। अनुमान नहि, प्रत्यक्ष नाप।

दोसर काज छल पानि-छानन। खाली बोतलक तल्ला काटि उलटा राखल गेल। सबसँ नीचाँ स्वच्छ कपड़ा, तकर ऊपर कुटल कोइला, फेर महीन बालू, तकर ऊपर मोट बालू आ कंकड़।

गामक पोखरिसँ अनल मटमैला पानि ऊपर सँ धीरे-धीरे देल गेल। नीचाँ रखल पात्रमे पानि पहिल बेरो किछु धुम्मस छल।

अरिन्दमक मुख उतरि गेल। ‘ई तँ चित्रमे देखल जेकाँ निर्मल नहि भेल।’

सत्यनारायण गुरुजी मुस्की देलनि। ‘ताहिए विज्ञान अछि। चित्रक आदेश मानि प्रकृति नहि चलैत। अपन सामग्री, ओकर मोटाइ, पानिक मैल—सभ परिणाम बदलैत अछि। फेर जाँचू।’

मीनाक्षी बालूक परत मोट कएलक। माधव पानिक बहाव धीम कएलक। सलोनी पहिल बेरक पानि अलग राखलक, दोसर बेर फेर छानलक। एहि बेर पानि स्पष्टतर देखायल।

सलोनी कागज पर पैघ अक्षरमे चेतावनी लिखबाक प्बाटव देलक जे छानल पानि देखबामे निर्मल भेलो पर बिनु सुरक्षित शोधन पीब योग्य मानब उचित नहि।

अरिन्दम कहलक—‘मेला देखए आबयवला नेना पहिने चमकैत वस्तु दिस दौड़त। हम चेतावनी बजाकए सेहो कहब।’

काजक बीच एक नव अड़चन आयल। पैडलवला यन्त्रक पट्टा बारम्बार उतरि जाइत छल। माधव तमसा गेल। ‘एतेक बेर जोड़लहुँ, फेर छुटि गेल!’

मीनाक्षी ओकरा चुपचाप एकटा खड़िया देलक। ‘पहिने चक्काक रेखा खेंच। पट्टा कतए सँ उतरैत अछि, से देख।’

भूमिपर चक्काक गोल रेखा बनल। बुझायल जे डायनमो कनेक टेढ़ लागल छल। सीध कएलाक बाद पट्टा नहि उतरल।

माधव कहलक—‘कखनो-कखनो बलसँ नहि, सीध देखलासँ काज बनैत अछि।’

सलोनी तुरन्त उत्तर देलक—‘ई वाक्य मेला बाहर जीवनमे सेहो चलत।’

मेला सँ एक दिन पहिने चारू मित्र अपन देखौनी विद्यालयक छोट नेना सभक सोझाँ परखलक। तेसर वर्गक गौरी पुछलक—‘जँ पैडल बन्द, तऽ दीप किएक बन्द?’

माधव उत्तर देलक—‘कारण एहि यन्त्रमे ऊर्जा जमा करबाक अलग साधन नहि अछि। जतेक काल घुमाओत, ततेक काल विद्युत् बनेत।’

गौरी फेर पुछलक—‘तखन हम दौड़ि कऽ घरक सभ दीप जरा सकैत छी?’

सभ हँसि पड़ल। सत्यनारायण गुरुजी कहलनि—‘प्रश्न नीक अछि। छोट दीप लेल थोड़ ऊर्जा पर्याप्त, मुदा पूरा घर लेल बड्ड बेसी ऊर्जा चाही। विज्ञान प्रश्नक आकारो नापैत अछि।’

मेला दिन विद्यालयक मैदान बदलि गेल। कतहु बीज अंकुरणक देखौनी, कतहु वर्षा-मापन, कतहु सूरुजक तापसँ पानि गरम करबाक नमूना। रंगीन कागजक सज्जा छल, मुदा सत्यनारायण गुरुजी सभकेँ स्मरण करौलनि—‘सज्जासँ बेसी प्रयोग बजत।’

माधव सभक मेज पर पहिने पानि-छानन राखल गेल। एक पात्रमे मटमैला पानि, दोसरमे छानल पानि। पाछाँ साइकिल-पैडल यन्त्र।

पहिल दर्शक छलाह गामक दुलारी आजी। ओ पानि देखि पुछलनि—‘ई निर्मल भेल, तऽ पी सकैत छी?’

सलोनी तुरन्त कहल—‘नहि आजी। ई केवल मैल घटेबाक पहिल पग अछि। रोगाणु आँखिसँ नहि देखाइत। पीबाक पानि सुरक्षित रीति सँ शुद्ध करब आवश्यक अछि।’

आजी प्रसन्न भऽ कहलनि—‘नीक। जे विज्ञान सावधानी सिखाबए, सएह उपयोगी।’

तकर बाद किछु किशोर पैडल घुमेबाक लेल पाँति लगा देलक। एक गोट धीरे घुमेलक—दीप धुँधला। दोसर तेज घुमेलक—उजियार तेज। मीनाक्षी मापक यन्त्रक सूचक देखबैत बुझेलक जे गति बदलला पर उत्पादन बदलैत अछि।

अरिन्दम दर्शकसभकेँ प्रश्न करैत छल—‘जँ पैडल भारी लगए, तऽ कारण की होयत? जँ तार ढीला, तऽ की बदलत? जँ पानिक बहाव बड्ड तेज, तऽ छानन पर की असर पड़त?’

लोक केवल उत्तर सुनि नहि रहल छल; सोचि रहल छल। एहि गपसँ चारू मित्रकेँ सबसँ बेसी आनन्द भेल।

दुपहरमे निर्णायक-मण्डली आयल। एक सदस्य पुछलनि—‘अहाँ सभक प्रयोगमे नवता कतए अछि? साइकिल-डायनमो आ पानि-छानन पहिनहिसँ ज्ञात अछि।’

क्षण भरि चारू चुप। फेर माधव कहल—‘हमरा सभक उद्देश्य नब वस्तु खोजब मात्र नहि छल। ज्ञात सिद्धान्तकेँ अपन गामक नेना सभ लेल हाथसँ छू सकएबला रूपमे आनब छल।’

मीनाक्षी जोड़लक—‘हम नाप लिखलहुँ, असफल प्रयासो राखलहुँ। पहिल बेर पानि निर्मल नहि भेल, पट्टा उतरैत रहल। ओ सभ त्रुटि नहि लुकौलहुँ।’

सलोनी कहलक—‘आ हम स्पष्ट कएलहुँ जे छानल पानि सदिखन पीब योग्य नहि। अधूर ज्ञान कखनो उपयोगी देखाइत-देखाइत हानिकारक भऽ सकैत अछि।’

निर्णायक मण्डलीक वृद्ध वैज्ञानिक मुस्की देलनि। ‘ठीक। विज्ञानक एक गुण ईहो अछि—जे नहि बुझल, से नहि बुझल कहबाक साहस।’

साँझमे पुरस्कार घोषणा भेल। चारू मित्रक दल पहिल स्थान पर नहि आयल। पहिल स्थान वर्षा-जल संचयनक एक सुन्दर, नापसहित प्रयोगकेँ भेटल।

अरिन्दमक मुख कनेक उतरि गेल। मुदा तखने प्रधानाध्यापक हुनका सभक नाम पुकारलनि—‘विशेष सम्मान: सर्वश्रेष्ठ जन-बुझान प्रयोग।’

चारू मंच पर गेल। छोट प्रमाण-पत्र आ विज्ञान-पोथीक एक संच भेटल। मुदा मंचसँ उतरैत काल गौरी दौड़ि कऽ आयल आ कहलक—‘हम घर जा कऽ बाबूसँ पुरान साइकिलक डायनमो माँगब। पहिने सरसँ पुछि सुरक्षित ढंगसँ बनायब।’

माधव एक-दोसर दिस तकलक। ओकरा बुझायल—ई पुरस्कार कागजसँ पैघ अछि।

अगिला सप्ताह विद्यालयमे “हाथसँ विज्ञान” नामक छोट साप्ताहिक बैसार आरम्भ भेल। नियम छल—ककरो महँगा वस्तु आनबाक आवश्यकता नहि। घर-गाममे उपलब्ध साधारण वस्तुसँ प्रश्न उठाउ, नाप लिअ, जाँचू, फेर निष्कर्ष लिखू।

मीनाक्षी पहिल बैसारमे दू गिलास पानि आ कागज लऽ आयलि। अरिन्दम छाया नापबाक डण्डा। सलोनी बीजक अंकुरण लिखबाक पन्ना। माधव पुरान चक्काक धुरी।

सत्यनारायण गुरुजी दुआरि पर ठाढ़ छलाह। ओ कहलनि—‘विज्ञान-मेला एक दिनक होइत अछि। वैज्ञानिक दृष्टि जँ टिकि गेल, तऽ मेला सफल।’

बाहर आमक नव पात पर साँझक उजियार पड़ि रहल छल। भीतर चारू मित्र फेर एकटा प्रश्न पर झुकल छल।

एहि बेर हुनका सभकेँ पुरस्कारक चिन्ता नहि छल। प्रश्न स्वयं आमन्त्रण छल।

❦

कथा ११

आमक गाछक निर्णय

गामक बीचोबीच, पुरान पोखरिक पूब कात, एकटा विशाल आमक गाछ छल। ओकर मूल एतेक पसारल जे बरखा काल माटि धऽ कऽ राखए, आ डारि एतेक घनगर जे जेठक दुपहरियो ओहि तर बैसल लोककेँ शीतलता भेटए। गामक लोक ओकरा ‘बड़ आम’ कहैत छल।

कियो निश्चित नहि छल जे गाछ कतेक पुरान अछि। दुलारी आजी कहथि—‘हमर विवाहक दिनो ई गाछ एतेक पैघ छल जे बारातीक आधा दल एकर छाहरिमे बैसल रहए।’

अष्टम वर्गक सुगन्धा, अनूप, शशांक आ ईशानी प्रतिदिन विद्यालय जाइत काल ओहि गाछक लगसँ गुजरैत छल। गर्मीमे गाछक नीचाँ आमक छोट-छोट टिकुला देखब, बरखामे पातपर थोपक धुन सुनब आ शरदमे ओहि ठाम बैसि गृहकार्य करब—ई सभ हुनका सभक दिनचर्याक अंश छल।

एक भोर विद्यालयक दुआरि पर एक सूचना टाँगल भेटल—गामक मुख्य पथ चौड़ा कएल जाएत। नव पथक रेखा पुरान पोखरिक कातसँ निकलत आ आमक गाछक ठामसँ गुजरत।

शशांक सूचना पढ़ि चुप भऽ गेल। अनूप पहिने बाजल—‘तकर अर्थ गाछ काटल जाएत?’

ईशानीक मुख उतरि गेल। ‘पथ चौड़ा होयब नीक अछि, मुदा गाछ काटिए कऽ किएक?’

सुगन्धा कहल—‘पहिने बुझू जे योजना की अछि। केवल दुखी भेलासँ गाछ नहि बचत।’

चारू गोटे विद्यालयक प्रधानाध्यापक नचिकेता झासँ भेँट कएलक। ओ सूचना ध्यानसँ पढ़लनि आ कहलनि—‘ई गामसभाक आरम्भिक योजना अछि। एखन सुझाव देबाक अवसर अछि। जँ अहाँ सभ ठोस कारण आ विकल्प दऽ सकैत छी, तऽ गामसभा सुनत।’

‘ठोस कारण?’ अनूप पुछलक।

‘हँ। गाछ केवल प्रिय अछि—ई एक कारण। मुदा पथक दिशा बदलबाक लेल माप, उपयोग, पर्यावरण आ सुरक्षा सभपर सोचू।’

एहि वाक्ये चारू मित्रक काज बदलि देलक। आब गाछ बचेनाइ केवल भावुक आग्रह नहि रहल; ई अध्ययन बनि गेल।

पहिल दिन ओ सभ गाछक घेरा नापलक। शशांक रस्सी आ फीता अनलक। गाछक तना, डारिक पसार, पथसँ दूरी, पोखरिक कातसँ दूरी—सभ लिखल गेल।

ईशानी पंछीक सूची बनेलक। भोरमे दू घंटा बैसि ओ सभ मैना, गौरैया, कठफोड़वा, कोइली, बुलबुल आ हरिअर सुग्गा देखलक। गाछक एक खोखरिमे गिलहरीक बसेरा सेहो छल।

अनूपक रुचि माटि आ पानिमे छल। ओ विज्ञान-शिक्षक सत्यनारायण गुरुजीक सहायता लेल। गुरुजी गाछक मूल लगक माटि आ किछु दूरक खुला माटिक तुलना देखेलनि।

‘देखू,’ गुरुजी कहलनि, ‘गाछक मूल वर्षाक पानि तुरन्त बहि जाएब रोकैत अछि। पातक झड़ल तह माटिक ऊपर एकटा आवरण बनबैत अछि। मुदा एतेक कहि देब पर्याप्त नहि। बरखामे जलप्रवाह कतए जाइत अछि, से देखू।’

ओहि सप्ताह वर्षा भेल। चारू मित्र छाता लऽ कऽ निकलल। गाछक नीचाँसँ पानि धीरे-धीरे पोखरि दिस सरकि रहल छल, मुदा जेतए माटि खुला छल ओतए छोट-छोट धार बनि कऽ माटि काटि रहल छल।

सुगन्धा चित्र बनौलक—पानि कतए सँ आबि रहल, कतए ठहरैत, कतए माटि काटैत।

दोसर अध्ययन गाछक सामाजिक उपयोगक छल। रवि दिन ओतए छोट हाट लगैत छल। दही, तरकारी, फल, बांसक वस्तु, माटिक बरतन—सभक छोट दोकान गाछक छाहरिमे पसैर जाइत।

ईशानी हाटमे बैसल लोकसँ पुछलक—‘जँ ई गाछ नहि रहत, अहाँ सभ कतए बैसब?’

एक वृद्ध कुम्हार हँसि कहलनि—‘पहिने तऽ हम दोकान खोलबासँ पूर्व छाहरि किनब!’

सभ हँसल, मुदा वाक्यक भीतरक गम्भीरता चारू मित्र बुझि गेल। खुला दुपहरमे ओहि ठाम बैसनाइ कठिन होइत।

सुगन्धा हिसाब लगेलक जे सप्ताहमे कतेक गोटे गाछक छाहरिक उपयोग करैत अछि। अनूप पुछलक जे गर्मीमे ओतुक्का ताप खुला पथक तुलनामे कतेक फरक अछि। गुरुजी दू साधारण तापमापक दऽ देलनि।

जेठक दुपहर एकटा तापमापक गाछक छाहरिमे, दोसर पथक खुला कातमे राखल गेल। किछु काल बाद दुनू तापमान लिखल गेल। अन्तर स्पष्ट छल।

शशांक उत्साहित भऽ कहल—‘आब हमरा सभक लग संख्या अछि, केवल अनुभव नहि।’

मुदा समस्या एतए समाप्त नहि भेल। पथ चौड़ा कएल जाएबो आवश्यक छल। विद्यालयक गाड़ी, रोगी लऽ जाएबला वाहन, कृषि-यन्त्र—सभकेँ साँघुर पथमे कठिनता होइत छल।

‘जँ हम केवल कहब जे गाछ नहि काटू, तऽ दोसर लोक कहत जे पथक अड़चनक उत्तर दिअ,’ सुगन्धा कहल।

चारू मित्र पुरान राजस्व-मानचित्रक नकल पंचायत भवनसँ देखलक। पोखरिक पाछाँ एकटा खाली सार्वजनिक पट्टी छल, मुदा ओतए पथ कनेक मोड़ लेत।

अनूप पुछलक—‘मोड़ बढ़ला सँ वाहनक असुविधा होयत?’

शशांक कागजपर दू रेखा खेंचलक। ‘सोझ पथ छोट अछि, मुदा गाछ कटत। मोड़वला पथ किछु नमगर, मुदा पोखरिक बाँधक एक भाग सेहो सुदृढ़ कएल जा सकैत अछि।’

ईशानी तुरन्त जोड़लक—‘आ मोड़पर गति अपने घटत। विद्यालय लग तेज वाहनक गति घटेनाइ लाभकारी होयत।’

मुदा अनुमान पर्याप्त नहि छल। प्रधानाध्यापक कहने रहथि—‘तथ्य।’ तेँ चारू गोटे पथक दुनू सम्भावित दिशा नापलक। कदम गनि नहि; मापक फीता, रस्सी आ बादमे पंचायतक सर्वेक्षकक सहायता लेल गेल।

सर्वेक्षक रवीन्द्र मंडल पहिने मुस्की देलनि—‘अहाँ सभ पथ बनायब?’

सुगन्धा उत्तर देलक—'नहि काका, मुदा पथ बनैत काल गाछ बचि सकए तकर उपाय बुझब चाहैत छी।'

रवीन्द्र काका गंभीर भऽ गेलाह। ओ माप देखलनि, ढलान देखलनि, पोखरिक कात देखलनि। अन्तमे कहलनि—'अहाँ सभक मोड़वला रेखा असम्भव नहि। मुदा जलनिकासक नालीक ठाम बदलए पड़त।'

'से लिखि दिअ,' शशांक उत्साहसँ कहल।

रवीन्द्र काका हँसलाह। 'हम लिखि देब जे तकनीकी जाँच योग्य अछि। अन्तिम निर्णय अभियन्ता करताह।'

एहि बीच गाममे मतभेद बढ़ि रहल छल। किछु लोक कहैत छल—'एकटा गाछ लेल विकास रोकब उचित नहि।' किछु कहैत—'गाछ कटत तँ गामक चिन्ह मेटत।'

अनूपक बाबू सेहो पहिने गाछ बचेबाक पक्षमे नहि छलाह। ओ कहलनि—'कखनो-कखनो पुरान वस्तु छोड़ए पड़ैत अछि। पथ लोकक आवश्यकता अछि।'

अनूप उत्तर नहि देलक। रातिमे अपन कागज देखैत रहल। अगिला भोर बाबूसँ कहल—'हम पथ रोकए नहि चाहैत छी। हम एहन पथ चाहैत छी जाहिमे गाछो बचए।'

बाबू कागज हाथमे लेलनि। तापमानक नाप, पानिक बहाव, वैकल्पिक दिशा, हाटक उपयोग—सभ देखलनि। किछु काल बाद कहलनि—'तँ गामसभामे ई सभ फरिछा कऽ कहिह।'

गामसभाक दिन पंचायत प्रांगण भरल छल। चारू मित्रकेँ पाँच मिनट देल गेल।

सुगन्धा पहिने कहल—'हमरा सभक आग्रह पथ नहि रोकब अछि। हमरा सभक प्बाटव अछि—पथ कनेक मोड़ि आमक गाछ बचाओल जाए।'

ईशानी पंछी आ छाहरिक उपयोगक विवरण देलक। अनूप वर्षाजल आ माटिक कटावक चित्र देखेलक। शशांक दू पथक माप आ दूरीक तुलना रखलक।

एक लोक पुछलनि—'मोड़ बनत तँ लागत बढ़त।'

शशांक उत्तर देलक—‘किछु बढ़ि सकैत अछि। तेँ अभियन्ताक आकलन आवश्यक अछि। मुदा गाछ काटलाक बाद छाहरि, माटि-संरक्षण आ सार्वजनिक ठामक जे मूल्य घटत, से सेहो गणनामे अबाक चाही।’

दोसर लोक पुछलनि—‘गाछ बूढ़ अछि। आँधीमे खसि गेल तँ?’

एहि प्रश्नक उत्तर चारू मित्रक लग नहि छल। ओ सभ चुप रहल।

सुगन्धा कहल—‘ई हमरा सभ नहि जाँचि सकलहुँ। वृक्ष-विशेषज्ञसँ स्वास्थ्य-जाँच कराओल जाए।’

प्रधानाध्यापकक मुखपर हलुक मुस्की आयल। बिनु बुझने उत्तर बना देबाक बदला ‘नहि बुझल’ कहनाइ हुनका नीक लगल।

गामसभा निर्णय कएलक जे पथक अन्तिम रेखा निर्धारित होयबासँ पहिने अभियन्ता आ वन-विभागक कर्मचारी दुनू ठाम देखताह।

दू सप्ताह बाद जाँच भेल। गाछक मुख्य तना स्वस्थ छल, मुदा दू सूखल डारि काटबाक आवश्यकता कहल गेल। मूलक चारूकात भारी खोदाइ नहि करबाक सलाह देल गेल।

अभियन्ता मोड़वला पथक रेखा देखलनि। किछु परिवर्तन कऽ ओ एहन दिशा बनौलनि जाहिमे गाछसँ सुरक्षित दूरी रहए, पोखरिक नाली व्यवस्थित होए, आ विद्यालय लग पथक मोड़ वाहनक गति घटाबए।

अन्तिम स्वीकृति भेटलाक दिन चारू मित्र गाछ तर बैसल छल। कोनो विजयोत्सव नहि। ओ सभ केवल ऊपर पातक बीच सँ उतरैत उजियार देखैत रहल।

अनूप कहल—‘हम सोचने रही गाछ बचेनाइ भावनासँ होयत।’

सुगन्धा मुस्की देलक—‘भावना आरम्भ करबैत अछि। समाधान लेल माप, प्रश्न आ विकल्प चाही।’

किछु मास बाद पथ बनि गेल। गाछक चारूकात माटिक खुला घेरा छोड़ल गेल, जेना पानि मूल धरि पहुँचि सकए। सूखल डारि सुरक्षित रीति सँ हटाओल गेल। हाटक दोकान सभ फेर ओही छाहरिमे सजल।

अगिला आमक ऋतुमे गाछ बड्ड फलल। पंचायत निश्चय कएलक जे किछु आम विद्यालयक मध्याह्न भोजनक नेना सभ लेल देल जाए, किछु हाटमे बाँटल जाए, आ किछु बीजसँ नव बिरबा उगाओल जाए।

चारू मित्र विद्यालयक पाछाँ चारि आमक बिरबा रोपलक। ईशानी पुछलक—‘ई सभ कखन बड़ आम जकाँ होयत?’

सत्यनारायण गुरुजी कहलनि—‘अहाँ सभक उम्रमे सम्भवतः नहि।’

सुगन्धा तुरन्त टोकलक—‘गुरुजी, सम्भवतः नहि—सम्भवतः नहि।’

सभ हँसि पड़ल। गुरुजी सेहो। ‘ठीक। सम्भवतः नहि। मुदा भविष्यक लोक जखन एकर छाहरिमे बैसत, हुनका सभकेँ आइुक—’ ओ रुकि गेलाह।

अनूप हँसैत कहल—‘आइक।’

गुरुजी माथ हिला कऽ कहलनि—‘हँ, आइक निर्णयक फल भेटत।’

चारू नव बिरबाक पात हवा मे काँपि रहल छल। पाछाँ पुरान आमक गाछ स्थिर ठाढ़ छल—जेना ओ स्वयं अपन उत्तर नहि, अपन अगिला प्रश्न चारू दिशि पसारि रहल हो।

कथा १२

मोबाइल बिनु एक दिन

सोमदिन भोरमे नवम वर्गक कक्षामे प्रवेश करिते सभकेँ एकटा नव दृश्य देखाइ पड़ल। शिक्षक अनिरुद्ध गुरुजी मेजपर काठक एकटा चौकोर पेटी राखने छलाह। पेटीक भीतर बारहटा छोट खाँच छल।

मयंक हँसि पुछलक—'सर, ई कोन प्रयोग अछि? विज्ञान-मेलाक किछु काज एखनहुँ बाँकी अछि की?'

अनिरुद्ध गुरुजी मुस्की देलनि। 'प्रयोग अवश्य अछि, मुदा यन्त्रक नहि—अपन आदतक।'

सभ विद्यार्थी एक-दोसराक मुख तकए लागल। गुरुजी कहलनि—'अगिला रविदिन जे इच्छुक हो, ओ भोरसँ साँझ धरि मोबाइलक उपयोग नहि करत। आकस्मिक आवश्यकता छोड़ि न सन्देश, न खेल, न चलचित्र, न निरुद्देश्य पटल ताकब। रातिमे सभ अपन अनुभव लिखत।'

ईशान तुरन्त बजल—'ई तँ सहज अछि।'

ललिता ओकरा दिस देखि मुस्की देलक—'सहज? काल्हि विद्यालयक बाटमे तीन बेर ठमकि मोबाइल देखैत छलह।'

ईशान कने सकुचायल। 'हम समय देखैत रही।'

'तीन बेर तीन अलग समय?' मयंक बजल, आ कक्षामे हँसी उठल।

अनिरुद्ध गुरुजी हाथ उठा कऽ सभकेँ शान्त कएलनि। 'ई मोबाइल-विरोधी अभ्यास नहि अछि। मोबाइल उपयोगी साधन अछि। प्रश्न एतबा—साधन हमरा हाथमे अछि कि हमर ध्यान ओकर हाथमे?'

रविदिन लेल पाँच मित्र—ईशान, ललिता, मयंक, सुजाता आ नील—एक संग प्रयोग करबाक निश्चय कएलक। घरक लोककेँ पहिनहिये कहि देल गेल जे आवश्यक गप भए तऽ घरक फोन वा सोझे भेँटसँ कहल जाए।

रविदिन भोर ईशान उठिते तकियाक बगलमे हाथ बढ़ेलक। मोबाइल नहि छल। पिछली रातिए ओ ओकरा काठक पेटीमे राखि बैसार-घरक ऊपरी आलमारीपर रखवा देने छल। खाली हाथ घुरल तऽ ओकरा अपनहि पर हँसी आएल।

प्रायः ओ उठिते मौसम, सन्देश, छोट चलचित्र आ खेलक सूचना देखैत। आइ ओ झरोखा खोललक। तुलसीक पातपर ओस चमकि रहल छल। गाछपर दहियार गाबि रहल छल। ओकरा मोन पड़ल—एहन स्वर रोज होइत होयत, मुदा ओ कतबा दिन सुनने अछि?

माए चाह देबैत कहलखिन—'आइ तऽ हमरा दू बेर कहए नहि पड़ल, तूँ अपने टेबुलपर आबि गेलह।'

ईशान हँसि बजल—'मोबाइल नहि अछि ने।'

माए सेहो हँसलीह—'मोबाइल नहि, कि बहाना नहि?'

जलखैक बाद ईशान पोथी खोललक। दस मिनटमे फेर हाथ जेब दिस गेल। तुरन्त मोन पड़ल—जेब खाली। ओ कॉपीक कोरामे एकटा छोट रेखा खेंचलक। निश्चय कएलक जे जतेक बेर मोबाइल देखबाक इच्छा उठत, एक रेखा बनाओत।

दुपहरिया धरि सतरह रेखा भऽ गेल। ई देखि ओ चकित भेल। मोबाइल हाथमे नहि रहितो ओकर स्मृति बेर-बेर ध्यान खेंचि रहल छल। अनिरुद्ध गुरुजीक प्रश्न फेर मोन पड़ल—'ध्यान ककर हाथमे?'

ओतए ललिताक घरमे दोसर अनुभव बनि रहल छल। ललिता भोजन बनबैत माएक संग बैसलि। प्रायः एहि समय ओ कानमे यन्त्र लगा गीत सुनैत रहैत। आइ माए पुरान विवाह-गीत गुनगुनाबए लगलीह। ललिताकेँ आधा पाँति बुझायल, आधा नहि।

'ई गीत अहाँ कतए सीखलहुँ?' ओ पुछलक।

माए कहलखिन—'अपन मायसँ। तोहर नानि गाबैत छलीह।'

ललिता तुरन्त मोबाइलमे ध्वनि बाँधि रखबाक विचार कएलक, फेर हँसि पड़लि—आइ मोबाइल नहि। ओ कॉपी अनलक आ गीतक पाँति लिखए लागलि। माए बीच-बीचमे शब्दक अर्थ बुझबैत गेलीह।

मयंकक लेल दिन कनेक कठिन छल। मित्रसभ खेलक मैदानमे पहुँचबाक समय प्रायः सन्देशसँ तय करैत। मोबाइल नहि छल, तेँ ओ अनुमानसँ चारि बजे मैदान पहुँचल। कियो नहि। पाँच मिनट, दस मिनट, पन्द्रह मिनट। ओकरा कनेक खिन्नता भेल।

तखने नील साइकिलसँ आएल। 'हम सोचलहुँ तूँ चारिए बजे आयबह।'

'आ आन सभ?'

'सुजाता कहने छलि चारि पन्द्रह। ललिता चारि बीस। सभक घड़ी एक नहि।'

दुनू हँसि पड़ल। ओहि प्रतीक्षामे ओ सभ मैदानक कोरामे पड़ल सूखल बाँससँ छोट विकेट बनौलक। आन सभ पहुँचल तऽ खेल तुरन्त आरम्भ भऽ गेल।

खेलक बीच सुजाता सहसा ठमकलि। 'देखह, पश्चिममे मेघक रंग।'

सभ ऊपर तकलक। सूरुज ढलबाक बेला मेघक किनार ताम्र सन चमकि रहल छल। मयंक कहल—'एहि समय हम प्रायः चित्र खेंचैत रही।'

ललिता पुछलक—'आ चित्र खेंचलाक बाद?'

'लोककेँ पठबैत रही।'

'आ अपने कतेक काल देखैत रही?'

मयंक किछु क्षण चुप रहल। 'प्रायः एक-दू क्षण।'

सुजाता कहलि—'तखन आइ पाँच मिनट देखी।'

पाँचू चुपचाप मेघ देखैत रहल। कोनो चित्र नहि खेंचल गेल। मुदा ओ रंग सभक मोनमे अलग-अलग रूपेँ बसि गेल।

घर घुरैत काल बाटमे ईशानक साइकिलक जंजीर उतरि गेल। आन दिन रहितए तँ ओ पहिने मोबाइल निकालि ककरो फोन करित। आइ ओ साइकिल उलटि जंजीर देखलक। हाथ कारी भेल। दू बेर प्रयास विफल। तेसर बेर चक्का कनेक घुमा कऽ जंजीर चढ़ि गेल।

‘ई काज हम अपने कऽ सकैत छी!’ ओकर मुँहसँ अनायास निकलल।

राति आठ बजे पाँचू मित्र विद्यालय लग छोट चौकमे भेँट कएलक। सभ अपन-अपन कागज अनने छल। ईशान सतरह रेखा देखौलक। नील कहल—‘हम गिनने नहि रही, मुदा भोरमे हाथ तीन बेर खाली जेबमे गेल।’

ललिता अपन कॉपी खोललक। ओहिमे नानिसँ आएल पुरान गीतक पाँति लिखल छल। ‘मोबाइल रहितए तऽ ध्वनि बाँधि लैतहुँ, मुदा लिखैत काल माएसँ शब्दक अर्थो पुछलहुँ। से गप प्रायः नहि—’ ओ अपने रुकलि, फेर कहलि—‘से गप मोबाइल रहितए प्रायः नहि होइत।’

मयंक धीरे बजल—‘मोबाइल समय बचबैत सेहो अछि। खेलक समय पुछब सहज रहित। मुदा प्रतीक्षा करैत हम नील संग विकेट बना लेलहुँ। प्रत्येक असुविधा हानि नहि होइत।’

सुजाता जोड़लक—‘आपतक समय मोबाइल आवश्यक भऽ सकैत अछि। तेँ अभ्यासक नियममे आकस्मिक आवश्यकता छोड़ल नीक छल।’

पाँचूक मति मिलल। गप मोबाइल छोड़बाक नहि, उपयोगक रीति बुझबाक छल।

सोमदिन कक्षामे अनिरुद्ध गुरुजी सभक अनुभव सुनलनि। ककरो दिन सहज गेल, ककरो कठिन। एक छात्र कहल जे घरक काजमे समय देबाक अवसर भेटल। दोसर कहल जे बिनु मोबाइल बसक समय जानब कठिन भेल। तेसर छात्रा एकटा अधपढ़ पोथी पूरा पढ़ि सकलीह।

गुरुजी पट्टपर दू शब्द लिखलनि—‘सुविधा’ आ ‘अपन अधिकार’। कहलनि—‘सुविधा चाही, मुदा अपन समयपर अपन अधिकार सेहो चाही। मोबाइल बन्द करनाइ समाधान नहि; कखन खोलब, किएक खोलब, कतेक काल खोलब—ई निर्णय अपन हो।’

कक्षा मिलि पाँच छोट नियम सोचलक—भोजनक समय मोबाइल दूर; पढ़ाइ आरम्भ करबाक पहिने अनावश्यक सूचना बन्न; राति सुतबाक आधा घण्टा पहिने पटल छोड़ि देब; घरक गपक बीच मोबाइल नहि देखब; सप्ताहमे एक दिन कम-सँ-कम दू घण्टा बिनु मोबाइलक किछु करब।

ई नियम ककरो पर थोपल नहि गेल। सभ अपन आवश्यकता अनुसार अपन नियम चुनत।

ईशान अपन कॉपीमे अन्तिम पाँति लिखलक—‘मोबाइल हमर कुंजी अछि, घर नहि। ओकरासँ अनेक दरबज्जा खुलैत अछि, मुदा प्रत्येक दरबज्जा खोलि भीतर जाएब आवश्यक नहि।’

ओहि साँझ घर पहुँचि ओ आलमारीसँ मोबाइल निकाललक। पटल चमकल—ढेर सूचना जमा छल। पहिने जेकाँ तुरन्त सभ खोलबाक हड़बड़ी नहि भेल।

ओ पहिने माएक लग गेल। ‘काल्हि जे दहियार गाबि रहल छल, ओकर नाम अहाँकेँ बुझल अछि?’

माए बजलीह—‘आइ फेर मोबाइल बन्द अछि की?’

ईशान हँसि पड़ल। ‘नहि। आइ मोबाइल चालू अछि—हमर ध्यान कनेक अपन लग अछि।’

कथा १३

चिरैयाँ गिननिहार बालक

माधवकेँ भोर पसिन्न छल। जखन गामक अधिकांश घरक धुआँ सेहो नहि उठल रहैत, ओ छोट दूरबीन, एकटा पुरान अभ्यास-पुस्तिका आ पेन्सिल लऽ पोखरि दिस निकलि पड़ैत। आकाशमे पहिल उजास फैलिते गाछक डारि-डारि पर ध्वनि जागि उठैत—कतहु मैना, कतहु सुग्गा, कतहु गौरैया, कतहु कोइलक दूरक कूक।

ओ चिरैयाँक नाम मात्र नहि लिखैत। कतेकटा देखल, कोन गाछपर बैसल, पानि लग गेल कि खेत दिस उड़ल, एकहि ठाम कतेक काल रहल—सभटा छोट-छोट चिन्हमे उतारैत। ओकर अभ्यास-पुस्तिकाक प्रत्येक पृष्ठ पर दिनांक, ठाम, आकाशक दशा आ चिरैयाँक संख्या लेल अलग कोना बनल छल।

विद्यालयमे किछु सहपाठी ओकर एहि रुचिपर हँसैत छल। नील एक बेर कहने छल—‘माधव, तोरा गिनतीक अभ्यास नहि भेटैत की? कखनो पात गिन, कखनो बादर गिन!’

माधव हँसि देने छल। 'पात सभ दिन ओतहि नहि रहैत, बादर सेहो नहि। चिरैयाँ तँ आर बेसी चलायमान अछि। ताहि कारण गिनती रोचक अछि।'

नील ओकर उत्तर सुनि मुस्की देलक, मुदा ओकरा बुझाइत नहि छल जे माधव एतेक भोर किएक उठैत अछि। माधव स्वयं सेहो आरम्भमे एकर स्पष्ट उत्तर नहि देत। आजीक संग पोखरि जाएब ओकर बाल्यकालक आदत छल। आजी प्रत्येक ध्वनि सुनि कहथि—'ई सुनह, ई कोइल। ओ देखह, बाँसक माथपर सुग्गा। पानिक धार लग जे उज्जर ठाढ़ अछि, ओ बगुला।' आजी आब बुढ़ भऽ गेल छलीह; पयर कम चलैत छलन्हि। माधवक दूरबीनमे हुनक पुरान नजरिक अंश बसल छल।

एक सोमदिन विज्ञानक गुरुजी, अनिरुद्ध सर, कक्षामे कहलनि—'एहि मास हम सभ अपन गामक जीव-जगत पर प्रत्यक्ष अवलोकन करब। पुस्तकक चित्र देखब पर्याप्त नहि। जे किछु अहाँक चारूकात अछि, ओकरा देखू, लिखू, तुलना करू।'

कक्षामे तुरन्त उत्साह भरि गेल। कियो पातक भिन्नता चुनलक, कियो पोखरिक जलजीव, कियो चींटी, कियो खेतक कीड़ा। गुरुजी जखन माधव लग पहुँचलनि, ओ अपन पुरान अभ्यास-पुस्तिका मेजपर राखि देलक।

गुरुजी पृष्ठ पलटैत गेलाह। हुनक आँखि चमकि उठल। 'ई तऽ दू बरखक लेखा अछि!'

माधव धीमे कहल—'सभ दिन नहि लिखल अछि। जखन जा सकैत छी, तखने।'

'एहि बेर एकटा निश्चित ठाम चुनू। सात दिन एकहि बेला गिनू। फेर दोसर सात दिन दोसर ठाम। तखन देखू—संख्या मात्र नहि, भिन्नताक कारणो खोजू।'

माधवक लेल ई काज खेल सन छल। मुदा ओ अकेले नहि करए चाहैत छल। मध्यान्तरमे नील, तान्या आ ललित लग जा कहल—'भोरमे सात दिन पोखरि चलबह? आधा घण्टा मात्र।'

नील मुँह बनेलक—'भोर?'

तान्या पुछलक—'कतेक भोर?'

'सूरुज उगबासँ कनेक पहिने।'

ललित हँसि पड़ल—'तूँ मित्रता करबैत छह कि दण्ड दैत छह?'

तथापि अगिला भोर चारू पहुँचि गेल। नीलक आँखि आधा मुँदल, तान्याक हाथमे गरम दूधक छोट बाटी, ललितक गरदनिमे पुरान दूरबीन, आ माधव सदिखन जकाँ अभ्यास-पुस्तिका लेने।

पोखरि पर पहुँचि माधव एक नियम कहल—‘पहिल पाँच मिनट कियो नहि बाजत। केवल सुनब।’

नील ओठ चापि रहल। दू मिनटो नहि बीतल कि ओकर आँखि फैलि गेल। आमक डारिसँ एकटा नीलकंठ उड़ि धानक खाली खेत दिस गेल। तान्या फुसफुसायल—‘एतेक नीक रंग! हम एहि गाममे रहैत छी, मुदा पहिने ध्यान नहि देलहुँ।’

माधव उत्तर नहि देलक; पाँच मिनट पूर्ण नहि भेल छल। नील ओकरा तकैत मुस्की दैत रहल।

पाँच मिनट बाद सभ एक संग बजए लागल। माधव हुनका सभकेँ अलग-अलग काज देलक—नील संख्या लिखत, तान्या ध्वनि पर ध्यान देत, ललित ठाम चिन्हत, आ माधव प्रजातिक पहचान करबाक प्रयास करत। जकर नाम नहि बुझाइत, ओकर रंग, आकार, चोंच आ उड़ानक ढंग लिखल जाएत।

पहिल दिन उनचास चिरैयाँ देखल गेल। दोसर दिन पचपन। तेसर दिन वर्षाक हलुक फुहार पड़ल, संख्या घटि अठतीस भेल। चौठम दिन पोखरिक उत्तर कात खेत जोतल गेल; बगुला सभ ओम्हर जुटि गेल। पाँचम दिन दूरक पीपर पर असामान्य चहल-पहल छल।

सात दिन बाद नील स्वयं भोरमे सभसँ पहिने पहुँचल। माधव पुछलक—‘आइ निन्न नहि लागल?’

नील बजल—‘निन्न तऽ लागल, मुदा काल्हि जे कारी-उज्जर छोट चिरैयाँ देखलहुँ, ओकर नाम एखन धरि नहि भेटल। आइ फेर देखब।’

माधव मोने-मोन हँसल। गिनती नीलकेँ पकड़ि लेने छल।

दोसर सप्ताह गुरुजी पोखरिसँ आधा कोस दूर आम-बाँसक पुरान बगीचा चुनबाक सलाह देलनि। ओतए पानि नहि, मुदा घनगर गाछ, झाड़ी आ बीचमे छोट घासक मैदान छल। चारू मित्र तय कएलक जे पहिले जकाँ एकहि बेला आधा घण्टा अवलोकन करत।

बगीचामे दृश्य बदलल छल। पोखरि लग बगुला आ जलकातक चिरैयाँ बेसी भेटैत छल; एतए कठफोड़वा, कोइल, मैना, सुग्गा आ अनेक छोट चिरैयाँक ध्वनि घनी छल। तान्या ध्वनिक भिन्नता चिन्हए लगलि। ओ आँखि मुँदि कहि सकैत छलि—'ई कूक पीपर दिशिसँ आएल, ई झाड़ी लगसँ।'

ललित एक नव युक्ति बनौलक। ओ कागजपर बगीचाक मोटामोटी आकृति बनबैत आ प्रत्येक दर्शनक ठाम छोट बिन्दु लगबैत। सात दिनक अन्तमे बिन्दुसभ एक विचित्र रूप देखौलक—अधिकांश चिरैयाँ ओहि भागमे रहैत जतए घनगर झाड़ी आ दूटा पुरान खोखर गाछ छल।

'एहि ठाम बेसी किएक?' नील पुछलक।

माधव अनुमान देलक—'खोखरमे घोंसला होएत। झाड़ीमे कीड़ा भेटैत होएत। मुदा अनुमान लिखब, सत्य नहि।'

गुरुजी हुनका सभक ई सावधानी देखि प्रसन्न भेलाह। 'वैज्ञानिक दृष्टि यैह अछि। जे देखल, ओकरा देखल कहू; जे अनुमान, ओकरा अनुमान कहू। दुनूकेँ मिलाउ नहि।'

ओहि दिन विद्यालयसँ घुरैत चारू बगीचा लग एक पीयर रंगक डोरी देखलक। डोरी दू गाछक बीच तनल छल। लगमे किछु बाँस राखल। ललित कहल—'एतए की होएत?'

साँझ धरि गाममे समाद फैलि गेल जे बगीचाक एक भागमे विवाह-मण्डप बनेत। तीन दिन बाद पैघ भोज छल। झाड़ी काटल जाएत, बाँस गाड़ल जाएत, राति भरि बाजा बजत।

नील उत्साहित भेल—‘भोज नीक!’ फेर सहसा ओकरा खोखर गाछ मोन पड़ल। ‘मुदा चिरैयाँ?’

तान्या कहलि—‘विवाह रोकब तऽ नहि। मुदा झाड़ी सभ काटल आवश्यक अछि की?’

चारू बगीचाक मालिक महेन्द्र काकाक लग गेल। महेन्द्र काका पहिने हँसलाह—‘अहाँ सभ आब चिरैयाँक वकील बनि गेलहुँ?’

माधव अभ्यास-पुस्तिका खोललक। ‘काका, देखू। एहि सात दिनमे अधिक चिरैयाँ एही भागमे देखल गेल। ई दू खोखर गाछपर तऽ रोज आवाजाही अछि। हम विवाहक विरोध नहि करैत छी। केवल ई कहैत छी जे मण्डप कनेक दहिन कात बनि सकैत अछि की?’

महेन्द्र काका पृष्ठ देखैत रहलाह। ‘तूँ सभ गिनने छह?’

‘हँ। भोरमे।’

‘एतेक दिन?’

‘सात दिन एतए, सात दिन पोखरि लग।’

काका गंभीर भेलाह। ‘मण्डप बनौनिहार लोक काल्हि अएताह। अहूँ सभ रहिह।’

अगिला दिन माधव, तान्या, नील आ ललित फेर पहुँचल। मण्डप बनौनिहार दू लोक, महेन्द्र काका आ परिवारक किछु सदस्य सेहो छलाह। ललित अपन बगीचाक आकृति देखौलक। तान्या खोखर गाछ लग चिरैयाँक आवाजाही देखेलक। नील एकटा सरल प्बाटव देलक—‘मण्डप पाँच हाथ ओम्हर सरका दी। झाड़ीक बीच सँ बाट नहि काटी; बाहरी किनारसँ पथ बनि जाएत।’

मण्डप बनौनिहार लोक ठाम नापलनि। किछु देर विचार भेल। अन्तमे मण्डप सचमुच कनेक सरकि गेल। केवल दू सूखल बाँस काटल गेल; घनगर झाड़ी आ खोखर गाछ बचि गेल।

नील माधवक कानमे फुसफुसायल—‘हमरा लगैत छल चिरैयाँ गिनला सँ की होएत। गिनती तऽ ठामो बचा सकैत अछि!’

माधव कहल—‘गिनती नहि, गिनतीक अर्थ बुझलासँ।’

विवाहक राति बाजाक ध्वनि दूर धरि गेल। अगिला भोर चारू फेर पहुँचल। चिरैयाँ कम छल। नील उदास भेल।

माधव कहल—‘एक दिनक कारणेँ निष्कर्ष नहि।’

तीन दिन बाद संख्या फेर बढ़ल। पाँचम दिन खोखर गाछमे एक जोड़ी मैना आवैत-जाइत देखल गेल। तान्या धीरे बजली—‘ओ सभ घुरि आएल।’

माधव अभ्यास-पुस्तिकामे केवल संख्या नहि लिखलक; बगलमे लिखलक—‘व्यवधानक बाद पुनरागमन देखल गेल।’

मासक अन्तमे विद्यालयमे सभ समूह अपन अवलोकन रखलक। कियो चींटीक पाँति पर, कियो पातक आकार पर, कियो पोखरिक कीड़ा पर। माधवक समूह चार्ट नहि, दूटा मोट पन्ना आ एकटा हाथसँ बनाओल मानचित्र लेने ठाढ़ भेल।

नील आरम्भ कएलक—‘पहिने हमरा लगैत छल जे गिनती केवल अंक अछि। मुदा एकहि ठाम बेर-बेर गिनलासँ परिवर्तन देखाइ पड़ैत अछि।’

तान्या ध्वनिक विषय कहलि—‘कखनो चिरैयाँ देखाइ नहि पड़ैत, मुदा ध्वनि सँ उपस्थितिक संकेत भेटैत अछि। तेँ केवल आँखि नहि, कानो आवश्यक।’

ललित अपन बिन्दुवला मानचित्र देखौलक—‘गाछ सभ एक समान नहि। खोखर गाछ, झाड़ी, पानिक किनार—सभक अलग उपयोग अछि।’

माधव अन्तमे बजल—‘हम सभ जे नहि बुझलहुँ, तकरो लिखलहुँ। कतेक चिरैयाँक नाम एखनहुँ निश्चित नहि। अगिला मास फेर देखब। ई काज समाप्त नहि।’

गुरुजी पुछलनि—‘अहाँ सभक सभसँ पैघ सीख?’

नील तुरन्त बजल—‘भोरमे उठब कठिन अछि, मुदा असम्भव नहि!’ कक्षा हँसि पड़ल।

माधव कनेक सोचि कहल—‘जे चीज हम प्रतिदिन देखैत छी, ओकरा वास्तवमे देखैत छी—ई आवश्यक नहि। ध्यान देलापर अपन गाम नित नव बुझाइत अछि।’

ओहि साँझ आजी आँगनमे पिढ़ीपर बैसल छलीह। माधव अभ्यास-पुस्तिका लऽ हुनका लग गेल। आजी चश्मा लगा पृष्ठ पलटलीह।

'एतेक चिरैयाँ!' हुनकर मुख पर बाल-सन आनन्द फैलि गेल। 'हम तँ नाम कहैत रही, तूँ हिसाबो राखि लेलह।'

माधव पुछलक—'आजी, अहाँकेँ सभसँ प्रिय कोन चिरैयाँ?'

आजी कनेक सोचि बजलीह—'जे एखन सुनाइ पड़त, सएह।'

दुनू चुप भऽ गेल। साँझक हवा बाँसक पात हिलबैत छल। किछु क्षण बाद दूरसँ 'कुटुर-कुटुर' सन ध्वनि आएल। माधव उठि दूरबीन लेबाक लेल भीतर दौड़ए चाहलक, फेर ठमकि गेल।

आजी पुछलनि—'की भेल?'

माधव फेर पिढ़ीपर बैसि गेल। 'पहिने कानसँ सुनैत छी।'

ध्वनि फेर आएल। एहि बेर ओ दिशा चिन्हलक। तेसर बेर एकटा छोट चिरैयाँ बाँसक टुप्पी सँ उड़ि आमक डारि पर बैसल। माधव ओकर नाम नहि चिन्हलक।

आजी धीरे बजलीह—'नाम काल्हि खोजिह। आइ ओकरा रहए दह।'

माधव अभ्यास-पुस्तिका खोललक, मुदा प्रजातिक कोनामे किछु नहि लिखलक। केवल समय, दिशा आ रंगक संकेत देलक। नामक स्थान खाली रहल।

पहिने खाली स्थान ओकरा अधूरापन बुझबैत छल। आब ओ बुझलक—खाली स्थान सेहो आमन्त्रण अछि। जे नहि बुझल, ओ अगिला भोर फेर बाहर बजा रहल अछि।

अगिला दिन नील सभसँ पहिने पोखरि लग ठाढ़ भेटल। तान्या आ ललित सेहो पहुँचि गेल। नील दूरसँ आवाज देलक—'माधव! काल्हिक अनचिन्हार चिरैयाँ फेर आएल की?'

माधव मुस्की दैत अभ्यास-पुस्तिका खोललक। 'एखन खोज आरम्भे भेल अछि।'

चारू गाछक छाहमे चुप भऽ बैसि गेल। आकाश हलुक उज्जर भऽ रहल छल। पहिल ध्वनि कतहु झाड़ीमे उठल, दोसर पानि दिस, तेसर पीपरक माथपर।

माधव पेन्सिल पकड़लक, मुदा तुरन्त नहि लिखलक। पहिने सुनलक। फेर देखलक। तखन गिनलक।

आ ओकरा लगल—चिरैयाँक संख्या सँ पैघ छल ई सीख जे प्रकृतिक प्रत्येक छोट ध्वनि, जँ धैर्यसँ सुनल जाए, अपन गामक एकटा नव पृष्ठ खोलि दैत अछि।

कथा १४

माटिक रोबोट

बरसाति उतरि गेल छल, मुदा खेतक मेड़ सभ एखनहुँ नरम छल। विद्यालयसँ घुरैत नचिकेता देखलक जे ओकर दादा बाँसक सोटा सँ मेड़ पर छोट-छोट खोप बना रहल छथि आ प्रत्येक खोपमे सरिसबक बीज दऽ माटि सँ झाँपि रहल छथि। काज सहज देखाइत छल, मुदा एक पाँति पूरा करैत-करैत दादाक पीठ दुखए लागल।

नचिकेता पुछलक—‘दादा, ई काज कोनो छोट यन्त्रसँ नहि भऽ सकैत अछि?’

दादा हँसलाह—‘यन्त्र बनेबाक मन अछि तँ बना। मुदा यन्त्र खेतकेँ बुझत केना? कतए माटि नरम, कतए कठोर, कतए पानि भरल—ई सभ देखए पड़ैत अछि।’

ओहि राति नचिकेताक मोनमे दादाक प्रश्न घूमैत रहल। ओकर विद्यालयमे अगिला मास ‘अपन ठामक आवश्यकता’ विषयपर विज्ञान-प्रदर्शन होमएवला छल। प्रत्येक समूहकेँ एहन नमूना बनेबाक छल जे गामक कोनो वास्तविक काजमे सहायक हो।

अगिला दिन ओ अपन मित्र आर्या, कनक, उदयन आ शैलजाकेँ विचार सुनौलक। उदयन तुरन्त कहल—‘बीज देनिहार यन्त्र!’

कनक मुस्की देलक—‘यन्त्र खेतमे धँसि गेल तऽ?’

आर्या कागजपर दू पैघ पहिया बनौलक। ‘पहिया पैघ रहत तँ नरम माटिमे कम धँसत।’

शैलजा जोड़लक—‘बीज एकहि बेर ढेर नहि पड़ए। एक निश्चित दूरीपर थोड़े-थोड़े बीज छोड़बाक व्यवस्था चाही।’

पाँचू विद्यालयक विज्ञान-शिक्षिका अपर्णा दीदी लग पहुँचल। दीदी सभ गप सुनि कहलनि—‘पहिने काजकेँ टुकड़ा-टुकड़ा बुझू। रोबोट शब्द सुनिते आँखि चमकैत अछि, मुदा रोबोट मूलतः निर्देश माननिहार यन्त्र अछि। ओकरा की देखबाक, की करबाक, आ कखन रुकबाक—ई तीन गप स्पष्ट करू।’

समूह तीन प्रश्न लिखलक—मेड़ पर चलत केना? समान दूरीपर बीज छोड़त केना? आगाँ गहिर पानि वा गड्ढा भेटल तँ रुकत केना?

विद्यालयक पुरान सामग्रीक कोठलीसँ दू छोट मोटर, तार, एकटा चक्का, बिगड़ल खेलौनाक गियर आ एकटा साधारण दूरी-संवेदक भेटल। नचिकेता घरसँ पुरान धातुक पात्र अनबाक सोचलक, मुदा शैलजा रोकलक—'हमर गामक अपन विशेषता किछु रहए। केवल हाटसँ किनल पात्र जोड़ि देलासँ अपन पहिचान कतए?'

तखने कनककेँ अपन काका मोन पड़ल। काका कुम्हार छलाह। माटिक घड़ा, सुराही, दीप, चिड़ै-बासन सभ बनबैत छलाह। पाँचू साँझमे हुनका आँगन पहुँचल।

कुम्हार काका सभ सुनि किछु देर चुप रहलाह। फेर माटिक एक गोला हाथमे लऽ कहलनि—'माटि सुन्दर अछि, मुदा ओकर स्वभाव बुझू। अधिक मोट बनाओल तँ भारी; अधिक पातर बनाओल तँ टूटत। काँच माटि पानि पीबैत अछि; पकाओल माटि कड़ा होइत अछि, मुदा धक्का सहनाइ कठिन।'

नचिकेता पुछलक—'तखन रोबोटक देह माटिसँ बनि सकैत अछि?'

काका बजलाह—'पूरा भार माटि पर नहि दिअ। भीतर बाँसक हलुक ढाँचा बनाउ, बाहर माटिक खोल। जे भाग बेर-बेर खोलबाक हो, ओकरा माटिसँ नहि बाँधू।'

ई बात सभकेँ बड्ड नीक लागल। उदयन कागजपर नब आकृति बनौलक—बाँसक चारि हलुक पट्टीक चौकोर ढाँचा, दू पैघ पहिया, बीचमे बीजक पात्र, आगाँ छोट संवेदक, ऊपर माटिक खोल।

पहिल नमूना तीन दिनमे बनल। माटिक खोल सुन्दर छल। कनक ओकर देहपर केवल पात, धानक बाली आ पानिक लहर सन बिनु अक्षरक आकृति उकेरल। सभकेँ लगल जे रोबोट जँ चलि पड़त तँ विज्ञान-प्रदर्शनक सभसँ आकर्षक नमूना होयत।

परीक्षण विद्यालयक बगिचामे भेल। नचिकेता स्विच देलक। मोटर घरघरायल, पहिया घुमल, रोबोट दू हाथ आगाँ बढ़ल—आ बाम कात झुकि धम्मसँ बैसि गेल।

उदयनक मुख उतरि गेल। 'सभ नष्ट!'

अपर्णा दीदी हँसलनि—'जे नमूना पहिल बेरमे चलि जाए, ओ शिक्षाक अवसर कम दैत अछि। पहिने देखू—किएक झुकल?'

आर्या पहिया मापलक। बाम पहिया दहिनसँ आधा अंगुल छोट छल। शैलजा भार जाँचलक। बीजक पात्र एक कात अधिक भारी। कनक माटिक खोल उठौलक—ओ सेहो एक दिस मोट बनल छल।

सभ त्रुटि लिखल गेल। पहिया बराबर कएल गेल। पात्र बीचमे आयल। माटिक खोलक मोटाइ घटाओल गेल। दोसर परीक्षणमे रोबोट दस हाथ चलल, मुदा बीज एके ठाम ढेर सऽ खसि पड़ल।

'आब दोसर कठिनाइ,' नचिकेता कहल।

बीज छोड़बाक लेल पुरान घड़ीक छोट दाँतवला चक्का उपयोग कएल गेल। चक्का प्रत्येक घुमावपर पात्रक छेदकेँ क्षणभर खोलैत। मेजपर परीक्षणमे एक-एक करि बीज पड़ए लागल। मुदा सरिसबक बीज छोट, मक्का पैघ। एके छेद दुनू लेल उपयुक्त नहि छल।

शैलजा प्बाटव देलक—'छेद बदलएवला पातर पट्टी बनाउ। बीजक प्रकार बदलल तँ पट्टी बदलि देब।'

कुम्हार काका पातर पकाओल माटिक तीन छोट पट्टी बना देलनि—छोट, मध्यम आ पैघ छेदवला। काका कहलनि—'ई भाग टूटि सकैत अछि, तेँ दू अतिरिक्त पट्टी राखू।'

तेसर परीक्षण खेतक किनार पर भेल। दादा, कुम्हार काका आ अपर्णा दीदी तीनू उपस्थित छलाह। रोबोट धीरे-धीरे मेड़ पर चलल। प्रत्येक किछु दूरीपर बीज खसल। पाँचू मित्र पाछाँ-पाछाँ चलैत संख्या गिनैत रहल।

सहसा आगाँ छोट गड्ढामे पानि छल। दूरी-संवेदक माटिक सतहकेँ तऽ बुझैत छल, पानिक गहिराइ नहि। रोबोट रुकबाक स्थानपर आगाँ बढ़ल आ अगिला पहिया पानिमे उतरि गेल। मोटर बन्द कएल गेल।

दादा कहलाह—‘हम पहिने कहने रही—खेतकेँ देखए पड़ैत अछि।’

नचिकेता निराश नहि भेल। ‘दादा, तखन यन्त्रकेँ आर नीक देखनाइ सिखेबाक पड़त।’

अपर्णा दीदी स्पष्ट कएलनि जे बेश दामवला संवेदक लगेनाइ एक उपाय अछि, मुदा विद्यालयक परियोजनाक उद्देश्य कम्म पाइक उपयोगी नमूना बनौनाइ अछि। पाँचू आन बाट सोचए लागल।

आर्या खेतक मेड़ पर बाँसक पातर सोटा ठाढ़ कऽ देखलक। ‘जँ रोबोटक आगाँ एकटा हलुक स्पर्श-दण्ड रहए? गहिर गड्ढा आयत तँ दण्ड नीचाँ झुकत, छोट स्विच दबत आ मोटर रुकत।’

उदयन पुरान छाताक तार, बाँसक पातर फाँक आ छोट स्विचसँ व्यवस्था बनौलक। ई युक्ति सुन्दर नहि देखाइत छल, मुदा काज करैत छल।

चौठ परीक्षणमे रोबोट गड्ढाक पहिने रुकि गेल। सभ ताली बजेलक। नचिकेता दादाक दिस देखलक। दादा केवल मुस्की देलनि, मुदा हुनकर आँखिक चमक तालीसँ कम नहि छल।

एखन एकटा आर प्रश्न बचल—माटिक खोलक उपयोग की? जँ केवल शोभा लेल, तँ धातु वा प्लास्टिक हलुक होइत। कनक एहि पर कुम्हार काकासँ चर्चा कएलक।

काका माटिक एक छोट पातर पट्टी पानिमे भिजा कऽ देखेलनि। ‘माटि ताप धीरे बदलैत अछि। भीतरक तार आ यन्त्रकेँ धूपसँ किछु रक्षा भेटत। मुदा वर्षामे पानि भीतर नहि जाए, ताहि लेल जोड़ सभ ठीक चाही। आ जँ खोल टूटल, गाममे फेर बनि सकैत अछि।’

अपर्णा दीदी कहलनि—‘एहि ठाम विज्ञान आ स्थानीय कौशल एक-दोसरासँ गप करैत अछि। माटि सभ ठाम उपयुक्त नहि, मुदा जतए लाभ अछि ओतए उपयोग करू; जतए सीमा अछि ओ स्वीकार करू।’

समूह रोबोटक माटिक खोलकेँ तीन टुकड़ामे बनौलक—ऊपरक झाँप, दूनू कातक पट्टी। ताहिसँ सुधार सहज भेल। जोड़ पर रबरक पुरान पट्टी राखल गेल ताकि कंपनसँ माटि सोझे बाँसपर नहि बजड़ए।

विज्ञान-प्रदर्शनक एक सप्ताह पहिने विद्यालयक किछु छात्र नमूना देखि हँसल—‘माटिक रोबोट! वर्षा भेल तँ गलि जाएत!’

कनक शान्ति सँ उत्तर देलक—'काँच माटि गलि सकैत अछि। ई पकाओल माटि अछि। मुदा पानि भीतर जा सकैत अछि, तेँ जोड़क सुरक्षा आवश्यक। हम सीमा सेहो लिखब।'

नचिकेता बादमे कहल—'हँसला सँ तोंकेँ तमस नहि आएल?'

कनक मुस्की देलक—'काका कहैत छथि, घड़ा आगिमे पकैत अछि, गारिमे नहि। प्रश्न पूछल जाए तऽ उत्तर तथ्यसँ देबाक।'

प्रदर्शनक दिन सभ समूह अपन-अपन नमूना सजेलक। कियो वर्षाजल संग्रह देखबैत छल, कियो धुआँ घटेनिहार चूल्हा, कियो कम पानिमे बगिचा सींचबाक उपाय। नचिकेताक समूह अपन रोबोटक संग चारिटा वस्तु रखलक—पहिल विफल पहिया, टूटल माटिक टुकड़ा, बदलएवला बीज-पट्टी, आ स्पर्श-दण्ड।

एक दर्शक पुछलनि—'विफल वस्तु किएक राखने छी?'

आर्या उत्तर देलक—'कारण सफल नमूना एही सभ विफलताक ऊपर ठाढ़ अछि। जँ केवल अन्तिम रूप देखाएब तँ सीखक आधा भाग नुका जायत।'

दोसर दर्शक—एक खेतिहर—बीजक दूरी देखि पुछलनि—'ई धानक लेल चलत?'

शैलजा कहलि—'एखन नहि। ई सूखल मेड़ आ किछु मोट बीजक परीक्षण लेल बनल अछि। धानक खेतक पानि आ माटि अलग अछि। ताहि लेल नव परीक्षण चाही।'

खेतिहर प्रसन्न भेलाह। 'नीक। जे नहि चलत से नहि कहनाइओ विज्ञान अछि।'

निर्णायक मंडली नमूनाक गति नहि, समूहक परीक्षण-पुस्तिका देखैत अधिक काल बितेलक। प्रत्येक दिनक त्रुटि, सुधार, दूरी, बीजक संख्या, पहियाक आकार, भार—सभ दर्ज छल।

एक निर्णायक पुछलनि—'रोबोट शब्दक अर्थ अहाँ सभ लेल की अछि?'

उदयन सोचि उत्तर देलक—'एहन यन्त्र जे निर्देश अनुसार काज करए, किछु परिवेश बुझए, आ काज दोहराबए। मुदा हमरा सभक रोबोट एखन अधूरा अछि। ओकरा मनुष्यक निरीक्षण चाही।'

नचिकेता जोड़लक—'हमरा लगैत अछि अधूरापन लज्जाक गप नहि। अधूरापन अगिला प्रयोगक बाट अछि।'

समूहकेँ प्रथम पुरस्कार नहि भेटल। ओकरा ‘स्थानीय कौशल आ विज्ञानक उत्तम संगम’ लेल विशेष सम्मान भेटल। उदयन कनेक उदास भेल, मुदा दादा ओकर काँध पर हाथ राखि कहलाह—‘तोहर यन्त्र हमरा खेतमे एक पाँति ठीक सँ चला देत, से हमर लेल पुरस्कारसँ पैघ।’

प्रदर्शनक दू दिन बाद पाँचू फेर खेतमे पहुँचल। एहि बेर लक्ष्य पुरस्कार नहि, एक पूरा मेड़ छल। रोबोट चलल, बीज छोड़लक, एक ठाम अटकल, फेर निकालल गेल। दू बेर पट्टी बदलल गेल। बीचमे माटिक कातक एक पातर भाग चिरा गेल।

कनक हँसल—‘काल्हि काकासँ नव टुकड़ा बनबा लेब। ई तऽ एही लेल तीन भागमे बनौने रही।’

साँझ धरि एक पाँति पूरा भेल। दादा अपन हाथक बीज-पात्र लऽ बगलमे दोसर पाँति बोइत रहलाह। अन्तमे दुनू पाँति देखल गेल—एक मनुष्यक हाथक, एक यन्त्रक।

नचिकेता पुछलक—‘दादा, कोन नीक?’

दादा माटि हाथमे लऽ कहलाह—‘जे समय, ठाम आ आवश्यकता अनुसार काज दे, सएह नीक। मनुष्य यन्त्रकेँ जन्म दैत अछि; यन्त्र मनुष्यक अनुभवकेँ हटबैत नहि, बढ़बैत अछि।’

कुम्हार काका सेहो आबि गेल छलाह। ओ रोबोटक चिरायल खोल देखलनि। ‘ई भाग पातर भऽ गेल। अगिला बेर एतए कनेक मोटाइ बढ़ाएब।’

अपर्णा दीदी छात्रसभकेँ कहलनि—‘देखलहुँ? प्रयोगशाला केवल विद्यालयक कोठली नहि। खेत, कुम्हारक आँगन, दादाक अनुभव, अहाँक अभ्यास-पुस्तिका—सभ प्रयोगशाला बनि सकैत अछि।’

ओहि दिन नचिकेता रोबोटकेँ घर नहि अनलक। कुम्हार काकाक आँगनमे राखि देलक ताकि खोल फेर बनए। साँझक लाल प्रकाशमे माटिक देह पर धानक बालीक उकेरल आकृति चमकि रहल छल।

नचिकेता सोचलक—रोबोटक सभसँ विशेष बात ओकर मोटर, संवेदक वा पहिया नहि। विशेष ई छल जे ओकर भीतर अनेक हाथक बुद्धि छल—दादाक खेत-बुझाइ, काकाक माटि-कौशल, मित्रसभक गणना, शिक्षिकाक प्रश्न, आ विफल परीक्षणसभक निशान।

अगिला भोर कुम्हार काका चाक घुमबैत छलाह। नचिकेता लग बैसि नव कातक पट्टी बनेबाक प्रक्रिया देखैत रहल। चाक पर माटि घूमैत-घूमैत आकार लैत छल।

काका पुछलनि—‘रोबोट समाप्त भेल?’

नचिकेता हँसल—‘नहि। एखन तऽ पहिल रूप बनल अछि।’

काका सिर डोलौलनि—‘ठीक। माटि हो वा बुद्धि—आकार फेर-फेर सुधरैत अछि।’

चाक घूमैत रहल। बगलमे रोबोटक दू पहिया स्थिर छल। मुदा नचिकेताकेँ स्पष्ट बुझाइत छल—दुनू घूमनाइ एके यात्राक दू रूप अछि: एक पुरान कौशलक, दोसर नव प्रयोगक; दुनू मिलि आगाँक बाट बना रहल अछि।

कथा १५

जंगलक बाट, घरक गप

गामक पछिला कात एकटा हरियर जंगल छल। जंगल बड्ड पैघ नहि, मुदा गामक लोकक जीवनसँ ओकर सम्बन्ध गहिर छल। ओतए सँ छोट धार बहैत, बरखामे पानि रोकैत गाछ-पात छल, आ जाड़क भोरमे कतोक पाँखि ओहि ठाम उतरैत। किशोरसभक लेल जंगल खेलक मैदानो छल आ जिज्ञासाक पोथियो।

आइ भोर नीरज, सुमि, आफरीन आ ललित जंगलक पुरान पएदल बाटे विद्यालय जाए लेल निकलल। मुख्य बाट पर पुलक सुधार-काज चलि रहल छल, तेँ एहि पथसँ जाइत काल किछु दूरी कम पड़ैत। गाछक छाह, पातक गन्ध आ दूर बहैत धारक कलकल सुनैत चारू गोटे आगाँ बढ़ैत छल।

किछु दूर गेलापर सुमि एक गाछक तना पर लाल चिह्न देखलक। फेर दोसर, तेसर, चारिम गाछ पर सेहो वैह चिह्न।

“ई लाल चिह्न किएक?” सुमि पुछलक।

ललित तना छूबैत बजल—“काल्हि बाबू कहैत छलाह जे हाट-बजार धरि नव पक्की बाट निकालबाक गप चलि रहल अछि। सम्भवतः सर्वेक्षणक चिह्न होयत।”

नीरजक मोन खिन्न भेल। “जँ एतए सँ बाट गेल तऽ ई गाछ सभ?”

आफरीन तुरन्त बजली—“पहिने बुझी। बिनु बुझने चिन्ता करबो ठीक नहि, आ बिनु प्रमाणक विरोध करबो नहि।”

विद्यालय पहुँचि चारू गोटे विज्ञानक शिक्षिका कल्पना दीदीसँ गप कएलक। दीदी ध्यानसँ सुनलनि आ एक प्रश्न पुछलनि—“अहाँ सभ जंगल बचाबए चाहैत छी, ई नीक गप। मुदा जे लोक नव बाट चाहैत छथि, हुनकर कारण की अछि?”

किशोरसभ चुप भऽ गेल। ललित धीरे बजल—“बरखामे पुरान पक्की बाट पर पानि भरि जाइत अछि। रोगीकेँ अस्पताल लऽ जेबाक कठिनाइ होइत अछि। कृषकक उपज हाट-बजार पहुँचबामे देर लगैत अछि।”

दीदी मुस्की देलनि। “तखन प्रश्न ‘बाट कि जंगल’ नहि अछि। प्रश्न अछि—एहन उपाय भेटि सकैत अछि की जाहिसँ लोकक सुविधा बढ़ए आ जंगलक क्षति कम होअए?”

ओहि दिन विद्यालयक बाद चारू गोटे फेर जंगल गेल। एहि बेर खेलए नहि, नाप-जोख करए। नीरज लेख-पोथी लेने छल, आफरीन मोबाइलक स्थानपर कागजक मानचित्र, सुमि डोरी आ फीता, ललित पाँखि आ गाछ चिन्हबाक छोट पोथी।

लाल चिह्नवला प्बाटवित पथक संग-संग ओ सभ चलल। जतेक गाछ पर चिह्न छल, संख्या लिखलक। मोट तना आ पातर तना अलग गिनलक। धार कतए पथ काटत, से चिन्हलक। एक ठाम माटि बड्ड नरम छल; दोसर ठाम ढाल तीख छल। किछु दूरपर बाँसक घन झाड़ी छल, जतए कतोक छोट पाँखि भीतर-बाहर करैत छल।

सुमि पुछलक—“केवल गाछ गिनलासँ की सभ बुझा जाएत?”

आफरीन बजली—“नहि। पानि, माटि, जीव-जंतु, आ लोकक उपयोग—सभ देखए पड़त।”

दोसर दिन ओ सभ जंगल लगक चरवाहा रघुनाथ काकासँ भेँट कएलक। काका पचास बरखसँ ओहि क्षेत्रमे गोरु चरबैत छलाह। ओ कहलखिन—“एहि ढालक नीचाँ बरखा बाद पानि देर धरि टिकैत अछि। गाछक जड़ि माटि पकड़ेने रहैत अछि। मुदा नव बाटक आवश्यकता सेहो अछि। खेतसँ अनाज बाहर निकालब कठिन होइत अछि।”

नीरज पुछलक—“दोसर पथ भऽ सकैत अछि?”

काका लाठीसँ माटिपर रेखा खेंचलनि। “खेतक मेड़ दिस एक पुरान बैलगाड़ी-पथ छल। आब झाड़िमे ढँकि गेल अछि। ओ कने नमगर पड़त, मुदा पैघ गाछ कम अछि।”

ई गप सुनि चारू गोटेक उत्साह बढ़ल। अगिला रवि दिन कल्पना दीदीक संग ओ सभ ओहि पुरान पथक निरीक्षण कएलक। डोरीसँ दूरी नापल गेल। प्बाटवित जंगल-पथसँ ई पथ लगभग छओ सय मीटर बेसी नमगर छल, मुदा ओतए केवल किछु छोट झाड़ी हटए पड़ित, पैघ गाछ लगभग बचि जाइत।

मुदा एक कठिनाइ छल। पुरान पथक एक भाग वर्षाकालमे दलदल भऽ जाइत।

ललित बजल—“तखन लोक कहत जे जंगलक बाटे सरल अछि।”

कल्पना दीदी कहलनि—“सरल उत्तर खोजब नहि। दलदलक कारण बुझू।”

चारू गोटे बरखाक पानिक बहाव देखए अगिला झड़ीक प्रतीक्षा कएलक। बरखा भेलापर ओ सभ छाता लेने ओतए पहुँचल। बुझल गेल जे खेतक एक पुरान नाली बन्द भऽ गेल छल, तेँ पानि पथपर फैलि जाइत। नाली फेर खोलल जाए आ छोट पुलिया बनाओल जाए तऽ पानि निकलि सकैत छल।

विद्यालयमे ओ सभ छोट प्रयोग सेहो कएलक। दू समान पात्रमे एकमे सूखल खुलल माटि, दोसरमे पात-पातुर आ घाससँ ढाकल माटि राखलक। दुनूमे बराबर पानि देल गेल। खुलल माटिसँ मटमैला पानि झट बाहर बहल; पात-पातुरवला पात्रमे पानि धीरे निकसल आ माटि कम बहल।

सुमि लेख-पोथीमे लिखलक—“ई प्रयोग जंगलक पूरा व्यवहारक प्रमाण नहि, मुदा माटि ढाकल रहबाक एक असर देखबैत अछि।”

नीरज कहल—“एहि वाक्यकेँ अवश्य राखब। जेना हम जे देखलहुँ, ताहिसँ बेसी निष्कर्ष नहि निकालब।”

आफरीन प्बाटवित दुनू पथक तुलना बनौलक—दूरी, काटल जाएवला पैघ गाछक संख्या, पानिक बहाव, ढाल, पुलिया आवश्यकता, खेतक पहुँच, आ सुधारक सम्भावना। ललित गाछ

आ पाँखिक चित्र बनौलक। नीरज सभ निरीक्षण दिनांक अनुसार लिखलक। सुमि गामक बीस परिवारसँ पुछलक जे हुनका सभकेँ नव बाटसँ कोन सुविधा चाही।

उत्तर रोचक छल। अधिकांश लोक अस्पताल आ हाट-बजार धरि सालभरि चलएवला पथ चाहैत छल। ककरो ई आग्रह नहि छल जे बाट जंगलक बीचेसँ होअए। किछु लोक तऽ पुरान बैलगाड़ी-पथक नामो मोन पाड़लनि।

गामसभाक दिन किशोरसभ अपन कागज, मानचित्र आ गणना लेने पहुँचल। आरम्भमे किछु लोक हँसल—“एतेक पैघ गपमे नेना सभ की कहत?”

मुदा मुखिया कहलखिन—“जे नापि-जोखि कऽ आयल अछि, ओकर गप सुनल जाए।”

आफरीन पहिने नव बाटक आवश्यकता मानलक। “हम सभ सुविधा रोकए नहि चाहैत छी। रोगी, विद्यार्थी, कृषक—सभ लेल नीक पथ आवश्यक अछि।”

तकर बाद नीरज लाल चिह्नवला जंगल-पथक आँकड़ा पढ़लक। सुमि परिवारसभक उत्तर सुनौलक। ललित पुरान बैलगाड़ी-पथक मानचित्र खोललक। अन्तमे ओ सभ प्बाटव रखलक—पुरान पथक झाड़ी हटाओल जाए, बन्द नाली फेर खोलल जाए, दलदल भागपर छोट पुलिया बनए, आ जहाँ दू-तीन छोट गाछ हटेनाइ अनिवार्य हो, ओतए बदलामे स्थानीय जातिक अधिक पौधा रोपल जाए।

सभामे तुरन्त सहमति नहि भेल। किछु लोक कहलक जे नमगर पथमे व्यय बढ़त। किछु कहलखिन जे जंगल कटला बाद घाममे बाट शीघ्र सुखाएत। आन लोक पुछलक जे बरखाक धारा पर पुलिया कतेक टिकत।

किशोरसभ सभ प्रश्नक उत्तर नहि देल। जतए तथ्य नहि छल, ओ स्पष्ट कहल—“ई अभियन्ता आ वनकर्मी सँ जाँच करबाक विषय अछि।”

कल्पना दीदी पाछाँ बैसल मुस्की दैत छलीह। प्रमाणक संग अपन अज्ञान स्वीकार करब सेहो सीखक भाग छल।

दू सप्ताह बाद प्रखण्डक अभियन्ता आ वनकर्मी दुनू पथ देखए एलाह। जाँचक बाद कहल गेल जे खेतक मेड़वला पथ उपयोगी बनाओल जा सकैत अछि, जँ जलनिकास ठीक कएल जाए। किछु अतिरिक्त व्यय अवश्य होयत, मुदा जंगलक भीतर पैघ कटान टारल जा सकैत अछि।

अन्तिम निर्णय भेल—मुख्य नव पथ पुरान बैलगाड़ी-पथ दिस मोड़ल जाए। जंगलक भीतरक पएदल बाट केवल पैदल आ साइकिल लेल रहए। लाल चिह्नवला अधिकांश गाछ बचि गेल। जे किछु पौधा हटए पड़ल, ओकर बदलामे गामक किशोर-मण्डली स्थानीय गाछक पौधा रोपबाक दायित्व लेल।

रोपणक दिन नीरजक हाथ माटिसँ भरल छल। सुमि पौधाक चारू कात छोट मेड़ बना रहल छली। आफरीन पानिक घैला भरि आनैत छली। ललित बाँसक छोट घेरा बना रहल छल।

रघुनाथ काका दूरसँ देखैत बजलाह—“जंगल बचल, बाटो बनल। मुदा ई काज एतए समाप्त नहि भेल। पौधा लगेनाइ सरल, जिआबेनाइ कठिन।”

ताहि दिनसँ चारू गोटे सप्ताहमे एक बेर पौधा देखए जाइत। ककरो पात सुखाए तऽ पानि दैत, ककरो घेरा टूटए तऽ फेर बाँधैत। संगहि ओ सभ जंगलक पएदल बाटपर कूड़ा-कर्कट नहि फेकबाक छोट अभियान विद्यालयमे चलौलक।

किछु मास बाद नव पक्की बाट खेतक मेड़ दिस बनि गेल। मोटर-वाहन ओम्हर सँ चलए लागल। जंगलक पुरान पथ एखनहुँ शान्त छल। गाछक छाहमे पाँखि बजैत, धार बहैत, आ पातपर घामक टुकड़ा काँपैत।

एक साँझ चारू गोटे ओहि पएदल बाटे घर घुरैत छल। ललित पुछलक—“हम सभ जंगल बचेलहुँ, कि जंगल हमरा सभकेँ किछु सिखौलक?”

सुमि हँसली—“दुनू।”

नीरज आगाँक गाम दिस तकलक। घरक चूल्हिक धुआँ ऊपर उठि रहल छल। ओकरा बुझायल—जंगल गामसँ अलग कोनो हरियर टापू नहि। धारक पानि खेतमे जाइत अछि, पाँखि बीआ छितरबैत अछि, गाछ माटि थामैत अछि, आ लोक ओहि सभक बीच अपन जीवन बनबैत अछि।

आफरीन धीरे बजली—“तेँ जंगलक बाट घरक गपे अछि।”

चारू गोटे किछु काल चुप रहल। फेर पातक सरसराहटि बीच गाम दिस उतरि गेल।

कथा १६

गाछ पर बनल पाठशाला

गामक पूबारी कात पोखरिक लग एकटा पुरान पीपल गाछ छल। गाछक जड़ि धरतीसँ ऊपर-नीचाँ एना पसारल रहए जेना माटिक भीतरक कथा बाहर आबि गेल हो। ओकर मोट-मोट फाँक पर सदिखन पाँखिक आवाज रहैत। भोरमे सुग्गा, दुपहरिया मे मैना, साँझमे चिरैयाँक झुंड। गामक बुजुर्ग कहैत छलाह जे ई गाछ हुनकर बाल्यकालसँ एतहि अछि।

एक दिन विद्यालयसँ घुरैत नयन, मेघा, ईशान आ रेवा पीपलक छाहमे बैसि गेल। जेठक घाम छल, मुदा गाछक नीचाँ पवन शीतल लगैत छल। चारू गोटे अपन-अपन बस्ता खोलि गृहकाज करए लागल। किछु काल बाद मेघा ऊपर दिस तकैत बजली—“एहि फाँक पर जँ छोट मचान बनि जाए तऽ कतए नीक अध्ययन-ठाम होयत!”

ईशानक आँखि चमकि उठल। “गाछ पर पाठशाला?”

रेवा हँसली—“पाठशाला तऽ विद्यालयमे अछि। मुदा एतए पोथी पढ़ब, पाँखि देखब, पात चिन्हब, पोखरिक पानि नापब। ई कक्षा दीवार बिनु होयत।”

नयन उत्साहित छल, मुदा तुरन्त बजल—“मचान बनायब तँ गाछकेँ चोट नहि लगबाक चाही। फाँकमे कील ठोकि देल गेल तऽ?”

चारू गोटे चुप भऽ गेल। कल्पना नीक छल, मुदा गाछक मूल्य पर नहि। तय भेल जे पहिने गाछक अवस्था बुझल जाए, तकर बादे किछु कएल जाए।

अगिला दिन ओ सभ विद्यालयक विज्ञान-शिक्षक सुधांशु सरसँ गप कएलक। सर सभ गप सुनि कहलनि—“एहन ठाम बनाओल जा सकैत अछि, मुदा सुरक्षा आ गाछक स्वास्थ्य पहिल शर्त अछि। गाछक जीवित भागमे अनावश्यक छेद नहि करब। भार कतेक सहि सकैत अछि, से अनुभव बिनु अनुमान नहि लगायब। गाममे काठ-काज जाननिहार के छथि?”

ईशान तुरन्त कहल—“बिसेसर काका। ओ पुरान घरक कड़ी, चौखट आ बाँसक मचान बनबैत छथि।”

ओहि साँझ चारू गोटे बिसेसर काका लग पहुँचल। काका पीपलक गाछ देखि ओकर फाँक, तना, सूखल डारि आ जड़िक निरीक्षण कएलनि। फेर कहलनि—“गाछ पर घर लटकायब ई बात नहि। गाछक चारू कात बाँसक चारि खम्भा धरतीमे गाड़ि मचान बनत। गाछक डारि छाह देत, आधार धरती देत। एना गाछ पर दबाव कम पड़त।”

मेघा पुछलक—“मचान गाछ पर नहि तऽ नाम ‘गाछ पर बनल पाठशाला’ कोना?”

काका मुस्की दैत कहलनि—“नाम मनक होइत अछि। मचान डारिक बीच रहत, छाह गाछक, पवन गाछक, पाँखि गाछक। मुदा जिम्मेवारी धरतीक।”

एहि उत्तर पर सभ हँसि पड़ल।

निर्माणक पहिने ओ सभ नियम बनौलक। मचान बड्ड ऊँच नहि होयत। चढ़बाक लेल चौड़ा निसेनी रहत। चारू कात मजबूत रोक-डाँड़ रहत। एक बेरमे सीमित किशोर ऊपर जाएत। बरखा, तेज पवन वा अन्हारमे मचान बन्द रहत। नेनासभ केवल पैघ लोकक संग चढ़त। गाछक कोनो नव डारि काटल नहि जाएत।

बिसेसर काका कहलनि—“नियम लिखबासँ अधिक आवश्यक अछि पालन।”

रवि दिन गामक किछु अभिभावक, विद्यार्थी आ शिक्षक जुटलाह। बाँस नापल गेल, डोरी बान्हल गेल, धरतीमे खम्भाक ठाम चिन्हल गेल। कियो माटि खोदलक, कियो बाँस पकड़लक, कियो पानि अनलक। नयन आ ईशान मचानक छोट मानचित्र कागजपर बनौने छल। बिसेसर काका हर माप फेर जाँचैत छलाह।

दू दिनमे मूल ढाँचा ठाढ़ भऽ गेल। तेसर दिन काठक पातर पटरी बिछाओल गेल। डारिसँ दूरी राखि काठ काटल गेल ताकि गाछ बढ़ैत रहए। निसेनीक दुनू कात पकड़बाक डाँड़ लगाओल गेल। मचानक एक कोनमे पोथी रखबाक लेल ढक्कनवला काठक सन्दूक बनल, मुदा बिसेसर काका कहलनि जे बरखाक समय पोथी ऊपर नहि छोड़ल जाए।

पहिल बेर चारू मित्र ऊपर चढ़ल तँ हुनका सभकेँ अपन गाम नब रूपमे देखायल। पोखरि ओहि ठामसँ गोल-गोल चमकैत छल। खेतक मेड़ एना बुझाइत छल जेना हरियर कपड़ापर कियो महीन रेखा खेंचि देलक हो। दूर विद्यालयक छत, मंदिरक शिखर, बाँसवारी आ आमक बगीचा सभ एके दृष्टिमे आबि गेल।

रेवा धीरे बजली—“नीचाँ सँ जे अलग-अलग देखाइत छल, ऊपर सँ सभ जुड़ल देखाइत अछि।”

मेघा कहलि—“तखन पहिल पाठ एतहि भेल।”

ओ सभ पाठशालाक दिन बाँटि लेलक। सोम दिन पोथी-पढ़ाइ, बुध दिन प्रकृति-अवलोकन, शनि दिन सामूहिक चर्चा। रवि दिन गामक कियो बुजुर्ग वा कारीगर आबि अपन अनुभव कहताह। विद्यालयक नियमित काजक स्थान पर ई पाठशाला नहि छल; ई अतिरिक्त सीखक ठाम छल।

पहिल बुध दिन नयन दूरबीन अनलक। ईशान पाँखिक सूची बनबैत छल। मेघा पातक आकार देखैत चित्र खेंचैत रहली। रेवा पोखरिक जल-स्तर नापबाक सरल डाँड़ बनौने छली। ओ सभ एके ठाम बैसल छल, मुदा चारि प्रकारक प्रश्न ओकरा सभक सामने खुलि रहल छल।

दुपहरिया एक पाँखि सहसा जोर सँ फड़फड़ायल। सभक दृष्टि ऊपर गेल। मचानसँ कनेक ऊपरक डारिमे छोट घोंसला छल। ओहि घोंसलामे दू अण्डा देखाइत छल।

नयन तुरन्त आवाज धीमी कएलक। “हम सभ एतए आबि ओकरा सभकेँ बाधा तऽ नहि पहुँचा रहल छी?”

अगिला दू दिन पाठशाला बन्द राखल गेल। विज्ञान-शिक्षकक संग दूरसँ घोंसला देखल गेल। शिक्षक कहलनि—“जँ पाँखि बारम्बार घोंसला लग अबैत अछि आ डरि घुरि जाइत अछि, तऽ मचानक उपयोग सीमित करब। प्रकृति-अध्ययनक पहिल नियम—जकरा देखैत छी, ओकर जीवनकेँ अस्त-व्यस्त नहि करब।”

एहि बाद समय बदलल गेल। प्रातःकाल पाँखिसभक सक्रिय समयमे कियो मचानपर नहि चढ़ैत। दुपहरियाक सीमित समयमे अध्ययन होइत। एक कातक बैसबाक ठाम हटाओल गेल ताकि घोंसलासँ दूरी बढ़ए।

किछु सप्ताह बाद अण्डासँ पिलुआ निकलल। किशोरसभ दूरसँ मात्र देखैत। कियो हाथ नहि लगबैत। पिलुआक पहिल उड़ानक दिन रेवा कहली—“हम सभ पाठशाला बनौने रही; मुदा पाँखिसभ हमरा सभक शिक्षक बनि गेल।”

रवि दिनक बैसार धीरे-धीरे गाममे प्रसिद्ध भऽ गेल। एक बेर कमली आजी एलथि। ओ पीपलक पातसँ पुरान समयमे बनैत किछु घरेलू उपयोगक कथा सुनौलनि, मुदा संगहि चेतौलनि जे औषधीय उपयोग बिनु जानकारक सलाह नहि करबाक। दोसर बेर रघुवीर काका एलाह, जे पोखरिक पुरान जलनिकासक बाट स्मरण करैत छलाह। एक बेर कुम्हारिन शान्ति दीदी माटिक प्रकार चिन्हबाक सरल उपाय देखौलनि।

किशोरसभ अनुभव लिखैत, मुदा जँ ककरो बातक प्रमाण नहि भेटैत तऽ ओकर आगे “लोक-स्मृति” लिखैत। नयन कहैत—“जे बात सुनलहुँ, ओकरा तथ्य कहि देनाइ उचित नहि। सुनल बातक अपन मूल्य अछि, जाँचल तथ्यक अपन।”

एक दिन समस्या दोसर रूपमे आयल। विद्यालयक छोट कक्षाक किछु नेना मचान लग ठाढ़ रहि ऊपर चढ़बाक आग्रह करए लागल। पैघ किशोरसभ कहलक जे नियम अनुसार पैघ लोक बिनु चढ़ब उचित नहि। नेनासभ निराश भऽ घुरि गेल।

मेघाकेँ ई नीक नहि लगल। “हम सभ एहन पाठशाला बनौने छी जतए छोट नेना केवल नीचाँ ठाढ़ रहए?”

बिसेसर काका कहलनि—“सुरक्षा नियम बदलू नहि। मुदा सीख केवल मचानपर किएक?”

एहि प्रश्नसँ नव काज आरम्भ भेल। गाछक नीचाँ गोल बैसबाक लेल माटिक नीच आसन बनल। एक छोट पोथी-पेटी राखल गेल जे दिनमे खोलल जाए, साँझमे घर लऽ जायल जाए। नीचाँक ठाममे नेनासभ चित्र बनबैत, कथा सुनैत, पात गिनैत। मचान किशोरसभक अध्ययन-ठाम रहत, मुदा पूरा गाछ सभक पाठशाला बनि गेल।

बरखा आबए लगल। पहिल पैघ झड़ीक पहिने बिसेसर काका मचानक सभ जोड़ जाँचलनि। ढीला डोरी बदलल गेल। पोथी-सन्दूक खाली कएल गेल। निसेनी हटाकए सुरक्षित ठाम राखल गेल ताकि कियो बरखामे चढ़ि नहि जाए।

राति भरि पवन चलल। भोरमे किशोरसभ दौड़ल-दौड़ल पीपल लग पहुँचल। पात आ छोट डारि धरतीपर छितरायल छल, मुदा मचान ठाढ़ छल। एक कातक रोक-डाँड़ ढीला भऽ गेल छल।

ईशान आनन्दसँ बजल—"बचि गेल!"

बिसेसर काका, जे पाछाँ सँ आबि रहल छलाह, तुरन्त रोकलनि—"ठाढ़ अछि, ताहिसँ सुरक्षित सिद्ध नहि होइत। जाँच पहिने, चढ़ाइ बादमे।"

ओहि दिन कियो ऊपर नहि गेल। जोड़-जाँच, बाँसक अवस्था, धरतीमे खम्भाक पकड़—सभ देखल गेल। दू दिन बाद मरम्मत पूर्ण भेल तखन पाठशाला फेर खुलल। किशोरसभ बुझलक जे सुरक्षा एक बेरक काज नहि; निरन्तर देखरेख अछि।

शरद ऋतुमे विद्यालयक वार्षिक प्रदर्शनी भेल। नयनसभ "गाछ पर बनल पाठशाला"क अनुभव प्रस्तुत कएलक। ओ सभ केवल सुन्दर चित्र नहि देखौलक; निर्माणक नियम, घोंसलाक कारण बदलल समय, छोट नेनासभ लेल नीचाँक अध्ययन-वृत्त, बरखाक बाद निरीक्षण—सभ कहलक।

प्रधानाध्यापक पुछलनि—"एहि पाठशालाक सभसँ पैघ उपलब्धि की?"

रेवा किछु काल सोचि कहलि—"हमरा लगैत अछि मचान नहि। सभसँ पैघ उपलब्धि ई जे हम सभ प्रश्न पूछब सीखलहुँ—गाछकेँ चोट तऽ नहि? पाँखिकेँ बाधा तऽ नहि? छोट नेना किएक नहि? बरखा बाद सुरक्षित अछि कि नहि? प्रश्न सभ पाठशालाकेँ बदलैत रहल।"

प्रधानाध्यापक मुस्की देलनि। "तखन ई पाठशाला स्थिर नहि, जीवित अछि।"

जाड़क भोरमे एक दिन चारू मित्र मचानपर बैसल छल। धूप पातक बीचसँ छनैत पोथीपर पड़ि रहल छल। दूर पोखरि पर कुहासा छल। नीचे कमली आजी नेनासभकेँ पुरान कथा सुना रहल छली। एक कात बिसेसर काका नव बाँसक जाँच करैत छलाह। डारि पर पाँखि चुपचाप बैसल छल।

नयन पोथी बन्द कएलक। “गाछ पर चढ़ि हम सभ ऊपर अएलहुँ, मुदा सीख सभ नीचाँ धरतीसँ भेटल।”

मेघा हँसली—“गाछक डारि ऊपर जाइत अछि, जड़ि नीचे। दुनू बिनु गाछ कहाँ?”

एहि बीच हलुक पवन चलल। पोथीक एक पन्ना अपने पलटि गेल। रेवा ओकरा थामए लेल हाथ बढ़ेलक, फेर हाथ रोकि देलक। पन्ना पवनसँ फड़फड़ाइत रहल, आ सभ किछु काल ओकर आवाज सुनैत रहल।

पाठशालामे ओहि क्षण कियो पाठ नहि पढ़ि रहल छल। मुदा सीख चलि रहल छल।

❦

कथा १७

सूरुजघड़ी बनौने बालिका

नेहा केँ समयक प्रति अनोखा जिज्ञासा छल। विद्यालयक घण्टी, घरक भित्ति-घड़ी वा मोबाइलक अंक मात्र ओकरा लेल समय नहि छल। ओ भोरक उजास, पाँखिक कलरव, गाछक छाह आ साँझक ललछौंह आकाशमे सेहो समयक चाल देखए चाहैत छल।

एक दिन जेठक भोरमे ओ आँगनमे पोथी लऽ बैसल रहली। तुलसी चौरा लग गाड़ल पातर बाँसक छाह धीरे-धीरे सरकि रहल छल। नेहा आधा घण्टा बाद फेर तकली तऽ छाहक दिशा बदलि गेल छल।

ओ आजी सँ पुछलनि—“आजी, घड़ी नहि रहितए तऽ अहाँ सभ पहिने समय कोना बुझैत छलहुँ?”

आजी मुस्की दैत कहलनि—“सूरुज, छाह, पाँखि, गोरुक घुरबाक बेर, सभ संकेत दैत छल। मुदा संकेत पढ़बाक अभ्यास चाही। दुपहरिया लग छाह छोट होइत, फेर दोसर कात बढ़ए लगैत।”

नेहाक मोनमे प्रश्न उठल—जँ छाह समयक संकेत दैत अछि, तऽ ओकरा नापि कऽ घड़ी बनाओल जा सकैत अछि की?

अगिला दिन विज्ञानक कक्षामे शिक्षक अर्चना दीदी पृथ्वीक घूर्णन बुझा रहल छली। नेहा हाथ उठेलक—“जखन पृथ्वी घूमैत अछि, तखन गाछ आ बाँसक छाहक दिशा बदलैत अछि ने?”

अर्चना दीदी प्रसन्न भेली। “ठीके। सूरुज आकाशमे चलैत बुझाइत अछि, मुदा एहि दैनिक परिवर्तनक मूल कारण पृथ्वीक घूर्णन अछि। छाहक चालकेँ नापि कऽ पुरान कालसँ समय बुझबाक यन्त्र बनैत रहल अछि। ओकर एक रूप सूरुजघड़ी अछि।”

नेहा तुरन्त कहलनि—“हम एकटा बनायब।”

कक्षाक पाछाँ बैसल ओकर मित्र मीनाक्षी हँसि पड़ली—“एक दिनमे?”

नेहा सेहो हँसली। “एक दिनमे बनि गेल तऽ प्रयोग कोन भेल? जतेक बेर भूल होयत, ओतेक बेर बुझब।”

विद्यालयक विज्ञान-मण्डलीमे नेहा, मीनाक्षी, कौशल आ रितेश मिलि योजना बनौलक। पहिल काज छल एहन खुला ठाम चुनब जतए भोरसँ साँझ धरि धूप पहुँचए आ निकट कोनो गाछ वा भवनक छाह बाधा नहि दिअए।

विद्यालयक पाछाँ छोट हरिअर मैदानक एक कोन उपयुक्त बुझायल। चारू गोटे माटि समतल कएलक। बीचमे एक बाँसक पातर डाँड़ गाड़ल गेल। नेहा डोरी आ लटकैत छोट भारसँ देखलक जे डाँड़ धरतीपर ठाढ़ अछि की नहि।

पहिल प्रयासमे ओ सभ गोल माटिक पाटीपर बराबर दूरीमे बारह चिन्ह बना देलक। विचार सरल छल—बारह घण्टा, बारह बराबर भाग।

अगिला भोर सभ उत्साहसँ पहुँचल। आठ बजेक घड़ी-समय पर छाहक नोक जतए पड़ल, ओतए नेहा कंकड़ राखलक। नौ बजे दोसर, दस बजे तेसर। दुपहरिया धरि एक विचित्र बात देखायल—छाहक चिन्ह बराबर दूरीपर नहि पड़ि रहल छल।

रितेश माथ खुजलैत बजल—“हम सभक गोल पाटी तऽ बराबर बाँटल छल। छाह हमर रेखा किएक नहि मानैत अछि?”

मीनाक्षी उत्तर देलनि—“प्रकृति हमरा सभक बनाओल रेखा मानबाक बाध्य नहि अछि। रेखा हमरा सभकेँ प्रकृतिक चाल बुझि बनायब पड़त।”

ओहि दिन विद्यालय छुटलाक बाद चारू गोटे अर्चना दीदी लग गेल। दीदी हुनका सभक नाप देखलनि आ कहलनि—“एहि ठाम पहिल शिक्षा भेटल। घड़ीक डायलकेँ बारह बराबर खण्ड कऽ देलासँ सूरुजघड़ी सही नहि बनैत। अक्षांश, दिशाबोध आ छाह देनिहार डाँड़क झुकाव महत्वपूर्ण अछि।”

नेहा नोटबुक खोललक। “अक्षांश कोना जोड़ब?”

अर्चना दीदी ग्लोब देखबैत बुझौलनि जे पृथ्वी गोल अछि आ स्थानक उत्तर-दक्षिण स्थिति अक्षांशसँ व्यक्त होइत अछि। क्षैतिज सूरुजघड़ीमे छाह देनिहार डाँड़केँ उत्तर-दक्षिण दिशा अनुसार एना झुकाओल जा सकैत अछि जे ओकर झुकाव स्थानक अक्षांशसँ सम्बन्धित हो।

दीदी चेतौलनि—“एहि बातकेँ केवल सूत्र जकाँ कण्ठस्थ नहि करू। पहिने दिशा जाँचू, समतल धरातल बनाउ, फेर कतेको दिन अवलोकन करू। घड़ीक समय आ स्थानीय सूरुज-समय सदिखन एकदम मेल नहि खाइत; एहि अन्तरकेँ सेहो लिखू।”

चारू मित्रक काज आब अधिक रोचक भऽ गेल। विद्यालयक मानचित्र-पुस्तक आ उपलब्ध स्थान-सूचनासँ ओ सभ अपन क्षेत्रक लगभग अक्षांश बुझलक। दिशाबोध लेल कम्पासक सहायता लेल गेल, मुदा अर्चना दीदी कहलनि जे केवल एक यन्त्रपर निर्भर नहि रहू; दुपहरिया लग छोट होइत छाहक दिशा सेहो देखू।

ओ सभ पहिल बाँस निकालि नव डाँड़ लगौलक। डाँड़केँ आवश्यक कोणपर झुका कऽ मजबूतीसँ बाँधल गेल। माटिक पाटी फेर समतल बनाओल गेल। एहि बेर पहिने सँ घण्टा-रेखा नहि खेंचल गेल।

नेहा कहलनि—“प्रकृति पहिने चिन्ह देत, हम बादमे रेखा जोड़ब।”

तीन धूपगर दिन धरि ओ सभ निश्चित घड़ी-समय पर छाहक धार चिन्हित करैत रहल। प्रत्येक चिन्ह लग तिथि आ घड़ी-समय नोटबुकमे लिखल गेल। कागजपर सभ बिन्दु उतारलाक बाद नेहा देखलक जे रेखासभ एक केन्द्रसँ पंखा जकाँ पसारि रहल अछि।

चौठम दिन मेघ घेरि गेल। छाह धुँधला छल। कौशल निराश भऽ बजल—“आइ तऽ काज रुकि गेल।”

नेहा मेघ दिस तकैत कहलनि—“काज नहि रुकल। आइ हमरा सभकेँ ई बुझल जे सूरुजघड़ीक सीमा की अछि। जखन स्पष्ट धूप नहि, तखन छाहक समय पढ़ब कठिन।”

मीनाक्षी नोटबुकमे एकटा नव शीर्षक लिखलक—“कखन ई यन्त्र काज नहि करत।”

नेहा हँसलि—"असफलता लिखबो विज्ञानक भाग अछि।"

पाँचम दिन पुनः धूप निकलल। मुदा बारह बजेक छाह ठीक ओहि ठाम नहि पड़ल जतए पिछला सप्ताह पड़ल छल। अन्तर छोट छल, मुदा नेहाक आँखिसँ बचल नहि।

ओ पुनः अर्चना दीदी लग पहुँचल। दीदी कहलनि—"पृथ्वी केवल घूमैत नहि, सूरुजक चारू कात परिक्रमा सेहो करैत अछि। पृथ्वीक धुरी झुकल अछि। वर्षक भिन्न-भिन्न समयमे सूरुजक देखाइत चालमे अन्तर होइत अछि। एहि कारण सरल सूरुजघड़ी आ नागरिक घड़ीमे कनेक अन्तर देखाइत रहि सकैत अछि।"

नेहा पुछलनि—"तखन हमर घड़ी कखनो सही नहि होयत?"

दीदी कहलनि—"'सही' शब्दक अर्थ बुझू। जँ अहाँ कहब जे ई मोबाइल जकाँ प्रत्येक मिनट नागरिक समय देत, तऽ नहि। जँ अहाँ कहब जे ई सूरुजक छाहसँ स्थानीय समयक अनुमान, दिशाक बोध आ पृथ्वीक गतिसँ सम्बन्ध बुझाओत, तऽ ई बड्ड मूल्यवान यन्त्र अछि।"

एहि उत्तरसँ नेहा प्रसन्न भेली। ओकर लक्ष्य बदलल। आब ओ "सबसे ठीक घड़ी" नहि, "सबसे नीक बुझाइ" बनाबए चाहैत छली।

गामक कुम्हार हरिनारायण काका विज्ञान-मण्डलीक काज सुनि विद्यालय एलाह। ओ कहलनि—"माटिक पाटी जँ पानि लगिते गलि जाएत तऽ महीनाक अवलोकन कोना करब?"

नेहा पुछलनि—"काका, पक्की माटिक गोल पाटी बना सकैत छी?"

हरिनारायण काका अपन चाकपर मोट गोल थारी जकाँ पाटी बनौलनि। ओहि पाटीपर कोनो अंक नहि लिखल गेल; मात्र केन्द्र आ बाहरी घेरा हलुक उभारसँ बनाओल गेल। पाटी सुखा कऽ पकाओल गेल।

विद्यालयमे पाटी राखलाक बाद नेहा पुरान नाप अनुसार रेखासभ फेर अंकित कएलनि। अंकक बदला छोट-छोट अलग आकारक निशान बनाओल गेल ताकि छोट नेनासभ सेहो छाहक चाल देखिकऽ क्रम बुझि सकए।

एक दिन मध्यान्हमे कक्षा पाँचक नेना सभ देखए आयल। एक नेना पुछलक—"जखन घड़ी सबहक हाथमे अछि, तखन ई माटिक घड़ी किएक?"

नेहा ओकरा मैदानक चारू कात देखबैत कहलनि—“एहि घड़ीसँ हम केवल समय नहि देखैत छी। हम सूरुजक दिशा, छाहक परिवर्तन, पृथ्वीक घूर्णन, ऋतुक फेर-बदल आ नापक सावधानी सीखैत छी। ई प्रश्न पुछब सिखबैत अछि।”

दोसर नेना डाँड़क छाहपर अपन हाथ राखि देलक। छाह गायब भेल। सभ हँसि पड़ल। नेहा कहलनि—“देखलहुँ? मापक यन्त्रक संग पर्यवेक्षक सेहो सावधान रहबाक चाही।”

विज्ञान-मेलाक दिन नेहा सभक प्रदर्शनक चारू कात भीड़ जुटल। कियो पूछैत छल जे रातिमे ई कोना चलत, कियो मेघक दिनक प्रश्न करैत, कियो घड़ीक समयसँ पाँच-सात मिनटक अन्तर देखबैत।

नेहा प्रत्येक प्रश्नक उत्तरमे अपन सीमा स्पष्ट कहैत छली। “रातिमे ई नहि चलत।” “मेघमे छाह अस्पष्ट होयत।” “नागरिक समय आ स्थानीय सूरुज-समयमे अन्तर रहि सकैत अछि।” ओकरा बुझा गेल जे नीक प्रदर्शन ओ नहि जे सभ प्रश्नक चमकदार उत्तर दे, बल्कि ओ जे अपन सीमा नहि नुकबाए।

निर्णायक मण्डलीक एक सदस्य पुछलनि—“एहि परियोजनामे अहाँक सभसँ महत्वपूर्ण खोज की?”

नेहा किछु काल सोचली। “पहिने हमरा लगैत छल समय अंक अछि। आब बुझैत छी समयक बोध अवलोकन अछि। घड़ी अंक दैत अछि; सूरुजघड़ी कारण बुझबैत अछि।”

ओहि वर्ष पुरस्कार विज्ञान-मण्डलीक साझा नामपर भेटल। नेहा पुरस्कारसँ बेसी प्रसन्न एहि बातसँ छली जे विद्यालय सूरुजघड़ीक पाटी स्थायी रूपेँ विज्ञान-बागमे राखबाक अनुमति देलक।

शरद ऋतु आएल। नेहा फेर पुरान छाह-चिन्ह जाँचलक। किछु अन्तर फेर देखायल। ओ घबरायल नहि। नव तिथि लिखलक, छाहक दिशा नापलक आ पुरान नापक संग तुलना कएलक।

आजी एक साँझ ओकर नोटबुक देखैत कहलनि—“हम सभ सूरुज देखि बेर बुझैत रही; तोँ सूरुज देखि प्रश्न बुझैत छह।”

नेहा हँसि कहलनि—“अहाँक अनुभव नहि रहितए तऽ प्रश्नो नहि उठित।”

आजी ओकर माथ सहलौलनि। “नव ज्ञान पुरान ज्ञानक विरोधी नहि होइत, जँ दुनू एक-दोसराकेँ जाँचए आ समृद्ध करए।”

जाड़क एक धूपगर भोर नेहा सूरुजघड़ी लग असगर ठाढ़ छली। डाँड़क लम्बा छाह माटिक पाटीपर पड़ल छल। किछु देर बाद छाह कनेक सरकल। परिवर्तन एतेक धीम छल जे आँखि तुरन्त नहि पकड़ि सकए, मुदा समय चलि रहल छल।

नेहा नोटबुक नहि खोलली। एहि बेर ओ केवल छाह देखैत रहली। ओकरा बुझायल—समयकेँ रोकल नहि जा सकैत अछि, मुदा ओकर चालकेँ ध्यानसँ देखल जा सकैत अछि।

विद्यालयक घण्टी दूरसँ बाजल। नेहा बस्ता उठेलक आ कक्षा दिस चलि गेल। पाछाँ माटिक गोल पाटीपर छाह धीरे-धीरे अगिला चिन्ह दिस सरकि रहल छल—जेना धरती स्वयं पाठ पढ़ा रहल हो।

❦

कथा १८

नदी बचाबयवला मित्र-मण्डली

कोशीक एकटा पुरान धार गामक पूब कात सँ बहैत छल। बरखामे ओकर स्वर पैघ भऽ जाइत, जाड़मे पानि नीचाँ उतरत, आ बसन्तमे तटपर कासक फूल पवनसँ लहराइत। गामक बुजुर्ग कहैत छलाह जे नदी केवल पानि नहि, गामक स्मृति अछि।

पछिला दू-तीन बरखसँ दृश्य बदलए लागल। हाट लगबाक दिनक बाद तटपर प्लास्टिकक थैली, फेकल पात्र आ आन मलिन वस्तु जमा देखाइत। एक नाला सेहो नदीमे गिरैत छल, जाहिसँ किछु ठाम पानिक गन्ध बदलि गेल छल।

कक्षा नवमक मीना पहिने ई परिवर्तन पाँखिक कारण देखलक। भोरमे ओ अपन संगी आरव, सोनम, तमय आ काव्यासँ संग नदीक तटपर चिरैयाँ देखए जाइत छल। पहिने जतए जलकाग, बगुला आ छोट माछक झुण्ड देखाइत छल, ओहि ठाम आब जीव कम देखाइत छल।

मीना कहलनि—“हमरा लगैत अछि नदी हमरा सभकेँ किछु कहि रहल अछि।”

आरव हँसल—“नदी बोलैत अछि?”

“ध्वनिसँ नहि,” मीना उत्तर देलनि, “परिवर्तनसँ। जँ पानिक गन्ध बदलल, माछ कम भेल, तटपर मलिन वस्तु बढ़ल—ई सभ संकेत अछि।”

ओहि दिन पाँचू मित्र विद्यालयक विज्ञान शिक्षिका मालती दीदी लग गेल। हुनका सभ नदीक बात कहलनि। मालती दीदी तुरन्त कोनो निष्कर्ष नहि देलनि। ओ पुछलनि—“अहाँ सभ की देखलहुँ, आ की केवल अनुमान लगा रहल छी?”

पाँचू गोटे चुप भऽ गेल।

मालती दीदी कहलनि—“विज्ञानमे चिन्ता उपयोगी अछि, मुदा चिन्ताक संग प्रमाण चाही। नदीक तटकेँ खण्डमे बाँटू, नियमित अवलोकन करू, पानिक रूप-गन्ध, तैरैत वस्तु, जलचर आ तटक वनस्पतिक लेखा राखू। जे नापि सकैत छी, नापू; जे नहि नापि सकैत छी, स्पष्ट लिखू जे ई केवल अवलोकन अछि।”

अगिला रवि दिन मित्र-मण्डली भोरहि निकलल। ओ सभ नदीक लगभग दू कोस लम्बा भागकेँ पाँच खण्डमे बाँटलक। प्रत्येक खण्ड लेल एकटा चिह्नित ठाम चुनल गेल—पीपल घाट, पुरान पुल, हाटतट, विद्यालयक पाछाँक मोड़, आ कमलाही पोखरि लगक संगम।

सोनम एकटा मोट पोथी बनौलक। पहिल पन्नापर लिखलक—“तिथि, समय, आकाशक दशा, पानिक रंग, गन्ध, सतहपर तैरैत वस्तु, देखल जलचर, तटक दशा।”

तमय कहल—“केवल एक दिन देखलासँ की बुझत?”

मीना उत्तर देलनि—“नहि। कम-सँ-कम कतेको सप्ताह एकहि बेरपर देखब। बरखा, घाम आ हाटक दिनक प्रभाव अलग होइत अछि।”

मालती दीदी विद्यालयसँ पारदर्शी काँचक शीशी, मापक फीता, तापमापक आ साधारण अम्ल-क्षार सूचक पट्टी देलनि। ओ चेतौलनि—“एहि नापसँ नदी सुरक्षित वा असुरक्षित घोषित नहि कएल जा सकैत। ई विद्यालय-स्तरक प्राथमिक अवलोकन मात्र अछि। जँ गम्भीर प्रदूषणक शंका हो, मान्य प्रयोगशाला आ सम्बन्धित विभागक जाँच आवश्यक अछि।”

आरवक आँखि चमकल—“अर्थात् हम सभ जासूस नहि, पर्यवेक्षक छी।”

“ठीके,” दीदी मुस्की देलनि, “आ नीक पर्यवेक्षक अपन सीमा सेहो लिखैत अछि।”

पहिल सप्ताह पीपल घाटपर पानि अपेक्षाकृत निर्मल छल। मुदा हाटतटपर तैरैत प्लास्टिक आ पातक संग भोजनक फेकल अंश बेशी छल। पुरान पुलक नीचाँ नालाक मुँह लग पानि कनेक मलिन आ गन्धयुक्त छल।

काव्या लिखलक—“ई ठामक भिन्नता स्वयं एकटा प्रश्न अछि। नदी सभ ठाम एक जकाँ नहि।”

दोसरा सप्ताह ओ सभ गामक धोबी, नाविक, खेतिहर, माछ पकड़निहार आ तट लग रहनिहार स्त्रीसभसँ गप कएलक। ककरो उत्तरकेँ तथ्य मानि तुरन्त नहि लिखलक; अलग खण्डमे ‘लोक-अनुभव’ नामे दर्ज कएलक।

नाविक रामबहादुर काका कहलनि—“दस बरख पहिने एतए काँच सन पानि देखाइत छल। आब हाटक बाद तट मलिन भऽ जाइत अछि।”

धोबिन सरस्वती काकी कहलनि—“सभ दोष हाटकेँ नहि दिअ। घरक नाला सेहो नदी दिस जाइत अछि। अपन-अपन अँगना सँ निकलल मैल कतए पहुँचैत अछि, ई सोचबाक चाही।”

मीना एहि वाक्यकेँ घेरि देलक। ओकरा बुझायल—नदी बचौनाइ केवल नदीक तटसँ आरम्भ नहि होइत; घर, हाट, नाला आ खेत सभ एकहि जलचक्रसँ जुड़ल अछि।

तेसरा सप्ताह मित्रसभ एकटा सरल मानचित्र बनौलक। कोनो घरक नाम नहि लिखल गेल; केवल नाला, हाट, विद्यालय, खेत, वृक्ष-पट्टी आ जलधाराक दिशा चिह्नित कएल गेल। ओ सभ देखलक जे बरखाक पानि संग ढेर रास हलुक फेकल वस्तु सोझ नदी दिस बहि जाइत अछि।

तमय पुछलक—“तखन हम सभ पहिने तट सँ सभ उठा दी?”

सोनम कहल—“उठायब आवश्यक अछि, मुदा स्रोत नहि रोकल तऽ फेर जमा होयत।”

एहि विचारसँ मण्डलीक काज दू भागमे बाँटल गेल—जे मलिन वस्तु एखन तटपर अछि ओकर सुरक्षित संकलन, आ जे नब वस्तु नदी धरि पहुँचैत अछि ओकर प्रवाह घटौनाइ।

तट-स्वच्छता लेल विद्यालयक प्रधानाध्यापक, ग्रामसभा आ अभिभावकसँ अनुमति लेल गेल। नेनासभकेँ तीक्ष्ण काँच, औषधिक पात्र वा अनचिन्हार रासायनिक वस्तु हाथसँ नहि छूबाक कठोर निर्देश देल गेल। एहन वस्तु देखला पर वयस्कक सहायता लेल जाएत।

रवि भोर गामक लोक जुटल। कियो बोरा अनलक, कियो बाँसक चिमटा, कियो मोट कपड़ाक हाथ-आवरण। प्लास्टिक, कागज, धातुक छोट पात्र आ जैविक पदार्थ अलग-अलग जमा कएल गेल। पुनः उपयोग योग्य वस्तु अलग, शेष स्थानीय व्यवस्था अनुसार निस्तारण लेल पंचायतक कर्मीकेँ देल गेल।

आरव बीचमे एकटा पुरान जूता उठा कऽ बजल—“नदीमे ई तैरि कऽ कतए जाएत?”

रामबहादुर काका कहलनि—“जतए धारा लऽ जाए। मुदा प्रश्न ई अछि जे ई नदीमे आयल किएक?”

सभ हँसि देलक, मुदा प्रश्न सभक मोनमे रहि गेल।

अगिला काज हाटतट छल। मित्र-मण्डली हाट लगौनिहार लोकसँ बैसार कएलक। आरोप लगेनाइ सहज छल, मुदा मीना पहिने अपन अवलोकन देखेलनि—हाटक एक दिन बाद प्लास्टिकक संख्या बढ़ैत, तीन दिन बाद किछु कम होइत, फेर अगिला हाटमे बढ़ैत।

एक विक्रेता कहलनि—“खरीदनिहार थैली माँगैत अछि, हम की करी?”

काव्या उत्तर देलनि—“हम दोष देब नहि आयल छी। विकल्प खोजए आयल छी।”

विद्यालयक सिलाइ-मण्डली पुरान स्वच्छ कपड़ासँ कतेको झोरा बनौलक। कुम्हारसभ छोट माटिक पात्र आनलनि। हाटतटपर दू ठाम बाँसक ढक्कनवला संकलन-पात्र राखल गेल, जाहिसँ हलुक फेकल वस्तु पवनसँ उड़ि नदीमे नहि जाए।

मुदा पहिल सप्ताहमे एकटा पात्र उलटि गेल। कुकुर आ गोरु ओकर भीतरक वस्तु चारू दिस फैला देलक।

तमय निराश भेल—“हमर उपाय विफल।”

मीना कहलनि—“विफल नहि; ई बतौलक जे ढक्कन आ आधार पर्याप्त मजबूत नहि।”

बढ़ई बिसेसर काका बाँसक पात्रकेँ भूमि पर गाड़ि देबाक उपाय देखौलनि। ढक्कनमे रस्सीक साधारण बाँध बनल। दोसर सप्ताह पात्र नहि उलटल।

मित्रसभक ध्यान फेर नालापर गेल। ओहि ठाम स्वयं किछु बनाकए प्रवाह रोकनाइ उचित नहि छल, कारण अनुचित अवरोधसँ जलजमाव वा रोगक जोखिम बढ़ि सकैत छल। मालती

दीदी कहलनि—“एहि ठाम किशोर-मण्डलीक काज प्रमाण जुटेनाइ आ उचित संस्थाकेँ सूचित करनाइ अछि, अपने अभियान्त्रिक संरचना बनौनाइ नहि।”

ओ सभ पंचायतकेँ लिखित प्रतिवेदन देलक—नालाक स्थान, गन्धक अवलोकन, तिथि अनुसार चित्र, आ वर्षा बादक दशा। पंचायतक माध्यमसँ प्रखण्ड कार्यालय धरि सूचना गेल। किछु सप्ताह बाद निरीक्षण भेल आ नालाक निकासक सुधार तथा फेकल मैल रोकबाक जालीदार अवरोधक व्यवस्था पर काज आरम्भ भेल।

मीना बुझली जे परिवर्तन सदिखन तुरन्त नहि होइत। कतेको काज लेल लिखित प्रमाण, अनुमति, धन आ समय चाही।

एहि बीच विद्यालयमे “नदी सप्ताह” मनाओल गेल। मुदा केवल भाषण नहि। कक्षा छहक नेना सभ नदीक पाँखिक चित्र बनौलक, कक्षा सात जलचक्रक नमूना, कक्षा आठ तटवनस्पतिक सूची, आ कक्षा नवम मित्र-मण्डली अपन तीन महिनाक अवलोकन प्रस्तुत कएलक।

सोनम एकटा महत्त्वपूर्ण बात स्पष्ट कएलनि—“हम सभ नहि कहि सकैत छी जे नदी पूर्ण स्वच्छ भऽ गेल। हमरा सभक नाप सीमित अछि। मुदा तटपर फेकल प्लास्टिक घटल, हाटतटपर संकलन-पात्रक उपयोग बढ़ल, आ नालाक निरीक्षण आरम्भ भेल—ई परिवर्तन हम देखलहुँ।”

मालती दीदी प्रसन्न भेली। “यैह वैज्ञानिक ईमानदारी अछि—जतेक प्रमाण, ततेक कथन।”

बरखा फेर आयल। तेज पानिसँ तटक किछु भाग कटि गेल। नव बाधा सोझाँ छल—माटिक कटाव। मित्रसभ वनस्पति शिक्षकसँ बुझलक जे नदीक स्वाभाविक तटपर स्थानीय घास, झाड़ी आ वृक्षक जड़ माटि थामबामे सहायता करैत अछि; मुदा प्रत्येक ठाम एकहि उपाय उचित नहि।

ग्रामसभाक संग विचार भेल। वन-विभागक परामर्श अनुसार कटावग्रस्त सुरक्षित ठामपर स्थानीय प्रजातिक रोपनी कएल गेल। प्रवाहक सक्रिय धार लग नेनासभकेँ नहि पठाओल गेल।

काव्या एकटा छोट पात रोपैत कहलनि—“एहि गाछक छाह हम सभ संभवतः नहि देखब।”

आरव उत्तर देलक—“मुदा नदी देखत।”

शरदक भोर एक दिन पाँचू मित्र फेर पीपल घाट पहुँचल। पानि पर सूरुजक उजास काँपि रहल छल। किछु बगुला फेर उभड़ल। माछक छोट झुण्ड किनार लग चमकल। मीना तुरन्त विजय घोषित नहि कएलनि। ओ केवल तिथि लिखलनि—“भोर, आकाश निर्मल; तीन बगुला; छोट माछ देखल।”

तमय हँसि पुछलक—“एतेक मास बादो तोँ केवल लिखैत छह?”

मीना कहलनि—“लिखब आवश्यक अछि। जँ हम केवल प्रसन्न भऽ घुरि जाइ, तऽ अगिला बरख तुलना कोना करब?”

सोनम नदी दिस तकैत बजली—“हमरा पहिने लगैत छल नदी बचौनाइ एक दिनक तट-स्वच्छता अछि। आब बुझाइत अछि—ई आदत, व्यवस्था, ज्ञान आ पहरेदारीक दीर्घ काज अछि।”

ओहि दिन मित्र-मण्डली अपन नाम बदललक। पहिने पोथीपर लिखल छल—“नदी बचाबयवला मित्र-मण्डली।” मीना कहली—“नाम रहए दिअ। मुदा हम नदीक मालिक नहि, संगाती छी।”

आरव पुछलक—“तखन नदी हमरा सभक की?”

मीना उत्तर नहि देलनि। ओ हथेलीमे कनेक पानि लेलनि, फेर धीरे सँ धारेमे छोड़ि देलनि।

दूर सँ विद्यालयक घण्टी बाजल। पाँचू गोटे बस्ता उठा कऽ चलि पड़ल। पाछाँ नदी बहैत रहल—निरन्तर, स्मृतिसँ भरल, आ गामक प्रत्येक अँगनाक छोट-बड़ चयन अपने संग लैत।

ओहि भोर हुनका सभकेँ बुझायल जे नदीक रक्षा नदीपर उपकार नहि; अपन भविष्यक प्रति दायित्व अछि।

कथा १९

चाँदनी रातिक मानचित्र

आषाढ़क बरखा बीतलाक बादक एकटा निर्मल राति छल। दिनभरक उमस साँझ पड़िते घटि गेल छल आ गामक ऊपर आकाश एतेक फरिछ भऽ उठल जे दूर-दूर धरि असंख्य तारा चमकि रहल छल।

कक्षा नवमक अन्वी अपन घरक अँगनामे खटियापर पड़ल-पड़ल आकाश तकैत छल। ओकरा तारासभ सदिखन नीक लगैत छल, मुदा ओहि राति एकटा प्रश्न ओकर मोनमे अटकि गेल—“ई सभ तारार्कें लोक दिशा आ समय बुझबाक लेल कोना प्रयोग करैत छल?”

अगिला दिन विद्यालयमे विज्ञान-शिक्षक सुधांशु सर आकाशक विषयमे गप उठेलनि। अन्वी तुरन्त हाथ उठा देलक।

“सर, जँ बिजली नहि हो, मोबाइल नहि हो, दिशा देखाबयवला यन्त्र नहि हो—तखन आकाशसँ उत्तर-दक्षिण कोना बुझल जाइत?”

सुधांशु सर मुस्कुरेलनि। “प्रश्न नीक अछि। मुदा उत्तर पोथीमे मात्र नहि भेटत। एहि सप्ताह हम सभ रातिक आकाश देखब।”

अन्वी उत्साहित भऽ गेल। ओकर संगी नील, माधव, चम्पा आ राघव सेहो तत्पर भऽ गेलाह। शिक्षक पहिने नियम बतौलनि—रातिक अवलोकन बड़ लोकक संग, सुरक्षित खुला ठामपर, हाथ-बत्तीक तीव्र उजास कम, आ खेतक अनजाना बाटमे असगर नहि जाएब।

गामक पश्चिम कात पुरान पोखरिक बाँध पर एकटा खुला ऊँच ठाम छल। ओतए चारू दिस गाछ कम छल आ आकाशक पैघ भाग देखाइत छल। रवि दिन साँझ सभ गोटे अभिभावकक संग ओतए जुटल।

सुधांशु सर कहलनि—“पहिने चन्द्रमा नहि, तारा देखू। आँखिकेँ अन्हारक संग अभ्यस्त होमय दिअ। पाँच-दस मिनट बाद जे तारा पहिने नहि देखाइत छल, सेहो देखाइत आरम्भ करत।”

सभ गोटे चुप्पे आकाश दिस तकैत रहल। धीरे-धीरे ताराक संख्या बढ़ैत सन बुझायल। नील फुसफुसा कऽ बजल—“आकाश तऽ खोलल पोथी सन अछि।”

“पोथी तखन होयत,” अन्वी कहलनि, “जखन हम पढ़ब जानब।”

सुधांशु सर उत्तर दिशि आँगुर देखौलनि। “सप्तर्षि तारागुच्छ चिन्हू। ओकर दू मुख्य ताराकेँ जोड़ि कल्पित रेखा आगाँ बढ़ाउ, तऽ ध्रुवताराक आसपास पहुँचब। ध्रुवतारा आकाशमे लगभग उत्तर दिशि देखाबैत अछि।”

माधव तुरन्त लेखापोथी खोललक। “लगभग? पूरा उत्तर नहि?”

“वैज्ञानिक कथनमे ‘लगभग’ महत्त्वपूर्ण शब्द अछि,” सर कहलनि। “ध्रुवतारा ठीक उत्तरी आकाशीय धुरीपर नहि, मुदा ओकर निकट अछि। साधारण दिशा-बोध लेल उपयोगी अछि।”

अन्वी एहि वाक्यकेँ नीक जकाँ लिखि लेलक। ओकरा बुझायल जे विज्ञानमे सही सीमा बतौनाइ कमजोरी नहि, ई ईमानदारी अछि।

ओहि राति सभ गोटे एकटा सरल अभ्यास कएलक। ध्रुवताराक दिशा देखल, भूमि पर छोट काठी गाड़ि उत्तर दिशा अनुमानित कएल, फेर दिशासूचक यन्त्रसँ मिलान कएल। अन्तर कतेक छल से लिखल गेल।

चम्पा हँसैत कहलनि—“हमर अनुमान कनेक टेढ़ भेल।”

राघव बजल—“टेढ़ भेल तऽ फेर नापब। यैह तऽ काज अछि।”

दोसरा दिन अन्वी घरक छतपर कागजक एकटा गोल पाटी बनौलक। मध्य बिन्दु चिन्हित कएलक, चारू दिशिक अनुमान लिखलक, आ सोचलक जे राति-राति ताराक स्थिति अंकित कएल जाए।

आजी ओकरा देखैत पुछलनि—“की बनबैत छह?”

“आकाशक मानचित्र।”

आजी हँसली। “आकाश तऽ चलैत रहैत अछि, ओकर मानचित्र स्थिर कोना रहत?”

ई प्रश्न अन्वीकेँ रोकि देलक। ओ तुरन्त सुधांशु सरसँ पुछलक।

सर कहलनि—“ठीक प्रश्न। तारा रातिभर पूब सँ पश्चिम दिस चलैत सन देखाइत अछि, कारण पृथ्वी घूर्णन करैत अछि। ताहि लेल मानचित्रमे समय लिखनाइ आवश्यक अछि। एकहि राति अलग बेरक चित्र अलग देखाइत।”

अन्वी अपन योजना बदललक। ओ सभ निर्णय कएलक जे चारि सप्ताह धरि एकहि ठाम, लगभग एकहि बेर, आकाश देखल जाए। तिथि, समय, चन्द्रमाक दशा, बादल, दृश्य तारागुच्छ, आ दिशाक अनुमान लिखल जाए।

पहिल सप्ताह चन्द्रमा आधा छल। दोसर सप्ताह उजास बेशी छल, से कतेको मंद तारा नहि देखायल। तेसर सप्ताह चन्द्रमा देर सँ उगल, आ आकाश गहिर कारी बुझायल। अन्वी तुरन्त लिखलक—“तारा गायब नहि भेल; चन्द्रमाक उजासक कारण कम देखायल।”

नील कहल—“पहिने हम सोचैत छलहुँ जे प्रत्येक राति आकाश एके जकाँ होइत।”

चम्पा उत्तर देलनि—“एखन बुझाइत अछि जे देखबाक परिस्थिति बदलला सँ निष्कर्षो बदलि सकैत अछि।”

चौथा सप्ताहमे हलुक कुहासा छल। ध्रुवतारा खोजब कठिन भेल। माधव कनेक बेचैन भेल।

सुधांशु सर कहलनि—“जखन आकाश अनुमति नहि दे, तखन विज्ञान धैर्य सिखबैत अछि। जे नहि देखायल से सेहो लिखू।”

अन्वी अपन पन्नापर लिखलक—“अवलोकन असफल नहि; परिस्थिति अनुपयुक्त।”

चित्र देखैत आजीकेँ अपन बाल्यकालक एकटा प्रसंग मोन पड़ल। ओ कहलनि—“हमर बाबा राति खेत सँ घुरैत ध्रुवतारा देखैत दिशा बुझैत छलाह। मुदा ओ घड़ीक बेर आ ऋतु सेहो मोन रखैत छलाह।”

अन्वी पुछलक—“आजी, अहाँ सभ तारासभक नाम जनैत छलहुँ?”

“सभ नहि,” आजी कहलनि, “मुदा किछु तारागुच्छ, चन्द्रमाक चाल, आ ऋतुक परिवर्तन लोक बुझैत छल। खेती, यात्रा आ उत्सव सभमे आकाशक संकेतक चर्चा होइत छल।”

अन्वी एहि लोक-अनुभवकेँ पोथीमे अलग पन्नापर लिखलक। ओ तय कएलक जे लोकक स्मृति आ वैज्ञानिक अवलोकनकेँ मिला-जुला कऽ नहि लिखत; दुनूकेँ अलग स्रोतक रूपमे दर्ज करत।

माधव कहल—“एतेक सावधानी किएक?”

अन्वी उत्तर देलक—“कारण लोकक अनुभव मूल्यवान अछि, मुदा वैज्ञानिक निष्कर्ष लेल नाप आ पुनरावृत्ति चाही। दुनूकेँ अपना-अपन ठाम सम्मान देबाक चाही।”

किछु दिन बाद विद्यालयमे तारामण्डल विषयक छोट प्रदर्शनी लगल। मित्र-मण्डली अपन चारि सप्ताहक अवलोकन-पन्ना, समय-सहित ताराक बिन्दु-चित्र, दिशाक तुलना, आ चन्द्रमाक उजासक प्रभावक सार प्रस्तुत कएलक।

एक विद्यार्थी पुछलक—“एहि मानचित्रसँ राति कतहु यात्रा कएल जा सकैत अछि?”

अन्वी तुरन्त नहि बजली। सुधांशु सर ओकरा दिस देखलनि।

अन्वी कहलनि—“केवल एहि कागजकेँ आधार मानि अनचिन्हार ठाम यात्रा करब सुरक्षित नहि। ई अभ्यास आकाश बुझबाक लेल अछि। वास्तविक यात्रा लेल भू-मानचित्र, दिशासूचक यन्त्र, स्थानीय जानकारी आ सुरक्षित योजना आवश्यक अछि।”

सर मुस्कुरेलनि। “यैह उत्तर चाही छल।”

प्रदर्शनीक बाद ग्रामक वृद्ध नाविक देवकान्त काका विद्यालय आएलाह। ओ कमला नदीक पुरान नाविक छलाह। अन्वीक चित्र देखैत कहलनि—“पानिमे राति आकाश उपयोगी छल, मुदा नदीक धारा, तटक आकृति, पवन आ परिचित गाछ सेहो दिशा देत छल। एक संकेतपर कखनो निर्भर नहि रहबाक।”

अन्वी फेर एकटा नब पन्ना जोड़लक—“आकाश दिशा देत अछि; भूमि पुष्टि करैत अछि।”

ओहि वाक्यपर मित्रसभक दीर्घ गप भेल। नील कहल—“जीवनमे सेहो एहन होइत होयत? सपना दिशा दे, मुदा धरती पर कदम जाँचैत चलू।”

चम्पा हँसली—“तूँ विज्ञानक कक्षाकेँ दर्शन बना देलह।”

मुदा अन्वीकेँ ई वाक्य नीक लगल।

कातिकक एक निर्मल राति सभ गोटे फेर पोखरिक बाँधपर जुटल। एहि बेर ओ सभक लेखापोथी कम खुलल। पहिने केवल आकाश देखल गेल। सप्तर्षि कनेक आन ठाम बुझायल, ध्रुवतारा शांत सन टिकल, पूब दिशि किछु नब तारा उगैत देखायल।

अन्वी बजली—“हमर पहिल मानचित्र एखन सही नहि रहत।”

सुधांशु सर कहलनि—“मानचित्र गलत नहि; ओ एक निश्चित तिथि आ बेरक आकाशक लेखा अछि। समय बदलत, दृश्य बदलत। वैज्ञानिक अभिलेखक मूल्य यैह अछि जे ओ ‘कखन’ आ ‘कतए’ बतबैत अछि।”

अन्वीकेँ एकाएक बुझायल जे मानचित्र केवल ठामक चित्र नहि, समयक स्मृति सेहो अछि।

ओहि राति घर घुरैत चन्द्रमा कनेक नीचाँ छल। पोखरिक पानि पर ओकर उजास काँपि रहल छल। अन्वी बाटमे रुकि गेल आ पाछाँ आकाश दिस तकलक।

आजी पूछलनि—“की देखैत छह?”

“एखन किछु नाप नहि,” अन्वी मुस्कुराइत कहलनि, “केवल देखैत छी।”

आजी ओकर हाथ पकड़ि आगाँ बढ़ली।

घर पहुँचि अन्वी अपन मानचित्रक पोथी बन्द कएलक। मुखपृष्ठक भीतर एक पाँति लिखलक—“आकाशक मानचित्र बनबैत-बनबैत हम बुझलहुँ जे दिशा केवल ऊपर नहि भेटैत अछि; प्रश्न पूछबाक साहस, प्रमाण जाँचबाक धैर्य, आ धरतीसँ जुड़ल रहबाक बुद्धि सेहो दिशा अछि।”

अगिला भोर विद्यालयक घण्टी बाजल तऽ अन्वी पोथी बस्तामे राखि चलि पड़ली। रातिक तारा दिनमे देखाइत नहि छल, मुदा ओकर मोनमे आकाशक नब मानचित्र खुलल रहि गेल।

कथा २०

हँसमुख पहरुआ आ हरायल कुंजी

फागुनक भोर छल। विद्यालयक आँगनमे शिरीषक पात पर ओस चमकि रहल छल। मुख्य दुआर खोलैत बिसेसर काका अपन पुरान कुंजीक गुच्छा खनखनौलनि आ हँसैत कहलनि—“देखू, हमसँ पहिने हमर कुंजीसभ विद्यालय पहुँचि जाइत अछि।”

बिसेसर काका विद्यालयक पहरुआ छलाह। ककरो दुआर अटकल हो, ककरो बस्ता फाटल हो, ककरो साइकिलक शृंखला उतरि गेल हो—ओ अपन छोट औजार-पेटी लऽ पहुँचि जाइत छलाह। हुनकर एकटा नियम छल—काज पहिने, तमसा बादमे। मुदा हुनकर तमसा सेहो प्रायः हँसीमे बदलि जाइत छल।

हुनकर कमरक पट्टासँ लटकल लोहक घेरा पर अनेक कुंजी छल। सभ कुंजीक डोरी अलग रंगक—रातो, हरिअर, नील, पिअर। बिसेसर काका कहैत छलाह जे आँखि धुँधल भेलो रंग कुंजी चिन्हा दैत अछि।

ओहि दिन वार्षिक पोथी-दर्शनक सिद्धता चलि रहल छल। पुरान अभिलेख-कोठली खोलबाक छल, जतए विद्यालयक आरम्भकालक उपस्थिति-पोथी, हस्तलिखित गीत, पुरान मानचित्र, विज्ञानक उपकरण आ पुरस्कारक किछु वस्तु सुरक्षित छल। प्रधानाध्यापक कहलनि—“बिसेसरजी, कोठली खोलि दिअ। नेनासभ सामग्री क्रममे रखत।”

बिसेसर काका गुच्छा उठौलनि। रातो डोरी—कार्यालय। नील—विज्ञान-कोठली। हरिअर—पोथीघर। मुदा पिअर डोरीवाली पैघ पीतलक कुंजी नहि छल।

ओ गुच्छा फेर उलटि-पलटि देखलनि। एक बेर। दू बेर। तेसर बेर। फेर आँखि गोल कऽ कहलनि—“ई तऽ कमाल भेल! कुंजीकेँ पाँखि लागि गेल।”

आसपास ठाढ़ किशोरसभ हँसि पड़ल। मुदा बिसेसर काकाक हँसीक भीतर कनेक चिन्ता छल। अभिलेख-कोठलीक दोसर कुंजी प्रधानाध्यापकक आलमारीमे छल, मुदा ओ शहर गेल छल आ साँझसँ पहिने घुरबाक नहि छल।

कक्षा नवमक मीना, ईशान, रञ्जना आ तुषार ओतहि छल। मीना कहलनि—“काका, अन्तिम बेर पिअर डोरीवाली कुंजी कखन देखलहुँ?”

बिसेसर काका माथ खुजलौलनि। “काल्हि साँझ अभिलेख-कोठली बन्द कएलहुँ। तखन छल। फेर बरामदाक टूटल लम्बा काठक आसन उठा कऽ नीम तर राखलहुँ। माली काकाकेँ पानि देलहुँ। अन्तिम घण्टी बजेलहुँ। मुख्य दुआर बन्द कऽ घर गेलहुँ।”

ईशान तुरन्त कहल—“तखन हम सभ ओहि बाटकेँ क्रमसँ देखब।”

रञ्जना जोड़लक—“आ पहिने ई मानि नहि लेब जे कियो कुंजी लेने अछि। प्रमाण भेटलाक बादे कोनो गप कहब।”

बिसेसर काका मुस्की देलनि। “वाह! हम हरायल छी आ अहाँ सभ हमरा अपराधी बनबासँ बचा रहल छी।”

चारू किशोर पहिने कुंजीक गुच्छा नीक जकाँ देखलक। लोहक मुख्य घेरा एक ठाम कनेक फैलल छल। तुषार नाखून सँ छू कऽ कहल—“एहि ठाम फाँक पैघ अछि। कुंजी स्वयं फसकि सकैत अछि।”

मीना पिअर डोरीक छोट रेशा सेहो देखलक, जे घेराक किनारमे अटकल छल। ओकरा बुझायल जे हरायल कुंजी ओहि फाँकसँ निकलल होयत। मुदा कतए?

सभसँ पहिने अभिलेख-कोठलीक दुआर लग गेल। भूमि पर धूर छल, मुदा कोनो कुंजी नहि। बरामदाक कोना, झरोखाक नीचाँ, घण्टीक डोरी लग—सभ देखल गेल।

तुषार विज्ञान-कोठलीसँ एकटा पैघ चुम्बक आनलक। “धातुक कुंजी अछि। चुम्बकसँ खोजब सरल होयत।”

ईशान काका सँ दोसर कुंजी लेलनि आ चुम्बक लगौलक। कुंजी नहि खिंचल। विज्ञान-शिक्षिका मालती दीदी दूरसँ देखैत छलीह। ओ कहलनि—“सभ धातु चुम्बकसँ नहि खिंचैत। ई पीतल अछि। प्रयोग पहिने वस्तुक गुण बुझू।”

तुषार हँसि पड़ल। “कुंजी नहि भेटल, मुदा पाठ भेटि गेल।”

अब चारू गोटे काल्हिक बाट पर ध्यान देलक। बरामदासँ नीमक गाछ धरि लम्बा काठक आसन घिसटायल छल। भूमि पर हलुक रेखा एखनहुँ छल।

नीम तर पहुँचि मीना आसनक एक कात चमकैत लोहक काँटी देखलक। काँटी कनेक बाहर निकलल छल। ओकर नोकमे पिअर सूतक एकटा सूक्ष्म रेशा अटकल छल।

“ई देखू!” मीना बजली।

बिसेसर काका झुकि कऽ देखलनि। “हँ, काल्हि ई आसन उठबैत समय कमरमे किछु अटकल सन लागल रहए। हम सोचलहुँ धोती फँसल।”

रञ्जना धीरे कहल—“संभव अछि कुंजीक डोरी काँटीमे फँसल, घेरा खुलल आ कुंजी छुटि गेल।”

सभक आँखि आसन दिस गेल। ऊपर, नीचाँ, पाछाँ—कुंजी कतहु नहि। ईशान आसन उठा कऽ देखलक। केवल सुखायल पात आ धूर।

तुषार निराश होमय लागल, मुदा मीना आसनक पाटी पर एकटा ताजा घर्षण-चिह्न देखलक। “जँ कुंजी एतए खसल, तऽ फेर कतए गेल?”

ओहि समय कक्षा छहक दू नेना दौड़ैत आयल। एक गोटे कहल—“ई आसन हम सभ भोरमे कनेक खिसका देने रही। धूप लगैत छल।”

“कतए सँ कतए?” ईशान पुछलक।

नेना सभ हाथ देखौलनि। आसन पहिने नीमक पूब कात छल, फेर पश्चिम कात घिसटायल गेल। चारू किशोर फेर भूमि देखैत चलल।

घासक बीच एक ठाम किछु चमकल। सभ दौड़ल, मुदा ओ तऽ मिठाइक चमकीला आवरण छल। तुषार ओकरा उठा कऽ कचरा-पात्रमे राखलक आ बजल—“रहस्य हमरा स्वच्छता सिखबैत अछि।”

कनेक आगाँ माटिक एकटा पातल खाँच देखायल, जे आसनक पएर घिसटलाक चिह्न छल। खाँच विद्यालयक पुरान काठक बन्द ताक लग जा कऽ समाप्त होइत छल।

ओहि ताकक दुआर भोरमे सफाई लेल खोलल गेल छल। दुआर खुलैत समय आसन ओतए कनेक देर सटल रहए। रञ्जना हाथ-बत्ती लऽ दुआरक नीचाँ देखलक। किछु नहि।

मीना कहलनि—“केवल भूमि किएक? कुंजी खसलाक बाद आसनक पाटी आ आधारक बीच फँसि सकैत अछि।”

चारू गोटे आसनकेँ सावधानीसँ एक कात झुकौलक। भीतरक काठक जोड़मे पिअर डोरीक गाँठ देखायल। तुषार हलुक आँगुरसँ खेंचलक। खनखनाहट भेल। पैघ पीतलक कुंजी बाहर आबि गेल।

बिसेसर काका एतेक जोर सँ हँसलाह जे बरामदामे ठाढ़ शिक्षक सेहो घूमि कऽ देखए लगलाह। “अरे! हमर कुंजी विद्यालय छोड़ि नहि गेल। ओ तऽ आसनपर बैसए चल गेल रहए!”

मीना कुंजी काकाक हाथमे देलनि। “काका, एखन कोठली खोलू। मुदा एकटा काज आ आवश्यक अछि।”

“की? कुंजीकेँ उपस्थितिपोथीमे नाम लिखाबी?”

फेर सभ हँसि पड़ल।

ईशान लोहक पुरान घेरा देखौलनि। “ई फाँक फेर खुलि सकैत अछि। नव मजबूत घेरा चाही। प्रत्येक कुंजीक डोरी सेहो नीक जकाँ बान्हल हो।”

मालती दीदी सेहो आबि गेलीह। ओ कहलनि—“आ केवल औजार सुधरब पर्याप्त नहि। कुंजी लेबाक आ घुरेबाक लेखा सेहो रहए। ककरा लग, कोन बेर, कोन कोठली—छोट लेखापोथीमे अंकित करू।”

बिसेसर काका हँसी रोकि गंभीर भेलाह। “सही गप। स्मृति पर पूरा भार देब उचित नहि। व्यवस्था लोकक सहायता करैत अछि।”

ओहि दिन चारू किशोर एकटा नव कुंजी-व्यवस्था बनौलक। मजबूत घेरा, अलग-अलग रंगक मोट डोरी, दुआरक भीतर सुरक्षित खूँटी, आ एकटा छोट लेखापोथी। कोनो कुंजी उधार जाय तऽ नाम आ बेर लिखल जाए, घुरला पर चिन्ह देल जाए।

प्रधानाध्यापक साँझमे घुरलाह तऽ सम्पूर्ण प्रसंग सुनलनि। ओ पुछलनि—“सभसँ पैघ सीख की भेटल?”

तुषार तुरन्त बजल—“पीतल चुम्बकसँ नहि खिंचैत।”

सभ हँसल। प्रधानाध्यापक फेर पुछलनि—“आ दोसर?”

रञ्जना कहलनि—“ककरो ऊपर संदेह करबासँ पहिने घटनाक क्रम आ प्रमाण देखबाक चाही।”

मीना जोड़लक—“छोट त्रुटि—जकाँ घेराक फाँक—पैघ उलझन बना सकैत अछि। नियमित जाँच आवश्यक अछि।”

ईशान कहल—“आ जे खोजैत छी से सदिखन दूर नहि होइत। कखनो वस्तु अपन काल्हिक काजक भीतर नुकायल रहैत अछि।”

बिसेसर काका हाथ जोड़ि कहलनि—“हमर सीख ई जे आसन उठेबाक समय पहिने कुंजी बचाउ, फेर कमर।”

अगिला भोर बिसेसर काका मुख्य दुआर खोललनि। नव घेरामे कुंजीसभ फेर खनखनायल। मीना चारू संगीसँ विद्यालयमे प्रवेश करैत छल। काका दूरसँ आवाज देलनि—“एहि बेर सभ कुंजी गिनल अछि। जँ हम स्वयं हराइ जाउ तऽ काल्हिक बाट देखब!”

तुषार तुरन्त उत्तर देलक—“पहिने प्रमाण देखब, काका!”

विद्यालयक घण्टी बाजल। बिसेसर काका हँसैत बरामदा दिस बढ़लाह। कमर लग कुंजीक गुच्छा छनछन करैत रहल—जेना ओहो काल्हिक रहस्य पर मुस्कुरा रहल हो।

चारू किशोर अपन कक्षामे गेल। रहस्य समाप्त भऽ गेल छल, मुदा हुनका सभक भीतर एकटा नब अभ्यास शुरू भेल—देखू, जोड़ू, जाँचू, तखन मानू।

नव पाँखि

(किशोर कथा-संग्रह) — गजेन्द्र ठाकुर

‘नव पाँखि’ किशोर पाठक-पाठिकाक हेतु लिखल गजेन्द्र ठाकुरक कथा-संग्रह अछि, जाहिमे जिज्ञासा, साहस आ नव सपनाक उड़ान समेटने कथा सभ संकलित अछि। ई संग्रह किशोरावस्थाक मोन आ मिथिलाक माटिक सोंगरसँ अंकुरित कथा-शिल्पक संगम अछि, जे पाठककेँ नव पाँखि पसारि आकाश नापऽ लेल प्रेरित करैत अछि।

हमरा संग जुड़ू

www.videha.co.in

videha-ejournal.github.io

प्रकाशक : विदेह ई-पत्रिका

मैथिली फर्स्ट फोर्टनाइटली इ पत्रिका, ISSN 2229-547X